नई दिल्ली | बुधवार , 01 अप्रैल, 2026
चैत्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी, सिद्धार्थि संवत्सर विक्रम संवत 2083,
वर्ष :12, अंक :85 | मूल्य 3.00 रुपए | पृष्ठ 12

दैनिक
नई दिल्ली संस्करण
विश्व केसरी
सिर्फ पत्रकारिता...
vishwakesari.com
@vishwakesariTV
@vishwakesari
vishwakesari
आर. एन. आई. संख्या डीईएलएच आईएन/2015/61415

@ खेल मूनी को पछाड़कर विश्व की नंबर एक महिला ... | @ विचार देश से हुआ नक्सलवाद का खात्मा... | @ व्यापार यूपी सरकार में औद्योगिक क्रांति...

हिन्दुस्तान में नक्सलवाद अब इतिहास के पन्नों में

सुजीत कुमार

हिंदुस्तान के लिए आज सबसे हर्ष का दिन है, क्योंकि देश के सौ से अधिक जिलों में फैला हुआ एक हिंसक और अलगाववादी आंदोलन अब इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया है, यह हिंदुस्तान के लिए एक बेमिसाल कामयाबी है।

यह आंदोलन 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी से शुरू हुआ था, और किसी को अंदाजा नहीं था कि यह यह बिल्कुल एक छोटे से गांव से शुरू होकर एक विशाल रेड कॉरिडोर तिरुपति से पशुपति तक फैल जाएगा जिसके बारे में देश के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने एक बार कहा था कि यह देश के आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है।

नक्सलवाद, जो एक बिलकुल नासूर बन गया था देश की संप्रभुता के लिए, उसने दशकों तक हिंदुस्तान के एक विशाल भूभाग जिसमें छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल और झारखंड के बड़े हिस्से को अपनी चपेट में ले लिया जिसमें सैकड़ों निर्दोष नागरिकों एवं सुरक्षाबलों की जान गई। मई 2013 की वो घटना कोई नहीं भूल सकता, जिसमें कांग्रेस के अनेक वरिष्ठ नेता को नक्सलियों ने झीरम घाटी में बेरहमी से मारा था। यह एक सामूहिक नरसंहार थी, जो माओवादियों द्वारा कांग्रेस लीडर्स के खिलाफ आयोजित की गई थी।

'मैं एक पत्रकार की हैसियत से छत्तीसगढ़ के बस्तर के सुदूर अंचलों में, जंगलों में 25 वर्ष से भी ज़्यादा तक नक्सलवाद की रिपोर्टिंग किया, नक्सल हिंसा से प्रभावित लोगों से बातें की, नक्सलियों की हिंसा और बर्बरता को बहुत नजदीक से देखा और मैं बतला सकता हूँ कि मैंने जो 6 अप्रैल 2010 को दांतेवाड़ा के चिंतलनार में जो अर्धसैनिक बल CRPF के 76 जवानों को बेरहमी से मारा गया, वो एक मेरे लिए दिल दहलाने वाली घटना थी। यह एक काफ़ी क्रूर घटना थी और इस घटना ने ये बतला दिया कि हिंदुस्तान वाकई में नक्सलवाद की एक बहुत ही भयावह समस्या से गुजर रहा है।

मैं बस्तर की वादियों के काफी दूर-दराज के गांवों का, रॉयटर्स (अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसी) के साथ और उसके बाद आईएएनएस के नेशनल अफेयर्स एडिटर, और फिर द पायनियर अंग्रेज़ी अखबार के छत्तीसगढ़ एडिटर के रूप में व्यापक दौरा किया, और वह एक वाकई में बेमिसाल अनुभव रहा। इतनी खूबसूरत वादियां, इतने भोले-भाले लोग, और उतनी ही क्रूर, अमानवीय नक्सली ताकतें यह एक अजीब अनुभव रहा, कि जो देश के लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के प्रति वचनबद्ध राजनेता थे, वो कितनी तेजी से अपने स्वार्थ के लिए नक्सलियों से मिल जाते थे, बिना इस बात का अंदाज़ा लगाए कि इसके कितने दुर्गामी दुष्परिणाम हो सकते थे।

यह तस्वीर बस्तर के प्रसिद्ध चित्रकोट जलप्रपात के 31 मार्च 2026 के सूर्यास्त के समय की है और सूर्यास्त के साथ ही नक्सली हिंसा का भी सूर्यास्त हो गया है।

'नक्सलियों की जो क्रूरता थी, जो मौत का तांडव था, जो उन्होंने लगभग पचास साल से ज़्यादा तक बेकसूर आदिवासियों के माध्यम से उनके भोलापन का फ़ायदा उठाकर जो किया और देश की संप्रभुता को बहुत बड़ी चैलेंज किया, अब ख़त्म हो गई है, और इसका क्रेडिट निश्चित रूप से भारत सरकार को जाता है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह एवं हज़ारो सुरक्षा बल के जवानों एवं उनके शहादत को जाता को जाता है।

छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र लंबे समय तक नक्सल हिंसा का मुख्य केंद्र, यानी 'नर्व सेंटर ऑफ टेररिज्म' बना रहा। लगभग 40 हजार वर्ग किलोमीटर में फैला यह भूभाग प्राकृतिक संसाधनों, विशेषकर खनिज संपदा से भरपूर है। देश के उच्च गुणवत्ता वाले लौह अयस्क का लगभग 20% हिस्सा इसी क्षेत्र से प्राप्त होता है।बस्तर की भौगोलिक संरचना—घने जंगल, पहाड़ी इलाके और दुर्गम रास्ते—नक्सलियों के लिए गुरिल्ला युद्ध के लिहाज से बेहद अनुकूल रही है।

यही कारण रहा कि जब छत्तीसगढ़ का निर्माण नवम्बर 2,000 में हुआ तब बस्तर के ग्रामीण इलाकों का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा नक्सलियों के प्रभाव और नियंत्रण में आ गया था। स्थानीय आदिवासी नेता, जिनमें दोनों प्रमुख पार्टियों, कांग्रेस और बीजेपी के नेता शामिल थे, उन्होंने व्यक्तिगत राजनीतिक स्वार्थ के लिए नक्सलियों का सहयोग भी किया, जिससे स्थिति बेहद विकट हो गई थी।

उस दौर की भयावहता का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि छत्तीसगढ़ के शीर्ष राजनीतिक नेतृत्व को भी अपनी सुरक्षा के लिए असामान्य कदम उठाने पड़ते थे। मैं ख़ुद दो मुख्यमंत्रियों के साथ (एक के साथ साल 2003 मे और दूसरे के साथ बाद में) उस कार में बैठा हुआ था बस्तर दौरे के दौरान जब उन्होंने अपने दंतेवाड़ा में अपने काफिले में चलते हुए बीच रास्ते में गाड़ी बदल ली, ताकि नक्सलियों को भ्रमित किया जा सके।

जिस गाड़ी में आमतौर पर मुख्यमंत्री यात्रा करते थे, उसे फूल-मालाओं से इस तरह सजाया गया था कि वह वीआईपी वाहन प्रतीत हो, जबकि वे खुद किसी अन्य वाहन में सवार हो गए।

इसी तरह छत्तीसगढ़ के एक आदिवासी गृहमंत्री ने दंतेवाड़ा जिले के दोरनापाल में आयोजित एक कार्यक्रम में अंतिम समय में नक्सलियों के डर के कारण जाने से इनकार कर दिया था।

इसके अलावा, लगभग 300 करोड़ रुपये प्रति वर्ष नक्सली छत्तीसगढ़ से जबरन वसूली करते थे, ऐसा हमें (रॉयटर्स के लिए दिए गए साक्षात्कार में) छत्तीसगढ़ के तत्कालीन मुख्यमंत्री रमन सिंह ने कहा था, जिससे नक्सली आर्थिक रूप से बेहद ताकतवर हो गए थे। बस्तर में हर सड़क निर्माण से लेकर छोटे-बड़े सभी कार्यों में शामिल होने वाले लोगों को, चाहे सरकारी हो या गैर-सरकारी, एक निश्चित रकम नक्सलियों को देनी ही पड़ती थी।

हालाँकि मैं यह नहीं मानता कि यह नक्सल समस्या पूरी तरह से ख़त्म हो गया है, लेकिन हाँ निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि आज हिंदुस्तान में जितने भी बड़े-बड़े नक्सली आतंकवादी थे, ये वो या तो मार दिए गए या वो सरेंडर कर दिए और उनका पूरी तरह बेस खत्म हो गया है, उनका जो पूरा आतंक का जो तंत्र था वो खत्म हो गया है लेकिन ये निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उनके जो अभी सिम्पेथाइजरस हैं वो जिसको अर्बन नक्सल्स कहते हैं वो अभी शहरों में पूरी तरह से सक्रिय है और वो समय-समय पर जरूर चाहेंगे कि नक्सलवाद फिर से पनपे, भारत सरकार को इस बात को ध्यान रखना चाहिए कि उनको फिर से सर उठाने का समय न मिले और उनको भी कुचलना बहुत जरूरी है।

यह असाधारण सफलता अब यहीं पर नहीं रूकनी चाहिए। भारत सरकार को हर गांव, हर मोहल्ले, हर आदिवासी क्षेत्र में बड़े पैमाने पर अभियान चलाने चाहिए, ताकि एक-एक नक्सली समर्थक को पकड़ा जाए और कोई भी नहीं बचना चाहिए। लेकिन साथ ही, वहाँ तेज़ गति से विकास भी जरूरी है, क्योंकि ये सभी इलाके, जहां भोले आदिवासी रहते हैं, विकास की मुख्य धारा से काफी दूर हैं। वहाँ न अस्पताल हैं, न शिक्षा की व्यवस्था, न सड़कें, न कोई आधारभूत ढांचा। इसलिए, तेज़ विकास के साथ-साथ, यह ज़रूरी है कि जो लैंडमाइन्स नक्सलियों द्वारा लगाए गए हैं, उन्हें भी निकाला जाए, ताकि कोई भी आदिवासी या नागरिक इनके कारण घायल न हो।

मैं यह स्पष्ट रूप से बतलाना चाहता हूँ कि हिंदुस्तान के लोगों को ये बात बिल्कुल समझनी चाहिए कि नक्सली हिंसा यदि पाँच दशकों से ज़्यादा तक देश के एक बड़े हिस्से में फैल गया तो उसके लिए बहुत हद तक ज़िम्मेदार कुछ राजनीतिक दल एवं उसके नेता थे जिन्होंने इस आंदोलन को अपने स्वार्थों के लिए भरपूर समर्थन दिया।

एक ऐसे आंदोलन को समर्थन दिया जिसका मूल उद्देश्य भारत सरकार को हिंसक तरीक़े से ओवरथ्रो करना था।

राजनीतिक पार्टी के नेताओं को यह बात पूरी तरह समझनी चाहिए कि अपने देश से बढ़कर और कुछ नहीं है, और व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए भारत की संप्रभुता को खतरे में डालना, अर्धसैनिक बलों की जान जोखिम में डालना, नागरिकों को नुकसान पहुंचाना, ऐसे सभी नेताओं को कानून के कटघरे में लाया जाना चाहिए, ताकि इस तरह के किसी हिंसक आंदोलन को भविष्य में कभी बल न मिले।

और हाँ जब भी हिंदुस्तान में नक्सल हिंसा के अंत की चर्चा होगी, तो बस्तर के महान सपूत महेंद्र कर्मा को श्रद्धा के साथ याद किया जाएगा। उन्होंने नक्सल हिंसा के अंत की नींव रखी, उनका एक ही संकल्प था नक्सलियों का समूल सफ़ाया। आज वे जहां भी होंगे, असीम खुश होंगे यह देखकर कि बस्तर नक्सल मुक्त हो गया है। हम उनकी सहादत को नमन करते हैं, वे भारत माता के एक अद्वितीय सपूत थे, जिनकी याद देश हमेशा श्रद्धा और गर्व के साथ करेगा।

(सुजीत कुमार वर्तमान में विश्व केसरी राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक अख़बार के प्रधान संपादक है उनसे वाट्सऐप मोबाइल नंबर 8549933333 पर संपर्क किया जा सकता)

सक्षिप्त खबर

टोल प्लाजा पर आज से केवल डिजिटल माध्यम से भुगतान होगा मान्य

नई दिल्ली। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने टोल से जुड़े नियमों में बदलाव किया है और अब एक अप्रैल से टोल प्लाजा पर डिजिटल भुगतान ही मान्य होगा, यानी अब हाइवे यूजर्स कैश में टोल का भुगतान नहीं कर पाएंगे।

एनएचएआई का यह कदम पूरे देश में उसके सभी टोल प्लाजा पर लागू होगा। एनएचएआई के मुताबिक, एक अप्रैल से यात्री केवल टोल प्लाजा पर डिजिटल माध्यम जैसे फास्टैग और यूपीआई के माध्यम से भुगतान कर पाएंगे।

इस कदम का उद्देश्य राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेसवे पर टोल वसूली में दक्षता बढ़ाना और पारदर्शिता लाना है। पेज नं -2

गूगल, एपल और टेस्ला पर हमले की चेतावनी

ईरान बोला- 18 कंपनियों को बनाएंगे निशाना

एजेंसी ■ तेहरान

पश्चिम एशिया में जारी युद्ध मंगलवार को 32वें दिन में प्रवेश कर गया है। एक तरफ ट्रंप ईरान से बातचीत का दावा कर रहे हैं, दूसरी तरफ उसे हमले की धमकी भी दे रहे हैं। लगता है कि अब ट्रंप की रणनीती ही ईरान ने भी अपना ली है।

ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स यानी आईआरजीसी ने अमेरिका को चेतावनी दी है कि वह 1 अप्रैल से 18 अमेरिकी कंपनियों पर हमले करेगा। इन कंपनियों में माइक्रोसॉफ्ट, एपल, गूगल, इंटेल और बोइंग शामिल हैं। आईआरजीसी ने कहा है कि वह यह अटैक ईरान पर हुए हमले के बदले में करेगा।

संघर्ष हमारी शर्तों पर ही होगा खत्म: हेगसेथ

एजेंसी ■ वाशिंगटन

अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने मंगलवार को दावा किया कि वो 'बूट्स ऑन द ग्राउंड' के लिए तैयार हैं और संघर्ष उनकी शर्तों पर ही खत्म होगा। ये भी कहा कि अगर संवाद से बात नहीं बनेगी तो 'बम के जरिए बातचीत' को अंजाम दिया जाएगा। वाशिंगटन डीसी में 'ऑपरेशन एपिक फ्यूरी' का अपडेट देने के लिए आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में पीट हेगसेथ और ज्वाइंट चीफ्स के चेयरमैन जनरल डैन केन ने आगामी योजनाओं, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के जज्बे और सैन्य ऑपशन को लेकर पूछे गए सवालों का जवाब दिया। अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने कहा कि ईरान को लेकर बातचीत चल रही है और इसमें तेजी आ रही है, लेकिन साथ ही सैन्य ऑप्शन भी खुले हैं। पेज नं -2

सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत की बड़ी छलांग: पीएम मोदी

ग्लोबल सप्लाई चेन में मजबूत हो रही हमारी भूमिका

एजेंसी ■ अहमदाबाद

गुजरात के साणंद में सेमीकंडक्टर सेक्टर को लेकर भारत ने एक और बड़ा कदम उठाया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को यहां केन्स सेमीकॉन की आउटसोर्स्ड सेमीकंडक्टर असेंबली और टेस्ट (ओएसएटी) सुविधा का उद्घाटन किया।

उन्होंने कहा कि भारत अब वैश्विक बाजार में एक भरोसेमंद सेमीकंडक्टर सप्लायर के रूप में अपनी भूमिका को लगातार मजबूत कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने याद दिलाया कि साल 2021 में भारत ने 'इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन' की शुरुआत की थी। यह मिशन सिर्फ एक इंडस्ट्रियल पॉलिसी नहीं है, बल्कि यह भारत के आत्मविश्वास की घोषणा है। इस मिशन के तहत देश के छह राज्यों में 1.60 लाख करोड़ रुपए के 10 बड़े प्रोजेक्ट्स पर काम चल रहा है। पीएम मोदी ने हालिया उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि 28 फरवरी को माइक्रॉन के प्लांट में प्रोडक्शन शुरू हुआ था और अब 31 मार्च को केयन्स टेक्नोलॉजी के सेमीकंडक्टर प्लांट का उत्पादन भी शुरू हो गया है। यह महज संयोग नहीं है, बल्कि इस बात का प्रमाण है कि भारत का सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम कितनी तेजी से विकसित हो रहा है।

उन्होंने इस बात पर खुशी जताई कि एक भारतीय कंपनी ने सेमीकंडक्टर चिप निर्माण में रुचि दिखाई और आज उसके नतीजे सामने हैं। पीएम मोदी ने कहा, 'भारत की अपनी कंपनी केयन्स टेक्नोलॉजी अब ग्लोबल सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन का एक मजबूत हिस्सा बन चुकी है। यह एक शानदार शुरुआत है और देश के लिए गर्व का पल है। पेज नं -2

नालंदा के मंदिर में मची भगदड़, आठ की मौत, थानाध्यक्ष निलंबित

एजेंसी ■ बिहार

बिहार के नालंदा जिले के दीपनगर थाना क्षेत्र में मंगलवार को मां शीतला मंदिर में पूजा-अर्चना के दौरान अत्यधिक भीड़ होने के कारण अचानक स्थिति अनियंत्रित हो गई, जिससे भगदड़ मच गई। इस भगदड़ में आठ श्रद्धालुओं की मौत हो गई जबकि आठ से दस लोग घायल हो गए।

इस बीच, इस घटना के बाद कर्तव्यहीनता के आरोप में दीपनगर थानाध्यक्ष को निलंबित कर दिया गया है. इस घटना की सूचना मिलने के बाद नालंदा जिला पुलिस प्रशासन घटनास्थल पर पहुंचकर राहत एवं बचाव कार्य में जुट गया। घायलों को तत्काल बेहतर इलाज के लिए नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। घटनास्थल पर पटना के आयुक्त और पुलिस महानिरीक्षक, केंद्रीय क्षेत्र, पटना भी पहुंचकर निरीक्षण कर चुके हैं। घटना स्थल पर जिला पदाधिकारी, पुलिस अधीक्षक नालंदा एवं उप विकास आयुक्त स्वयं उपस्थित रहकर राहत एवं बचाव कार्यों की निगरानी कर रहे हैं तथा सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं।

राज्य सरकार ने मरने वालों के परिजनों को छह लाख और केंद्र सरकार ने दो लाख रुपये देने की घोषणा की है।

पुलिस का दावा है कि स्थिति वर्तमान में नियंत्रण में है। जिला प्रशासन के एक अधिकारी ने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा घटना की जांच कराई जा रही है। पेज नं -2

महिलाओं को हर माह 3000 रुपए देने का वादा

केरलम चुनाव: भाजपा का घोषणा पत्र जारी

एजेंसी ■ तिरुवनंतपुरम

केरलम विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी ने मंगलवार को घोषणा पत्र जारी किया। इस दौरान भाजपा ने 'यही बदलाव है, यही विकसित केरल है' प्रचार गीत भी रिलीज की।

भाजपा ने लोगों की आस्था और पूजा स्थलों की रक्षा का वादा किया है। भाजपा के घोषणा पत्र में सबरीमाला, गुरुवायूर और अन्य सभी पूजा स्थलों की रक्षा करने का वादा किया गया है। पार्टी की ओर से कहा गया कि हम भ्रष्टाचार और धार्मिक अनुष्ठानों में सरकारी दखल को खत्म करेंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि इन स्थलों का प्रबंधन भक्तों के हाथों में ही रहे। 70 साल से ज्यादा उम्र के वरिष्ठ नागरिक, गरीब परिवारों की सभी महिला मुखियाओं और विधवाओं के लिए हर महीने 3,000 रुपए की पेंशन देने का भी वादा किया गया है। गरीब और बीपीएल परिवारों की हर महिला को 'भक्ष्य-आरोग्य सुरक्षा कार्ड' देने का वादा है, जिसमें हर महीने 2,500 रुपए का रिचार्ज होगा; इस कार्ड का इस्तेमाल दवा की दुकानों और किराने की दुकानों पर किया जा सकेगा। हर घर को बिना रुकावट और सस्ती बिजली देने का वादा किया गया। पेज नं -2

पीएम मोदी ने वाव-थराड में की 20 हजार करोड़ की परियोजनाओं की शुरुआत, बोले-डीसा एयरबेस से बढ़ेगी सीमा सुरक्षा

वाव-थराड। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को गुजरात के वाव-थराड में विभिन्न विकास कार्यों का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि अभी कुछ ही दिन पहले पावन नवरात्रि का पर्व पूर्ण हुआ है। यह मां अम्बा जी की कृपा ही है कि मुझे उनके चरणों में आज आने का सौभाग्य मिला है।

पीएम मोदी ने सभा में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा, 'मैं मां अम्बा जी के चरणों में प्रणाम करता हूं। यह भी एक सुखद संयोग है कि आज हम भगवान महावीर जयंती मना रहे हैं। हमारा यह क्षेत्र अनेकों जैन तीर्थों की धरती है। मैं भगवान महावीर को प्रणाम करता हूं और आप सभी को पवित्र जनकल्याण दिवस की महावीर जयंती की बधाई भी देता हूं।

पीएम मोदी ने कहा कि आज मेरा मन एक और बात से प्रसन्न है। जब मैं यहां आया तो पहली बार मेरा विमान सीधे डीसा एयरबेस पर लैंड हुआ। डीसा का यह एयरबेस अंतरराष्ट्रीय सीमा से महज 130 किमी की दूरी पर है। आप समझ सकते हैं कि यह देश की सुरक्षा के लिए कितना अहम है। डीसा एयरपोर्ट के इस प्रोजेक्ट का विचार आज का नहीं है, बल्कि मैं जब यहां मुख्यमंत्री था, तब से हमने जमीन अधिग्रहीत की। किसान भाइयों ने जमीन दी और हम चाहते थे कि राष्ट्रीय सुरक्षा, पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए यह डीसा अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि तब की दिल्ली सरकार ने इस प्रोजेक्ट की फाइलों को नीचे कर दिया था और जब आपने मुझे दिल्ली भेजा तो मैंने उसे निकाला। इसका ही परिणाम है कि एयरफोर्स का एक बड़ा बेस डीसा से जुड़ गया है। यह सिर्फ हवाई पट्टी नहीं है, बल्कि इसके कारण बड़ी गतिविधियां होने वाली हैं। बड़ी संख्या में जवान यहां रह रहे हैं। इस क्षेत्र के विकास में इसका बड़ा योगदान होने वाला है। पीएम मोदी ने आरोप लगाया कि इस प्रोजेक्ट में देरी पूर्व केंद्र सरकार की वजह से हुई। पीएम मोदी ने कहा कि वाव-थराड और बनासकांठा का यह क्षेत्र, आप सब जानते हैं कि यहां से मेरा कितना लगाव है और आपका अपार प्रेम मैं भूल ही नहीं सकता। मैंने इस काम को मिशन मोड में किया। जितना हो सके, उतना गुजरात को हमने आगे बढ़ाया। आज भी यहां केंद्र और राज्य की करीब 20 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाएं शुरू हो रही हैं। इस प्रोजेक्ट से पूरे इलाके की तस्वीर बदलेगी। यह प्रोजेक्ट यहां के जीवन को नई गति देगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज गुजरात सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी है और इसकी उपलब्धियां सराहनीय हैं। भारत में नवीकरणीय ऊर्जा विकास में यह राज्य सबसे आगे है, क्योंकि इसने इस क्षेत्र पर तब ध्यान देना शुरू किया, जब राष्ट्रीय स्तर पर इस पर बहुत कम ध्यान दिया जा रहा था।

सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने लोकसभा में उठाया 'एकल शिक्षक' स्कूलों का मुद्दा

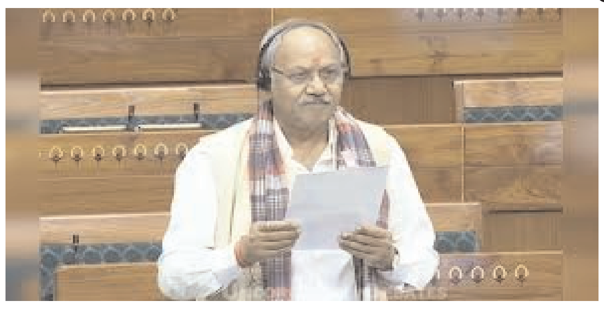

नई दिल्ली। लोकसभा सांसद एवं वरिष्ठ भाजपा नेता बृजमोहन अग्रवाल ने लोकसभा में छत्तीसगढ़ समेत देशभर में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी और छात्र-शिक्षक अनुपात में विसंगति का मुद्दा प्रमुखता से उठाया। सांसद अग्रवाल ने सरकार से एकल शिक्षक स्कूलों को समाप्त करने की समय-सीमा और दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षकों की तैनाती को लेकर भी सवाल किए।

सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने अतारांकित प्रश्न के माध्यम से सदन का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि छत्तीसगढ़ सहित देश के कई राज्यों में प्राथमिक विद्यालय केवल एक शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं, जो शिक्षा के अधिकार (ऋञ्ञश्व) अधिनियम का उल्लंघन है। उन्होंने 'पीएम श्री' योजना के तहत विकसित आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के अल्प-उपयोग पर चिंता जताते हुए कहा कि विषय-विशेषज्ञ शिक्षकों के बिना केवल बिल्डिंग बना देने से शिक्षा का स्तर नहीं सुधरेगा।

जिसपर जवाब देते हुए शिक्षा राज्य मंत्री शजयन्त चौधरी ने जानकारियां साझा करते हुए बताया कि, शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है, अतः शिक्षकों की भर्ती, सेवा शर्तें और उनकी तैनाती मुख्य रूप से राज्य सरकारों के प्रशासनिक नियंत्रण में आती है। सेवानिवृत्ति और नामांकन में वृद्धि के कारण रिक्तियां एक सतत प्रक्रिया है, जिसे भरना राज्यों का दायित्व है।

केंद्र सरकार 'समग्र शिक्षा' योजना के माध्यम से राज्यों को वित्तीय मदद दे रही है। विशेष रूप से पहाड़ी, दुर्गम और जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षकों (खासकर महिला शिक्षकों) के लिए आवासीय क्वार्टर बनाने पर जोर दिया जा रहा है ताकि शिक्षकों का प्रतिधारण बेहतर हो सके।

मंत्री ने यह भी बताया कि 'पीएम श्री' स्कूलों में शिक्षण की गुणवत्ता सुधारने के लिए प्रति शिक्षक 2,500 रूपये तक की सहायता और के माध्यम से 3 लाख रूपये तक का बजट आवंटित किया जा रहा है। 'निष्ठा' कार्यक्रम के जरिए शिक्षकों को डिजिटल तकनीक और आधुनिक शैक्षणिक पद्धतियों में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

भारत की पहली डिजिटल जनगणना आज शुरू

नई दिल्ली। सरकार ने जनगणना 2027 के पहले चरण में पूछे जाने वाले 33 प्रश्नों को अधिसूचित किया है।

नई दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, भारत के रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त मृत्युंजय कुमार नारायण ने बताया कि जनगणना दो चरणों में आयोजित की जाएगी। पहले चरण में घर-घर जाकर सूचीकरण और स्व-गणना की प्रक्रिया पूरी होगी। यह चरण राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा तय कार्यक्रम के अनुसार 1 अप्रैल से 30 सितंबर तक चलेगा।

आगे उन्होंने बताया कि स्व-गणना पोर्टल 16 भाषाओं में उपलब्ध होगा।

नारायण ने बताया कि दूसरे चरण के प्रश्न भी उचित समय पर प्रकाशित कर दिए जाएंगे और जाति गणना, जनगणना के दूसरे चरण में होगी।

अब पंजाब में छह मिनट में पहुंचेगी पुलिस सहायता: मुख्यमंत्री भगवंत मान

संगरूर,। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने मंगलवार को घोषणा की कि अब राज्य में पुलिस सहायता सिर्फ छह मिनट के भीतर उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि यह व्यवस्था अमेरिका और यूरोप जैसे विकसित क्षेत्रों के बराबर होगी। मुख्यमंत्री ने संगरूर में 508 इमरजेंसी रिस्पॉन्स व्हीकल्स को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, जिससे पूरे राज्य में जमीनी स्तर पर पुलिस व्यवस्था को और मजबूत किया जाएगा।

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने 508 इमरजेंसी रिस्पॉन्स व्हीकल्स को हरी झंडी दिखाने के बाद कहा कि ये वाहन आधुनिक तकनीक से लैस हैं और डायल 112 के तहत राज्य के सभी 28 पुलिस जिलों में तैनात किए जाएंगे। इससे आपात स्थिति में लोगों को तुरंत पुलिस सहायता मिल सकेगी और तकनीक आधारित पुलिसिंग को मजबूती मिलेगी।

उन्होंने बताया कि पिछले चार वर्षों में पुलिस वाहनों पर 327.70 करोड़ रुपए का निवेश किया गया है। इससे कानून-व्यवस्था मजबूत हुई है और ड्रग तस्करों पर भी सख्ती बढ़ी है। बेहतर सुरक्षा माहौल के कारण निवेशकों का भरोसा भी बढ़ा है, जिसका उदाहरण पंजाब में टाटा स्टील के दूसरे सबसे बड़े प्लांट की स्थापना है। सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री मान ने लोगों से अपील की कि ड्रग्स के धंधे में शामिल लोगों का सामाजिक बहिष्कार किया जाए। उन्होंने कहा, 'जो लोग पीढ़ियों को बर्बाद कर रहे हैं, उनके साथ कोई नरमी नहीं होनी चाहिए। सामाजिक बहिष्कार से पंजाब को नशामुक्त बनाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार ने पहले ही ड्रग तस्करी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की है और ऐसे मामलों में सजा की दर 87 प्रतिशत तक पहुंच गई है, जो अन्य राज्यों से ज्यादा है। 'युद्ध नशे विरुद्ध' अभियान को उन्होंने अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई बताते हुए कहा कि इससे ड्रग नेटवर्क की कमर टूट गई है, सप्लाई चेन खत्म हुई है और बड़े तस्करों को जेल भेजा गया है।मुख्यमंत्री ने कहा कि इस अभियान को जन आंदोलन बनाने के लिए व्यापक रणनीति तैयार की गई है, जिसमें लोगों की सक्रिय भागीदारी जरूरी है। उन्होंने कहा कि पिछली सरकारों के विपरीत, आम आदमी पार्टी की सरकार ने तस्करों को बढ़ावा देने के बजाय उनके खिलाफ सख्त कदम उठाए हैं। 'ड्रग आतंकवाद' को चुनौती देते हुए मान ने कहा कि पंजाब पुलिस सीमा पार से होने वाली तस्करी पर नजर रख रही है ।

राष्ट्रीय पीएनजी अभियान 2.0 की समय सीमा बढ़ाई गई: पेट्रोलियम मंत्रालय

नई दिल्ली । पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और होर्मुज जलडमरूमध्य के बंद होने के मद्देनजर भारत सरकार ने देश में ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री संचालन और विदेशों में रह रहे भारतीयों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कई अहम कदम उठाए हैं। वहीं बदलते हालात के बीच सरकार ने राष्ट्रीय पीएनजी अभियान 2.0 की समय सीमा भी बढ़ा दी है। सरकार ने स्पष्ट किया है कि स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है और आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति पूरी तरह नियंत्रण में है।

सरकार के अनुसार, देश की सभी तेल रिफाइनरियां उच्च क्षमता पर काम कर रही हैं और पेट्रोल-डीजल का पर्याप्त भंडार उपलब्ध है। एलपीजी उत्पादन भी बढ़ाया गया है ताकि घरेलू जरूरतों को पूरा किया जा सके। कच्चे तेल की वैश्विक कीमतों में तेजी के बीच आम लोगों को राहत देने के लिए पेट्रोल और डीजल पर 10 रुपये प्रति लीटर उत्पाद शुल्क घटाया गया है, जबकि निर्यात को नियंत्रित करने के लिए डीजल (21.5 रुपये प्रति लीटर) और विमानन टरबाइन ईंधन (एटीएफ) (29.5 रुपये प्रति लीटर) पर लेवी लगाई गई है।

देशभर में पेट्रोल पंप और ईंधन आउटलेट सामान्य रूप से संचालित हो रहे हैं। सरकार ने अफवाहों के कारण हो रही घबराहट में खरीदारी से बचने की अपील की है और कहा है कि कहीं भी ईंधन की कमी नहीं है। राज्य सरकारों को निर्देश दिए गए हैं कि वे नियमित प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए सही जानकारी जनता तक पहुंचाएं और फर्जी खबरों पर रोक लगाएं।

प्राकृतिक गैस के मोर्चे पर भी सरकार सक्रिय है। घरेलू पीएनजी और सीएनजी आपूर्ति को प्राथमिकता दी गई है, जबकि औद्योगिक उपभोक्ताओं को सीमित आपूर्ति की जा रही है। डी-पीएनजी और सीएनजी-परिवहन को 100 प्रतिशत आपूर्ति के साथ उपभोक्ताओं को प्राथमिकता दी गई है। ग्रिड से जुड़े औद्योगिक और वाणिज्यिक उपभोक्ताओं को आपूर्ति उनकी औसत खपत का 80 प्रतिशत है। सिटी गैस नेटवर्क के विस्तार को तेज करने के लिए राज्यों से अनुमतियों में तेजी लाने को कहा गया है।

भारत का 700 अरब डॉलर का विदेशी मुद्रा भंडार रुपए की स्थिति को संभालने के लिए पर्याप्त : रिपोर्ट

नई दिल्ली। भारत का 700 अरब डॉलर से अधिक का विदेशी मुद्रा भंडार रुपए की स्थिति को संभालने और उसमें तेज उतार-चढ़ाव को रोकने के लिए पर्याप्त है। यह जानकारी मंगलवार को जारी एक रिपोर्ट में दी गई। एसबीआई रिसर्च की रिपोर्ट में कहा गया है कि मौजूदा विदेशी मुद्रा भंडार 10 महीने से अधिक के आयात के बराबर है और छोट अवधि का ऋण विदेशी मुद्रा भंडार के 20 प्रतिशत के बराबर है, जिससे रुपए को सहारा देने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को पर्याप्त जगह मिलती है।

हालांकि, रिसर्च फर्म ने चेतावनी दी कि अस्थिर पूंजी प्रवाह और तेल की ऊंची कीमतें निकट भविष्य के दृष्टिकोण के लिए जोखिम पैदा करती हैं और तेल विपणन कंपनियों के लिए 250-300 मिलियन डॉलर की दैनिक मांग को पूरा करने के लिए एक विशेष डॉलर विंडो सहित कई नीतिगत उपायों का आग्रह किया। रिपोर्ट में कहा गया, 'इससे वास्तविक विदेशी मुद्रा की मांग और आपूर्ति की गतिशीलता पर बेहतर स्पष्टता प्राप्त होगी और अनावश्यक अस्थिरता को रोकने के लिए नियामक द्वारा शुरू किए गए विभिन्न उपायों की प्रभावशीलता को मापने में मदद मिलेगी। रिपोर्ट में सुझाव दिया गया कि केवल ट्रेडिंग बुक पर 100 मिलियन डॉलर की सीमा लगाई जानी चाहिए, न कि पूरे बैंक बुक स्तर पर, क्योंकि इससे परिचालन संबंधी चुनौतियां उत्पन्न होती हैं। इसमें अल्पकालिक यील्ड बढ़ाने और दीर्घकालिक यील्ड घटाने के लिए 'ऑपरेशन ट्विस्ट' का सुझाव दिया गया है, 'यह सुनिश्चित करते हुए कि विभिन्न संदर्भ दरें निर्धारित सीमा के भीतर रहें और नीतिगत दर के अनुरूप हों। केंद्रीय बैंक ने 'रुपए को सहारा देने के लिए कड़े कदम उठाए हैं', लेकिन फर्म ने बाहरी बाजारों से मांग वाली मुद्राओं को लाकर और वैकल्पिक तंत्रों (जैसे ओएमसी के लिए एक विशेष यूएसडी विंडो) को शामिल करके हस्तक्षेपों में तेजी लाने का आग्रह किया है।

शेष पेज - 01

नालंदा के मंदिर में भगदड़ मचने से आठ की मौत, थानाध्यक्ष निलंबित ...

स्थानीय लोगों का कहना है कि प्रत्येक मंगलवार को यहां अधिक भीड़ होती है। आज चैत्र के आखिरी मंगलवार को यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे थे। प्रत्यक्षदर्शियों ने भी व्यवस्था में कमी का जिक्र किया है।

इस बीच, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मृतकों के परिजनों के लिए छह लाख रुपये मुआवजे की घोषणा की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस हादसे पर दुख जताया है। उन्होंने इसमें जान गंवाने वाले पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त की। इसके साथ ही केंद्र सरकार ने इस भगदड़ में जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों को 2 लाख रुपए और घायलों को 50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता की घोषणा भी की।

टोल प्लाजा पर आज से केवल डिजिटल माध्यम से भुगतान होगा मान्य...

अधिकारियों का मानना है कि पूरी तरह से डिजिटल प्रणाली से वाहनों को टोल प्लाजा से तेजी से गुजरने में मदद मिलेगी।

जिससे लंबी कतारें कम होंगी और यात्रा का समय बचेगा।

कैश लेन को हटाने से अधिकारियों को उम्मीद है कि यातायात खासकर व्यस्त समय में सुचारू रूप से चलेगा।

टोल बूथों पर तेजी से प्रोसेसिंग से ईंधन की खपत और वाहन उत्सर्जन में भी कमी आने की संभावना है, जिससे स्वच्छ पर्यावरण में योगदान मिलेगा। हालांकि, इस बदलाव से कुछ यात्रियों को असुविधा हो सकती है, खासकर उन लोगों को जो डिजिटल भुगतान के लिए तैयार नहीं हैं।

वैध फास्टैग या पर्याप्त बैलेंस न होने पर वाहनों पर जुर्माना लग सकता है या उन्हें टोल प्लाजा पर रोका भी जा सकता है।

ऐसे मामलों में, यात्रियों के पास टोल बूथों पर उपलब्ध क्यूआर कोड को स्कैन करके यूपीआई के माध्यम से तुरंत भुगतान करने का विकल्प होगा। लेकिन अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि नेटवर्क संबंधी समस्याओं के कारण कभी-कभी ये लेनदेन प्रभावित हो सकते हैं, जिससे देरी हो सकती है।

बाधाओं से बचने के लिए, यात्रियों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी यात्रा शुरू करने से पहले सुनिश्चित करें कि उनका फास्टैग सक्रिय है, उनके बैंक खाते से ठीक से जुड़ा हुआ है और उसमें पर्याप्त शेष राशि है।

अपने स्मार्टफोन में बैकअप के रूप में एक चालू यूपीआई ऐप रखने की सलाह भी दी गई है। यह बदलाव भारत के डिजिटल अवसंरचना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे राजमार्ग यात्रा तेज, सुगम और अधिक कुशल बनेगी।

संघर्ष हमारी शर्तों पर ही होगा खत्मः हेगसेथ...

हालांकि, शायद इसकी जरूरत न पड़े।

एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि अमेरिका की रणनीति थोड़ी 'अनप्रेडिक्टेबल' यानी अनिश्चित रहने की है, ताकि दुश्मन अंदाजा न लगा सके कि अगला कदम क्या होगा? उन्होंने कहा, 'आप कोई युद्ध तब तक न तो लड़ सकते हैं और न ही जीत सकते हैं, जब तक आप अपने विरोधी को यह बता दें कि आप क्या करने को तैयार हैं और क्या नहीं—जिसमें जमीनी सैनिकों की तैनाती भी शामिल है। हेगसेथ ने आगे कहा, 'हमारा विरोधी इस समय सोच रहा है कि ऐसे 15 अलग-अलग तरीके हैं जिनसे हम जमीनी सैनिकों के साथ उन पर हमला कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि अगर जरूरत पड़ी, तो अमेरिका 'उन विकल्पों को अमल में ला सकता है। या शायद हमें उनका इस्तेमाल करने की जरूरत ही न पड़े। शायद बातचीत से बात बन जाए। मुख्य बात यह है कि इस मामले में अप्रत्याशित बने रहें – निश्चित रूप से किसी को भी यह न पता चलने दें कि आप क्या करने को तैयार हैं और क्या नहीं।

ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के अध्यक्ष जनरल डैन केन ने भी पत्रकारों से कहा कि यूएस की सेना जिन 'सैन्य विकल्पों की श्रृंखला' को अमल में ला सकती है, वह 'काफी व्यापक' है।

उन्होंने कहा, 'मैं राष्ट्रपति के निर्णय लेने के दायरे को सीमित नहीं करना चाहूंगा, लेकिन कई ऐसी बातें हैं—जिनमें सबसे अहम बात यह है, जिस पर ईरान को गौर करना चाहिए—कि हमारे सैनिक वहां मौजूद हैं और वे एक दबाव बिंदु का काम करते हैं। इसलिए मेरा मानना ??है कि मौजूदा हालात को ध्यान में रखते हुए उन्हें कूटनीतिक स्तर पर इस बात पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए।

वहीं, ट्रंप के नाटो पर हमलावर रवैए को लेकर पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए हेगसेथ ने स्पष्ट किया कि 'मिशन तो हमारी शर्तों पर ही खत्म होगा।' राष्ट्रपति के शब्दों में कहें तो, इसे लेकर कोई शक नहीं है। जहां तक नाटो की बात है, यह फैसला राष्ट्रपति पर ही छोड़ दिया जाएगा।

लेकिन मैं बस इतना कहूंगा कि बहुत कुछ स्पष्ट हो गया है।

उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि दुनिया को यह दिख गया है कि जब हम आजाद दुनिया की तरफ से इतने बड़े पैमाने पर कोई कोशिश करते हैं, तो हमारे सहयोगी अमेरिका के लिए क्या करने को तैयार होते हैं? उनकी मिसाइलों के रेंज में अमेरिका नहीं है। वे हमारे सहयोगियों और दूसरों तक पहुंचती हैं। फिर भी, जब हम अतिरिक्त मदद या सिर्फ बुनियादी हवाई मार्ग की अनुमति मांगते हैं, तो हमें सवालों, रुकावटों या हिचकिचाहट का सामना करना पड़ता है।

फिर हेगसेथ ने अंत में ट्रंप के ट्रुथ पोस्ट का मतलब समझाते हुए कहा कि राष्ट्रपति यही इशारा कर रहे हैं कि अगर आपके पास ऐसे देश हैं जो जरूरत पड़ने पर आपके साथ खड़े होने को तैयार नहीं हैं, तो फिर आपके गठबंधन का कोई खास मतलब नहीं रह जाता है।

सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत की बड़ी छलांग: पीएम मोदी

...

प्रधानमंत्री ने भरोसा जताया कि आने वाले समय में भारत की कई कंपनियां ग्लोबल सहयोग के जरिए दुनिया को एक मजबूत सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन देने में अहम भूमिका निभाएंगी। आज का दिन 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' के विजन को सही मायनों में साकार करता है। पीएम मोदी ने यह भी कहा कि 21वीं सदी सिर्फ आर्थिक प्रतिस्पर्धा का समय नहीं है, बल्कि यह भविष्य की टेक्नोलॉजी को दिशा देने का दौर है।

भारत अब सिर्फ बदलाव का साक्षी नहीं है, बल्कि बदलाव का नेतृत्व करने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा कि इस दशक में भारत जो टेक्नोलॉजी पहल कर रहा है, वे आने वाले दशकों में देश की वैश्विक नेतृत्व क्षमता को और मजबूत करेंगी।

महिलाओं को हर महीने 3000 रुपए देने का वादा...

जिसमें 'पीएम सूर्य घर' वाले परिवारों के लिए खास सब्सिडी भी शामिल है। सभी गरीब परिवारों को हर साल दो मुफ्त एलपीजी सिलेंडर देने का वादा है। एक एलपीजी सिलेंडर ओणम के दौरान और दूसरा क्रिसमस के दौरान देने का वादा है। भाजपा ने सभी घरों को मुफ्त पानी की सप्लाई देने की भी बात कही गई है। साथ ही केरल के सभी जल स्रोतों का जीर्णोद्धार और संरक्षण करने का भी वादा किया है।

तिरुवनंतपुरम को कन्नूर से जोड़ने वाला एक हाई-स्पीड रेलवे नेटवर्क बनाने की बात कही गई है। भाजपा का कहना है कि हम निलंबूर-नंजनगुड रेलवे प्रोजेक्ट को फिर से शुरू करेंगे और तेजी से आगे बढ़ाएंगे; साथ ही, त्रिशूर-गुरुवायूर लाइन को तिरूर तक बढ़ाएंगे, जिससे केरलम में व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। विझिंजम बंदरगाह के आस-पास विश्व-स्तरीय लॉजिस्टिकल और औद्योगिक ढांचा विकसित करने का वादा किया गया। भाजपा ने कहा कि इससे बंदरगाह-आधारित विकास का पूरा लाभ केरलम को मिल सकेगा।

केरलम के सभी नगर निगमों में जरूरी मेट्रो कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने का भी भजपा का वादा है।

रोजगार से जुड़ी ग्रांट के जरिए राज्य के तेजी से बढ़ते क्षेत्रों का पुनरुद्धार करके बेरोजगारी को खत्म करने का वादा है।

केरल के टेक्नोलॉजी, इनोवेशन और इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर को बढ़ाकर स्किल्ड मलयाली युवाओं के लिए जॉब्स में क्रांति लाने की भी बात कही गई है।

इसके साथ ही 12वीं कक्षा तक निःशुल्क ऑप्शनल इंग्लिश मीडियम एजुकेशन का वादा है। हर ग्राम पंचायत, म्युनिसिपैलिटी और म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन में क्लास 12 तक फ्री, जरूरी और अच्छी क्वालिटी की एजुकेशन मिलेगी, जिसमें इंग्लिश मीडियम एक ऑप्शन होगा।

भाजपा ने केरल के एजुकेशन इकोसिस्टम को टैलेंट हब में बदलने का भी वादा किया है।

अंतिम तारीख पर 25 माओवादियो ने डाले हथियार

7 किलो सोना, 3 करोड़ कैश बरामद

बीजापुर । नक्सली खात्मे के डेडलाइन (31 मार्च) के अंतिम दिन 14 करोड़ का नक्सली डंप मिला है। बीजापुर में 25 नक्सलियों ने सरेंडर किया है। इनसे मिले इनपुट के बाद ही 3 करोड़ कैश और 7 किलो गोल्ड बरामद हुआ। इसे अब तक का सबसे बड़ा डंप माना जा रहा है।

इसी तरह कुल 4 जिलों में 34 नक्सलियों ने हथियार डाले हैं। इसमें दंतेवाड़ा में 5, सुकमा में 2 और कांकेर में 2 नक्सली शामिल है। पुलिस ने दंतेवाड़ा के नक्सल मुक्त होने का दावा किया है, वहीं, कांकेर में अब भी 14 नक्सली सक्रिय है, पुलिस इनसे संपर्क की कोशिश कर रही है।

बीजापुर में दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी के 25 नक्सलियों ने 93 हथियारों के साथ सरेंडर किया है। इसमें 12 महिला माओवादी कैडर शामिल हैं। सभी पर 1.47 करोड़ का इनाम घोषित था।

कई बड़े वारदातों में शामिल रहे

इनमें मंगल कोरसा ऊर्फ मोटू, आकाश ऊर्फ फागु उईका, शंकर मुचाकी, एसीएम राजू रैयाम ऊर्फ मुन्ना, पाले कुरसम जैसे बड़े नक्सली शामिल है।

मंगल 8 लाख इनामी रहा है और 12 बड़ी घटनाओं में शामिल रहा है। शंकर मुचाकी (33) भी 8 बड़े वारदातों में शामिल रहा। पाले कुरसम 5 घटनाओं में शामिल था।

बीजापुर में अब तक 19 करोड़ का डंप मिला

जिले में 1 जनवरी 2024 से लेकर 31 मार्च 2026 तक कुल 1003 माओवादी कैडरों ने सरेंडर किया है। इसके पहले 5.37 करोड़ का डंप मिला था, जिसमें 1.64 करोड़ का 1 किलो सोना और 3.73 करोड़ कैश था। इस प्रकार अब तक 19.43 करोड़ का डंप मिला है। जिसमें 6.63 करोड़ कैश और 12.80 करोड़ का 8.20 किग्रा सोना शामिल है।

पुलिस का दावा- दंतेवाड़ा नक्सलवाद मुक्त

दंतेवाड़ा पुलिस लाइन कारली में मंगलवार (31 मार्च) को 'पूना मारगेम-पुनर्वास से पुनर्जीवन' अभियान के तहत सरेंडर कार्यक्रम हुआ। इसमें दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी से जुड़े 5 नक्सली मुख्यधारा में लौटे हैं। इनमें 4 महिला कैडर शामिल हैं।

पुलिस ने अलग-अलग ऑपरेशन के दौरान इंसास, स्क्र कार्बाइन, लॉन्चर समेत कई हथियार भी बरामद किए हैं। एसपी गौरव राय ने दावा किया है कि अब दंतेवाड़ा जिला भी नक्सल मुक्त हो चुका है। यहां की आबो हवाओं में अब हिंसा नहीं बल्कि अमन, चैन और शांति महसूस की जा सकती है।

शराब के अवैध परिवहन में इस्तेमाल भाटिया और वेलकम डिस्टलरी के वाहन जब्त

बिलासपुर। ईओडब्ल्यू ने वेलकम डिस्टलरी, कोटा बिलासपुर और भाटिया वाइंस डिस्टलरी, सरगांव मुंगेली से कुल 16 वाहन जब्त किए हैं। डिजिटल एवं भौतिक साक्ष्यों के आधार पर यह पाया गया है कि इन वाहनों का उपयोग अवैध शराब (पार्ट-बी) के परिवहन में किया जाता था। इन वाहनों के माध्यम से डिस्टलरियों से सीधे चयनित शासकीय शराब दुकानों तक अवैध शराब पहुंचाई जाती थी। ईओडब्लू ने एक विज्ञप्ति में बताया कि इस कार्य हेतु डिस्टलरी मालिकों द्वारा अपनी कंपनियों, कर्मचारियों तथा भरोसेमंद व्यक्तियों के नाम से खरीदी गई गाड़ियों का उपयोग किया जाता था। विवेचना में वेलकम डिस्टलरी से 08 तथा भाटिया वाइंस डिस्टलरी से 08 वाहन चिन्हित कर जब्त किए गए हैं। केडिया डिस्टलरी में भी इस कार्य हेतु निजी गाड़ियों के उपयोग के संबंध में जांच जारी है। आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो, रायपुर शराब घोटाला प्रकरण, अपराध क्रमांक 04/2024, धारा 7, 12 भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 यथा संशोधित अधिनियम, 2018 तथा धारा 420, 467, 468, 471, 120-बी भा.दं.वि. के अंतर्गत यह जब्ती की है। जांच में प्राप्त डिजिटल एवं भौतिक साक्ष्यों से यह स्थापित हुआ है कि इन वाहनों का उपयोग अवैध शराब (पार्ट-बी) के परिवहन में किया जाता था। विवेचना में यह पाया गया है कि अवैध शराब का परिवहन डिस्टलरियों से सीधे चयनित शासकीय देशी शराब दुकानों तक कराया जाता था। इस कार्य के लिए कुछ निर्धारित वाहनों का बार-बार उपयोग किया जाता था। जांच में प्राप्त साक्ष्यों और गवाहों के बयानों के आधार पर ऐसे वाहनों की डिस्टलरीवार पहचान की गई। जांच में यह भी सामने आया है कि इस अवैध परिवहन हेतु डिस्टलरी मालिकों द्वारा अपनी कंपनियों, कर्मचारियों तथा कुछ भरोसेमंद व्यक्तियों के नाम से खरीदी गई अथवा उपलब्ध कराई गई ।

दो साल में समाप्त हुई 5 दशक पुरानी नक्सल समस्या : विजय शर्मा

ठ रायपुर प्रेस क्लब में आयोजित कार्यक्रम में डिप्टी सीएम और गृह मंत्री विजय शर्मा ने 31 मार्च की डेडलाइन के आखिरी दिन बड़ा दावा किया। उन्होंने कहा कि पांच दशकों पुरानी नक्सल समस्या दो साल में अब पूरी तरह खत्म हो चुकी है। यह राज्य के लिए यह स्मरणीय और वंदनीय है, जिसे सुरक्षा बलों, सरकार और बस्तर की जनता के संयुक्त प्रयासों से संभव बनाया गया।

विजय शर्मा ने आगे कहा कि, दिसम्बर 2023 में सरकार बदल गई थी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में जनवरी 2024 की बैठक में एक चर्चा होती है कि, देश में 75 फीसदी नक्सलवाद हमारे छत्तीसगढ़ में था। उस बैठक में यह निर्देश दिए गए कि, CRPF, BSF और पुलिस इस बात की गणना बतायेगे कि, कैसे नक्सलवाद का समूल नाश और उन्मूलन किया जाएगा, यह अपनी रिपोर्ट में दें।

दूसरी बैठक में बनाया गया रोड मैप

उन्होने आगे कहा कि, दूसरी बैठक 24 अगस्त 2024 में इन रिपोर्ट के आधार पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने यह घोषणा कि, जो नक्सली लोगों की हत्याएं करते हैं, उन्हें 31 मार्च 2026 तक देश से नक्सलवाद को समाप्त करने की घोषणा की थी।

4 करोड़ की प्रॉपर्टी हड़पने सेवानिवृत शिक्षा अधिकारी की हत्या

मुंगेली। संपत्ति हड़पने के लिए छोटे भाई ने सुपारी देकर बड़े भाई की हत्या करवा दी। दामोदर सिंह (62) रिटायर्ड शिक्षा अधिकारी थे। उनके पास लगभग 4 करोड़ की प्रॉपटी और 30 तोला सोना था, जो वह हड़पना चाहता था। मर्डर के लिए उसने गांव के ही युवक से 10 लाख रुपए और 50 डिसमिल जमीन देने की डील की थी और साढ़े 4 लाख रुपए एडवांस भी दे भी दिए थे।

मामला लालपुर थाना क्षेत्र का है। वारदात में 15 लोग शामिल थे। 21 मार्च को दामोदर को बुलाकर गमछे से उसका गला घोंटा गया, लाश घटनास्थल से 60ग्रद्द दूर जंगल ले जाकर रेत में दफनाया गया, फिर मोबाइल नदी में बहा दिया था। 8 दिन बाद पूरे मामले का खुलासा हुआ। पुलिस ने सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। इनमें पूर्व कांग्रेस नेता समेत 4 नाबालिग और परिवार के ही सदस्य है। दरअसल, दामोदर सिंह राजपूत (62) शिक्षा विभाग में लेखा अधिकारी थे। जो रिटायर के बाद मुंगेली में किराए के मकान में रह रहे थे। जांच में सामने आया कि दामोदर सिंह का अपने इकलौते बेटे संजय राजपूत के साथ संपत्ति को लेकर विवाद चल रहा था। इसी पारिवारिक कलह का फायदा उठाकर आरोपियों ने प्रॉपटी और सोना हड़पने की साजिश रची।

पहले भी की थी मारने की कोशिश

आरोपियों ने एक फर्जी नोटरी तैयार करवाया था, जिसमें यह दर्शाया गया था कि दामोदर अपनी संपत्ति भाइयों और भतीजों को बेच रहे हैं और अपने बेटे से कोई संबंध नहीं रखना चाहते।

'नारी तू नारायणी सम्मान 2026' मे 121 महिलाओं का हुआ सम्मान

रायपुर। यूएचएफसी फाउंडेशन द्वारा 'नारी तू नारायणी सम्मान 2026' का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन राजधानी रायपुर में किया गया, जिसमें समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 121 महिलाओं को सम्मानित किया गया। संस्था के संस्थापक एवं निदेशक सोनम श्रीवास्तव एवं महेंद्र सिंघानिया के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं के योगदान को सम्मान देना और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना रहा। इस आयोजन में खेल, चिकित्सा, शिक्षा, कला, अभिनय, गायन, दिव्यांग एवं ट्रांसजेंडर समुदाय से जुड़ी प्रतिभाशाली महिलाओं को छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से चयनित कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों के लिए नृत्य प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

मुख्यमंत्री ने 370 नई एम्बुलेंस को दिखाई हरी झंडी

रायपुर । छत्तीसगढ़ में आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं को सशक्त बनाने के लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने मंगलवार को 370 नई एम्बुलेंस को हरी झंडी दिखाकर विभिन्न जिलों के लिए रवाना किया।

इस नए बेड़े में 300 बेसिक लाइफ सपोर्ट और 70 एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस शामिल हैं। इस पहल की सबसे प्रमुख विशेषता 5 नियोनेटल एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस की शुरुआत है, जो विशेष रूप से गंभीर नवजात शिशुओं के सुरक्षित परिवहन के लिए तैयार की गई हैं। राज्य सरकार की इस योजना का उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में 15 मिनट और ग्रामीण क्षेत्रों में 30 मिनट के भीतर चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराना है।

साय ने इस अवसर पर कहा कि पिछले दो वर्षों में स्वास्थ्य सेवाओं में व्यापक सुधार हुआ है, जिससे सरकारी अस्पतालों पर जनता का भरोसा बढ़ा है। उन्होंने बताया कि उप-स्वास्थ्य केंद्रों से लेकर सामुदायिक केंद्रों तक के उन्नयन के कारण अब स्थानीय स्तर पर ही उपचार सुलभ हो रहा है। मुख्यमंत्री ने विशेष रूप से नवजात शिशुओं के लिए शुरू की गई सेवा को मील का पत्थर बताया और कहा कि संकट के समय सरकार पूरी संवेदनशीलता के साथ नागरिकों के साथ खड़ी है।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जानकारी दी कि छत्तीसगढ़ अब देश का दूसरा राज्य बन गया है जहां नियोनेटल एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इन सेवाओं की गुणवत्ता और समयबद्धता सुनिश्चित करने के लिए एक विशेष मॉनिटरिंग सिस्टम विकसित किया गया है और किसी भी प्रकार की लापरवाही पर त्वरित कार्रवाई की जाएगी। ये एम्बुलेंस आधुनिक चिकित्सा उपकरणों जैसे इन्क्यूबेटर, वेंटिलेटर, डिफिब्रिलेटर और 41 प्रकार की जीवनरक्षक दवाओं से लैस हैं, जो इन्हें एक चलते-फिरते आईसीयू का स्वरूप प्रदान करती हैं।

एम्बुलेंस में मरीजों की मौके पर जांच के लिए बीपी मॉनिटर, पल्स ऑक्सीमीटर और ईसीजी जैसी सुविधाएं भी जोड़ी गई हैं। गंभीर रोगियों के स्थानांतरण के लिए पोर्टेबल वेंटिलेटर और सिरिंज पंप जैसे उन्नत उपकरण सुनिश्चित किए गए हैं। कार्यक्रम में विधायक मोती लाल साहू, विधायक इंद्र कुमार साहू, सीजीएमएससी के अध्यक्ष दीपक म्हस्के, स्वास्थ्य सचिव अमित कटारिया, संचालक स्वास्थ्य सेवाएं संजीव झा और अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। यह समग्र प्रयास प्रदेश के दूरस्थ अंचलों तक त्वरित और प्रभावी स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के लक्ष्य को पूरा करने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना में छत्तीसगढ़ देश में प्रथम, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र को पछाड़ा

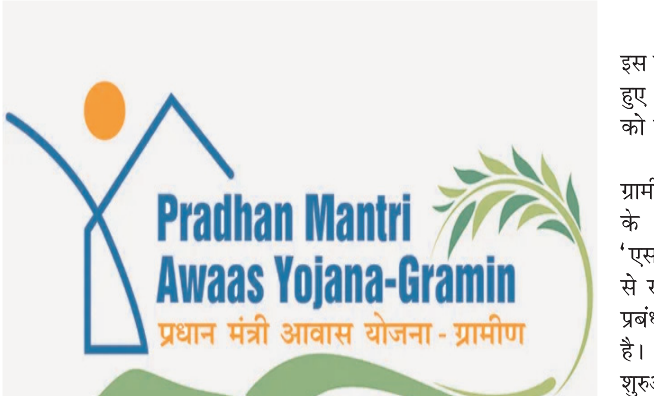

रायपुर। छत्तीसगढ़ ने प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना के तहत चालू वित्तीय वर्ष में आवास निर्माण और वित्तीय प्रबंधन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन दर्ज किया है। मंगलवार को दी गयी आधिकारिक जानकारी के अनुसार, राज्य ने इस अवधि में सर्वाधिक आवास निर्माण पूर्ण करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर पहला स्थान हासिल किया है, साथ ही मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्यों से आगे निकल गया है।

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने इस उपलब्धि पर संतोष व्यक्त करते हुए प्रदेशवासियों और लाभार्थियों को बधाई दी।

उन्होंने बताया कि पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के तहत 'एसएनए स्पर्श' प्रणाली के माध्यम से राज्य ने उच्च व्यय कर वित्तीय प्रबंधन में भी बेहतर प्रदर्शन किया है। वर्ष 2016 में योजना की शुरुआत के बाद से एक ही वित्तीय वर्ष में सर्वाधिक आवास निर्माण का रिकॉर्ड भी इसी वर्ष दर्ज किया गया है।

उन्होंने कहा कि 'आवास से आजीविका' पहल के अंतर्गत निर्माण सामग्री की आपूर्ति से हजारों महिलाओं को रोजगार मिला है। इनमें 9,000 से अधिक महिलाएं 'लखपति दीदी' के रूप में आत्मनिर्भर बनी हैं। इसके अलावा, इस वर्ष 6,000 से अधिक राजमिस्त्रियों को आरसेटी के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया, जो देश में सर्वाधिक बताया गया है।

प्रशिक्षित राजमिस्त्रियों में 1,400 महिलाएं और 400 से अधिक आत्मसमर्पित नक्सली भी शामिल हैं ।

जिन्हें मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया गया है। लाभार्थियों को स्थायी आजीविका से जोड़ने के लिए महात्मा गांधी नरेगा के तहत व्यक्तिगत कार्यों को भी बढ़ावा दिया गया है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलने की बात कही गई है।

विजय शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार ग्रामीण विकास और गरीबों के जीवन में सुधार के लिए कार्य कर रही है। उनके अनुसार, प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना के माध्यम से पक्के घरों के साथ-साथ लोगों की आजीविका और आत्मनिर्भरता को भी प्रोत्साहन मिल रहा है।

9.58 करोड़ की वसूली, अंतिम दिन सम्पतिकर जमा करने वालो की भीड़

रायपुर । नगर पालिक निगम के सभी जोनों के राजस्व विभागों में सम्पतिकर अदा करने सम्पतिकरदाता नागरिक उमड़ पड़े. सभी 10 जोनों में सम्पतिकरदाता नागरिक स्वयं आकर सुबह 10 बजे से रात्रि 9 बजे तक अपना देय सम्पतिकर सहजता और सरलता से अदा करते रहे। आज 30 मार्च को सुबह 10 बजे से रात्रि 9 बजे तक आज नगर निगम राजस्व विभाग को 8768 सम्पतिकरदाता नागरिकों ने 9 करोड़ 58 लाख 61442 रूपये सम्पतिकर अदा किया है। दिनांक 31 मार्च 2026 को सम्पतिकर अदा करने अंतिम नियत तिथि निर्धारित है. 31 मार्च के अंतिम दिवस तक राजस्व अदा नहीं कर पाने वाले सम्पतिकरदाता नागरिकों से नियमानुसार दिनांक 1 अप्रैल से 17 प्रतिशत अधिभार सहित राजस्व वसूली रायपुर नगर निगम के राजस्व विभाग द्वारा की जाएगी।

महासमुंद में 4.6 करोड का गांजा और नशीली-टैबलेट पकड़ाया

महासमुंद। छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले में पुलिस 'ऑपरेशन निश्चय' चल रही है। जिसके तहत सोमवार को महज 10 घंटे के अंदर 4 थाना इलाके से 6 क्विंटल 85 किलो गांजा और 700 नशीली टैबलेट बरामद किया है। जिसकी कीमत 4 करोड़ 61 लाख रुपए है। 13 तस्करों को भी गिरफ्तार किया गया, जिसमें से 7 दूसरे राज्य के निवासी हैं। यह कार्रवाई बसना, कोमाखान, सिंघोड़ा और महासमुंद थाना क्षेत्रों में की गई है। गिरफ्तार आरोपी छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के रहने वाले हैं। यह आरोपी ड्राई फ्रूट से भरे ट्रक, घरेलू सामान, पैकर्स एंड मूवर्स की आड़ तस्करी कर रहे थे। कोमाखान थाना: एनएच-353 टेमरी नाका पर नाकाबंदी के दौरान ट्रक क्रमांक सीजी 04 एनजे 9286 से 25 किलो गांजा जब्त किया गया। एमपी के मोहित साहू (27) और पुष्पेन्द्र साहू (21) को गिरफ्तार किया गया।

इसी थाने की टीम ने डिजायर कार क्रमांक जेएच 01 एफजेड 4071 से 200 किलो गांजा बरामद किया। इस कार में उत्तर प्रदेश के 3 आरोपी सवार थे। पकड़े गए गांजे की कीमत 1.08 करोड़ रुपए बताई गई है। बसना थाना: पैकर्स एंड मूवर्स एंड पैकर्स कंपनी के बोलेरो पिकअप में रायगढ़ से घरेलू सामान हैदराबाद ले जाने के लिए निकले थे।

नक्सल मुद्दे पर भूपेश बघेल ने दी अमित शाह को बहस की चुनौती

संसद में नक्सलवाद पर चर्चा के दौरान यह झूठ कहा कि कोई सहयोग नहीं किया था।

रायपुर। छत्तीसगढ़ समेत पूरे देश से नक्सलवाद समाप्त हो चुका है। वहीं इस मामले पर सियासत भी शुरू हो गई है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह को नक्सलवाद के मुद्दे पर बहस की चुनौती दी है। बघेल ने कहा है कि कांग्रेस की सरकार में नक्सल समस्या को खत्म करने केंद्र की भाजपा सरकार को पूरा सहयोग किया गया था, लेकिन अमित शाह ने संसद में नक्सलवाद पर चर्चा के दौरान यह झूठ कहा कि कोई सहयोग नहीं किया था। सच्चाई यो यह है कि मदद भी किया गया था। साथ नक्सल मोर्चे पर जोखिम लेकर हमारी सरकार ने विकास के अनेक कार्य किए थे। वहीं नक्सलवाद को लेकर सीएम विष्णुदेव साय ने कहा है कि आज 31 मार्च का ये दिन प्रदेश के लिए ऐतिहासिक दिन है। हमारे जवानों के साहस से छत्तीसगढ़ से नक्सलवाद समाप्त हुआ है। इसके लिए प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृह मंत्री का बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं। नक्सलवाद छत्तीसगढ़ के विकास में बड़ा बाधक था। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 2024 में नक्सलवाद खत्म करने का संकल्प लिया था और उनका संकल्प पूरा हुआ है। अब बस्तर क्षेत्र बहुत तेजी से विकास करेगा। सीएम ने बताया, अमित शाह ने नक्सलवाद और कांग्रेस के आरोपों पर कहा है कि भूपेश बघेल ने जो कहा है वह असत्य है। अपनी कमजोरी को छुपाने के लिए उन्होंने ऐसा कहा है। दिसंबर 2023 में सरकार आने के बाद अगले ही महीने नक्सल प्रभावित प्रदेश की समीक्षा हुई और उसमें पता चला कि 75 फीसदी नक्सलवाद छत्तीसगढ़ में है। अपने 5 साल के कार्यकाल में तत्कालीन छत्तीसगढ़ सरकार माओवाद के साथ लड़ने में दृढ़ता प्रकट की होती, ठीक नियत से लड़ी होती तो ऐसा नहीं होता।

अब तक पश्चिम एशिया से 5 लाख 72 हजार भारतीय लौटे स्वदेश

नई दिल्ली। सरकार ने बताया कि पश्चिम एशिया क्षेत्र से लगभग 5,72,000 यात्री भारत लौट आए हैं, और कतर का हवाई क्षेत्र आंशिक रूप से खुलने के साथ ही, मंगलवार को देश के लिए लगभग 8-10 गैर-निर्धारित वाणिज्यिक उड़ानें संचालित होने की उम्मीद है।

यूएई में, एक दिन में लगभग 85 उड़ानें संचालित होने की उम्मीद है। ऑपरेशनल और सुरक्षा संबंधी बातों को ध्यान में रखते हुए, सीमित संख्या में गैर-निर्धारित उड़ानें जारी हैं। विदेश मंत्रालय (एमईए) के अनुसार, ओमान और सऊदी अरब से भारत के लिए उड़ानें जारी हैं।

कुवैत और बहरीन का हवाई क्षेत्र बंद है। सऊदी अरब के दम्मम हवाई अड्डे से भारत के विभिन्न गंतव्यों के लिए विशेष गैर-निर्धारित कमर्शियल उड़ानें संचालित हो रही हैं।

मंत्रालय ने कहा, 'ईरान में हवाई क्षेत्र बंद होने के कारण, भारतीय नागरिकों को यात्रा की सुविधा आर्मेनिया और अजरबैजान के रास्ते दी जा रही है। इजरायल में हवाई क्षेत्र पर प्रतिबंधों को देखते हुए, भारतीय नागरिक मिस्र और जॉर्डन के रास्ते स्वदेश लौट रहे हैं।

मंत्रालय ने आगे कहा कि इराक में हवाई क्षेत्र बंद होने के कारण, भारतीय नागरिकों की यात्रा की सुविधा जॉर्डन और सऊदी अरब के रास्ते दी जा रही है। इस क्षेत्र में रहने वाले भारतीय समुदाय के साथ नियमित संपर्क बनाए रखा जा रहा है; उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान की जा रही है और उनकी सुरक्षा तथा कल्याण के लिए परामर्श जारी किए जा रहे हैं। बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय के अनुसार, इस क्षेत्र में मौजूद सभी भारतीय नाविक सुरक्षित हैं, और पिछले 24 घंटों में भारतीय ध्वज वाले किसी भी जहाज से जुड़ी कोई अप्रिय घटना सामने नहीं आई है।

'कानून व्यवस्था से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं', सीएम धामी की अधिकारियों को कड़ी चेतावनी

देहरादून। देहरादून में हाल ही में हुई कानून-व्यवस्था से जुड़ी घटना पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गहरी नाराजगी व्यक्त करते हुए सख्त रुख अपनाया है। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि राज्य में किसी भी कीमत पर कानून-व्यवस्था से समझौता नहीं किया जाएगा।

सीएम धामी के निर्देश पर सोबन सिंह, उप आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-3 मसूरी, जनपद-देहरादून और प्रभारी कुठालगेट चौकी उपनिरीक्षक ना.पु अशोक कुमार को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रदेशभर में तत्काल प्रभाव से व्यापक चेकिंग अभियान चलाया जाए और सभी अवांछित एवं हुड़दंग करने वाले तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। रोड रेज, फायरिंग और देर रात तक चलने वाली अवैध गतिविधियों पर पूरी तरह अंकुश लगाया जाए। उन्होंने दो टूक कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकता आम जनता की सुरक्षा है और इसके लिए हर जरूरी कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने पुलिस और प्रशासन को पूरी सख्ती और मुस्तैदी के साथ कार्य करने के निर्देश दिए।

सीएम धामी ने साफ कहा कि ड्यूटी में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। देहरादून में हालिया घटना के बाद संबंधित अधिकारियों के निलंबन को इसी सख्ती का उदाहरण बताते हुए उन्होंने कहा कि आगे भी ऐसी कार्रवाई जारी रहेगी।

उधर, मुख्य सचिव आनंद बर्द्धन ने मंगलवार को सचिवालय में शहर में लॉ एंड ऑर्डर को लेकर गृह और पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक ली। मुख्य सचिव ने रोड रेज और हुड़दंग की घटनाओं के बढ़ने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए निगरानी बढ़ाए जाने और हुड़दंगियों पर कठोर कार्रवाई किए जाने के निर्देश दिए।

मुख्य सचिव ने देहरादून शहर और उसके आसपास के क्षेत्रों में पुलिस की गश्त बढ़ाए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने एसएसपी देहरादून को अपने सभी थानेदारों को पीक ऑवर में पेट्रोलिंग बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि डे-नाईट पेट्रोलिंग के साथ ही मॉर्निंग पेट्रोलिंग को भी बढ़ाया जाए।

मुख्य सचिव ने बार और रेस्टोरेंट क्लोजिंग के लिए निर्धारित समय को कठोरता से लागू करने के निर्देश दिए। सप्ताहांत में देहरादून को पार्टी और हुड़दंगियों को अड्डा ना बनने दिया जाए, इसके लिए हुड़दंगियों पर कठोर कार्रवाई की जाए।

मुख्य सचिव ने बार संचालन के नियमों का पालन ना करने वाले बार और अवैध बार संचालकों पर भी कठोर कार्रवाई किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अपनी ड्यूटी को मुस्तैदी से ना करने वाले लापरवाह अधिकारियों पर भी कार्रवाई की जाए।

उन्होंने कहा कि शहर के आसपास के क्षेत्रों में खुले होम स्टे पर भी निगरानी किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए होम स्टे की मैपिंग की जाए एवं निगरानी रखी जाए कि ये होम स्टे जो टूरिज्म प्रमोशन के लिए बने थे, कहीं लगातार बार लाइसेंस लेकर इसका दुरुपयोग तो नहीं कर रहे हैं। किरायेदारों और पीजी में रहने वालों का भी सघन सत्यापन अभियान चलाया जाए।

एशियन बॉक्सिंग चैंपियनशिपः प्रिया की शानदार जीत, जादुमणि ने टॉप सीड जापानी को कड़ी टक्कर दी

उलानबटार । एशियन बॉक्सिंग चैंपियनशिप के दूसरे दिन भारत की प्रिया ने 5:0 से शानदार जीत दर्ज की, जबकि जादुमणि सिंह ने टॉप सीड बॉक्सर को मुकाबले के आखिर तक कड़ी टक्कर दी। महिलाओं की 60 किलोग्राम कैटेगरी में, प्रिया ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए कजाकिस्तान की रिम्मा वोलोसेंको को 5-0 के सर्वसम्मत फैसले से हराया। पूरे मुकाबले के दौरान उन्होंने गजब का नियंत्रण और संयम दिखाया, जिसके दम पर वह अगले दौर में पहुंच गईं।

अगले मुकाबले में उनका सामना चीन की चेंग्यू यांग से होगा, जो इस कैटेगरी की दूसरी वरीयता प्राप्त बॉक्सर हैं। यह मुकाबला काफी रोमांचक और उच्च स्तर का होने की उम्मीद है।

पुरुषों की 55 किलोग्राम कैटेगरी में, जादुमणि ने जापान के रुई यामागुची के खिलाफ कड़ा मुकाबला लड़ा, लेकिन आखिर में उन्हें 2-3 के स्प्लिट डिसीजन से हार का सामना करना पड़ा। यामागुची इस कैटेगरी के शीर्ष वरीयता प्राप्त बॉक्सर हैं और वह इस टूर्नामेंट में मजबूत दावेदार के तौर पर उतरे थे। उनके नाम अस्ताना इवेंट में रजत पदक और बॉक्सिंग विश्व कप फाइनल में ब्रॉन्ज मेडल जैसी बड़ी उपलब्धियां दर्ज हैं।

इतने अनुभवी और सफल प्रतिद्वंद्वी का सामना करने के बावजूद, जादुमणि ने उन्हें हर पंच का करारा जवाब दिया। उन्होंने मुकाबले को आखिरी पल तक रोमांचक बनाए रखा और यह दिन के सबसे करीबी मुकाबलों में से एक साबित हुआ। शानदार प्रदर्शन और कड़े संघर्षों के मेल के साथ, भारतीय दल टूर्नामेंट के शुरुआती चरणों में अपना अभियान जारी रखे हुए है। एशियाई बॉक्सिंग चैंपियनशिप 2026 में पूरे महाद्वीप से शीर्ष मुक्केबाजी प्रतिभाएं हिस्सा ले रही हैं। इस टूर्नामेंट का हर मुकाबला मेडल राउंड तक पहुंचने की राह तय करने में अहम भूमिका निभाता है। पहले दिन, भारत की प्रीति पंवार और दीपक ने शानदार शुरुआत की थी।

बेंगलुरु कस्टम्स विभाग ने दस करोड़ रुपए से अधिक की ड्रग्स की जब्त, आरोपी गिरफ्तार

बेंगलुरु । बेंगलुरु कस्टम्स विभाग ने ड्रग्स की बड़ी खेप बरामद की है। बरामद की गई ड्रग्स की कीमत दस करोड़ रुपए से भी अधिक बताई जा रही है। विभाग द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, महज दो दिन के भीतर बड़ी ड्रग्स की खेप एयरपोर्ट पर बरामद हुई है।

केम्पेगौडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर लगातार तीन दिनों में बड़ी कार्रवाई करते हुए ड्रग्स तस्करी के कई प्रयासों को नाकाम किया गया है। 28 से 30 मार्च 2026 के बीच कुल 30 किलो से अधिक हाइड्रोपोनिक गांजा जब्त किया गया और कई आरोपियों को गिरफ्तार किया गया।

अधिकारियों के अनुसार, 30 मार्च को सबसे बड़ी कार्रवाई में बैंकॉक से आए पांच यात्रियों को रोका गया। उनके चेक-इन बैगेज से 17.45 किलोग्राम हाइड्रोपोनिक गांजा बरामद हुआ, जिसकी कीमत करीब 6.10 करोड़ रुपए आंकी गई है। सभी आरोपियों को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया।

इससे एक दिन पहले, 29 मार्च को एक यात्री से 11.5 किलोग्राम गांजा बरामद किया गया, जिसकी कीमत लगभग 4.02 करोड़ रुपए बताई गई। वहीं, 28 मार्च को दो यात्रियों को पकड़कर उनके पास से 1.18 किलोग्राम गांजा जब्त किया गया, जिसकी कीमत करीब 41.3 लाख रुपए थी। कस्टम अधिकारियों ने बताया कि सभी मामलों में तस्कर बैंकॉक से भारत आ रहे थे और ड्रग्स को चेक-इन सामान में छिपाकर लाने की कोशिश कर रहे थे। सतर्क जांच के दौरान इन प्रयासों को विफल कर दिया गया।

सभी आरोपियों को एनडीपीएस एक्ट 1985 के तहत गिरफ्तार किया गया है और आगे की जांच जारी है। लगातार सामने आ रहे इन मामलों से यह संकेत मिलता है कि अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के जरिए ड्रग्स तस्करी की कोशिशें बढ़ रही हैं, जिस पर सुरक्षा एजेंसियां कड़ी नजर बनाए हुए हैं। इससे पहले इसी महीने की शुरुआत में बेंगलुरु सिटी क्राइम ब्रांच की एंटी-नारकोटिक्स विंग ने बड़ी कार्रवाई करते हुए अंतरराज्यीय ड्रग तस्करी रैकेट का पर्दाफाश किया था। पुलिस ने एक महिला समेत दो ड्रग पेडलर्स को गिरफ्तार कर करीब 10 करोड़ रुपए के नशीले पदार्थ जब्त किए थे। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान अश्विन और मुबीना के रूप में हुई है, जो बेंगलुरु के बागलुरु इलाके में स्थित प्रेस्टीज पैनसबरी हाइट्स अपार्टमेंट में रहते थे। मुबीना मूल रूप से केरल की रहने वाली है। पुलिस ने आरोपियों के पास से भारी मात्रा में ड्रग्स बरामद किए, जिनमें 8,335 एलएसडी स्ट्रिप्स (124 किलोग्राम), 5 किलोग्राम हाइड्रो गांजा और 534 किलोग्राम चरस शामिल हैं।ह्व

1 अप्रैल को जन्मे दो दिग्गज भारतीय, खेल जगत में किया नाम रोशन

नई दिल्ली। भारतीय खेल जगत के लिए '1 अप्रैल' का दिन बेहद खास है। इसी दिन 2 ऐसी हस्तियों का जन्म हुआ, जिन्होंने देश का नाम रोशन किया। आइए, इनके बारे में जानते हैं।

फौजा सिंह: 1 अप्रैल 1911 को पंजाब के जालंधर में एक बच्चे का जन्म हुआ। किसान परिवार में यह बालक चार बच्चों में सबसे छोटा था, जिसका नाम रखा गया फौजा सिंह। पांच साल की उम्र तक फौजा चलने में सक्षम नहीं थे, पैर बेहद कमजोर थे, लेकिन उन्होंने परिस्थितियों का डटकर सामना किया। परिवार को समर्थन देने के लिए फौजा सिंह ने खेती शुरू की। साल 1992 में फौजा सिंह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद बेटे के साथ लंदन में बस गए। साल 1994 में जब उनके पांचवें बेटे कुलदीप की मृत्यु हुई, तो इस दुख को दूर करने के लिए उन्होंने टहलना शुरू किया और धीरे-धीरे यह चहलकदमी दौड़ में बदल गई।

साल 2000 तक फौजा सिंह ने दौड़ को गंभीरता से नहीं लिया था। 89 साल की उम्र में उन्होंने 6 घंटे 54 मिनट में फुल मैराथन को पूरा किया। साल 2003 में टोरंटो वाटरफ्रंट मैराथन में '90 से अधिक' श्रेणी में पांच घंटे 40 मिनट में दौड़ पूरी की। 'टरबैन्ड टोर्नेडो' के नाम से मशहूर फौजा सिंह ने साल 2011 में 100 वर्ष की उम्र में कनाडा के टोरंटो के बिर्चमाउंट स्टेडियम में विशेष ओंटारियो मास्टर्स एसोसिएशन आमंत्रण मीट में एक ही दिन में आठ विश्व आयु समूह रिकॉर्ड बनाए। फौजा सिंह ने 100 मीटर दौड़ 23.14, 200 मीटर दौड़ 52.23, जबकि 400 मीटर दौड़ 2:13.48 में पूरी की। इसके अलावा, 800 मीटर दौड़ 5:32.18 और 1500 मीटर दौड़ 11:27.81 में पूरी की।

मूर्ख दिवसः हमारा मजाक न बने किसी की पीड़ा का कारण

तनाव भरे दौर में मुस्कान का पर्व है मूर्ख दिवस

योगेश कुमार गोयल

विश्वभर में 1 अप्रैल को मनाया जाने वाला 'मूर्ख दिवस' केवल एक साधारण दिन नहीं बल्कि हंसी, उल्लास और हल्के-फुल्के मजाक का ऐसा अवसर है, जो लोगों को रोजमर्रा की तनावपूर्ण जिंदगी से कुछ पल के लिए राहत प्रदान करता है। इस दिन छोटे-बड़े, बच्चे-बुजुर्ग, सभी एक-दूसरे के साथ मजाक करते हैं और बिना किसी दुर्भावना के हंसी-ठिठोली के माध्यम से माहौल को खुशनुमा बना देते हैं। इस दिवस की सबसे खास बात यह है कि इसमें किए जाने वाले मजाक आमतौर पर हानिरहित होते हैं। लोग ऐसी कल्पनात्मक या मनगढ़ंत बातें प्रस्तुत करते हैं, जिन पर सामने वाला आसानी से विश्वास कर ले और बाद में जब सच्चाई सामने आए तो दोनों पक्ष हंसी में डूब जाएं। कई बार तो बड़े-बड़े बुद्धिमान और चतुर लोग भी इस दिन मजाक का शिकार बन जाते हैं, जिससे वातावरण और भी मनोरंजक हो उठता है।

यह परंपरा केवल आम लोगों तक सीमित नहीं रही है बल्कि बड़े मीडिया संस्थान, प्रतिष्ठित कंपनियां और नामी ब्रांड भी इस दिन अनोखे और रचनात्मक 'प्रैंक्स' के जरिए लोगों का मनोरंजन करते हैं। इतिहास में कई रोचक उदाहरण मिलते हैं। 1957 में बीबीसी ने 'स्पेगेटी ट्री' की खबर प्रसारित की, जिसमें बताया गया कि स्विट्जरलैंड में पेड़ों पर स्पेगेटी उगती है। हजारों लोगों ने इस पर विश्वास कर लिया। इसी तरह 1996 में बर्गर किंग ने 'लेफ्ट-हैंड व्हॉपर' बर्गर की घोषणा कर लोगों को चौंका दिया। डिजिटल युग में यह परंपरा और भी व्यापक हो गई है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के जरिए ऐसे मजाक कुछ ही मिनटों में लाखों लोगों तक पहुंच जाते हैं। हालांकि, कभी-कभी लोग सच्ची खबरों को भी 'अप्रैल फूल' समझकर नजरअंदाज कर देते हैं और बाद में पछताते हैं।

मूर्ख दिवस की उत्पत्ति को लेकर विभिन्न मत हैं। एक प्रचलित धारणा के अनुसार, प्राचीन समय में कई देशों में नया वर्ष 1 अप्रैल से शुरू होता था। जब कैलेंडर प्रणाली में बदलाव हुआ और नए साल की शुरुआत 1 जनवरी से होने लगी, तब भी कुछ लोग पुरानी परंपरा का पालन करते रहे। ऐसे लोगों का मजाक उड़ाने के लिए 1 अप्रैल को 'मूर्ख दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा। धीरे-धीरे यह परंपरा मनोरंजन का माध्यम बन गई। भारतीय संस्कृति में भले ही यह परंपरा पश्चिम से आई हो लेकिन इसके मूल में निहित भावना (हंसी, आनंद और आपसी मेलजोल) भारतीय जीवन मूल्यों से भी मेल खाती है। आज की भागदौड़ और तनावपूर्ण जीवनशैली में जहां लोगों के पास हंसने का समय भी कम हो गया है, वहां यह दिन एक सुखद अवसर प्रदान करता है।

हालांकि, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मजाक की सीमा शालीनता और संवेदनशीलता के भीतर ही होनी चाहिए। किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने, अपमान करने या नुकसान पहुंचाने वाला मजाक इस दिवस की भावना के विपरीत है। मूर्ख दिवस का उद्देश्य किसी को नीचा दिखाना नहीं बल्कि सबको साथ लेकर हंसना और खुशियां बांटना है। वास्तव में, शुद्ध हास्य न केवल मानसिक तनाव को कम करता है बल्कि आपसी संबंधों को भी मजबूत बनाता है। यह मन में सकारात्मकता और भाईचारे की भावना का संचार करता है। ऐसे में मूर्ख दिवस आज के समय में और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। अंततः कहा जा सकता है कि मूर्ख दिवस केवल मजाक का दिन नहीं बल्कि जीवन में खुशियों के छोटे-छोटे पल तलाशने और उन्हें साझा करने का उत्सव है। यदि इसे शालीनता और सद्भाव के साथ मनाया जाए तो यह दिन सचमुच हंसी के अनमोल पलों से जीवन को सराबोर कर सकता है।

सिंध में माछी समुदाय पर पाकिस्तानी पुलिस की बर्बरता से भारी आक्रोश

इस्लामाबाद । पाकिस्तानी पुलिसकर्मियों की ज्यादती से देश में चिंता व्याप्त हो गई है। हाल ही पुलिस सिंध प्रांत में गरीब माछी समुदाय को मारती पीटती दिखी। सोशल मीडिया पर इसका फुटेज अपलोड होते ही बड़ी संख्या लोग नाराज हो गए।

मंगलवार को आई एक रिपोर्ट के अनुसार, फुटेज में दिखाया गया है कि सिंध के उमरकोट इलाके में गरीब माछी समुदाय की झुग्गियों पर पुरुष और महिला पुलिस अधिकारियों ने धावा बोल दिया। वे 'बेकसूर, बेसहारा, रोजादार महिलाओं और छोटी बच्चियों को घसीट रहे थे, उनके कपड़े फाड़ रहे थे, और उन्हें पुलिस वैन में ठूंस रहे थे। पाकिस्तानी दैनिक 'बिजनेस रिकॉर्डर' की एक रिपोर्ट में विस्तार से बताया गया है, 'ये तस्वीरें रूह कंपा देने वाली हैं। एक पल के लिए, कोई यह मान सकता है कि हत्या या आतंकवाद में शामिल खूंखार अपराधियों को पकड़ने के लिए कोई बड़ा ऑपरेशन चल रहा था। लेकिन नहीं, ये तो आम महिलाएं, छोटी बच्चियां और बच्चे थे। उनके परिवारों के पुरुष सदस्य या तो पहले से ही हिरासत में थे या फिर अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए बाहर गए हुए थे।

इसमें आगे कहा गया है कि यह ऑपरेशन एक निचली अदालत के आदेश पर किया गया। इसमें 10,000 वर्ग फुट के एक प्लॉट को खाली कराने को कहा गया था; इस प्लॉट पर माछी समुदाय लंबे समय से रह रहा था। हालांकि, रिपोर्ट में कहा गया है कि जिस तरीके से पुलिस ने—जिसका काम लोगों की जान, इज्जत और संपत्ति की हिफाजत करना है—इस आदेश को लागू किया, वह बेहद चिंताजनक था। इसमें कहा गया है, 'भले ही बेदखली जरूरी थी, लेकिन क्या इतनी जबरदस्ती करना जरूरी था—खासकर रमजान के पवित्र महीने में? क्या हिंसा का सहारा लेने से पहले शांतिपूर्ण तरीके से बातचीत, समझाना-बुझाना और कानूनी संयम जैसे सभी तरीके आजमा लिए गए थे? इसका जवाब, जो वायरल वीडियो में साफ-साफ दिखाई दे रहा है, वो 'नहीं' लगता है।

इसमें आगे सवाल उठाया गया है, 'निचली अदालत का फैसला न तो अंतिम था और न ही उसे चुनौती दी जा सकती थी। इसके खिलाफ जिला और सत्र न्यायालय में, फिर उच्च न्यायालय में, और आखिर में सर्वोच्च न्यायालय में अपील की जा सकती थी। यह कानूनी प्रक्रिया सबको अच्छी तरह पता है। फिर जब कानूनी विकल्प मौजूद थे, तो इतनी अजीब जल्दबाजी और आक्रामकता क्यों दिखाई गई? इतनी तेजी सिर्फ तभी क्यों दिखाई गई, जब वहां रहने वाले लोग गरीब और कमजोर थे? रिपोर्ट के अनुसार, सिंध पुलिस ने रसूखदार लोगों और राजनीतिक रूप से प्रभावशाली व्यक्तियों का पक्ष लेने के लिए बदनामी कमाई है।

झारखंड में बड़ी कार्रवाई, रांची-पलामू में 700 किलो से अधिक डोडा जब्त; तीन तस्कर गिरफ्तार

रांची । झारखंड पुलिस ने नशीले पदार्थों के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत बड़ी सफलता हासिल की है। राजधानी रांची और पलामू जिले में की गई छापेमारी के दौरान कुल 716 किलोग्राम अवैध डोडा (अफीम बनाने का कच्चा माल) बरामद किया गया है।

इन कार्रवाइयों में पुलिस ने तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है और लाखों रुपये की नकदी सहित तस्करी में प्रयुक्त लग्जरी वाहन भी जब्त किया है। पलामू की पुलिस अधीक्षक रिष्मा रमेशन को मिली गुप्त सूचना के आधार पर डीएसपी राजीव रंजन के नेतृत्व में गठित विशेष टीम ने मनातू थाना क्षेत्र में घेराबंदी की। सोमवार-मंगलवार की देर रात करीब 12.30 बजे मनातू थाना गेट के पास वाहन चेकिंग के दौरान एक संदिग्ध ग्रे रंग की महिंद्रा एक्सयूवी-500 को रोका गया। वाहन की तलाशी लेने पर उसके भीतर से 216 किलोग्राम अवैध डोडा बरामद हुआ।

पुलिस ने मौके से उत्तर प्रदेश के बरेली निवासी संजीव शर्मा और गढ़वा के कांडी निवासी निजामुद्दीन राईन को गिरफ्तार किया है। बरामद डोडा की बाजार में कीमत लगभग 35 लाख रुपये आंकी गई है। पूछताछ में आरोपियों ने स्वीकार किया कि वे चतरा के लावालौंग और प्रतापपुर जैसे इलाकों से डोडा खरीदकर ऊंचे दामों पर उत्तर प्रदेश ले जा रहे थे। वहीं, दूसरी ओर रांची पुलिस ने मंगलवार को नामकुम इलाके में एक घर पर छापेमारी कर डोडा की एक बड़ी खेप बरामद की है। पुलिस को सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति ने अपने घर में भारी मात्रा में नशीला पदार्थ छुपा कर रखा है। सत्यापन के बाद की गई इस कार्रवाई में करीब 500 किलोग्राम डोडा और दो लाख रुपये से अधिक की नगद राशि बरामद की गई।

पुलिस ने इस मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है, जिससे फिलहाल गुप्त स्थान पर पूछताछ की जा रही है। इन दोनों ही मामलों में पुलिस अब डोडा की सप्लाई चेन और अंतरराज्यीय नेटवर्क को खंगालने में जुटी है। रांची पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है।

संपादकीय

क्या वाकई इंटरनेट को युद्ध से खतरा है ?

महेन्द्र तिवारी

आज के डिजिटल युग में जब हम अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन पर एक स्पर्श करते हैं और दुनिया के किसी भी कोने की जानकारी क्षण भर में हमारे सामने आ जाती है, तो हमारे मन में यह धारणा प्रबल होने लगती है कि इंटरनेट एक अदृश्य और वायरलेस शक्ति है जो हवा या बादलों के माध्यम से तैर रही है। 'क्लाउड' शब्द के बढ़ते प्रयोग ने इस भ्रम को और गहरा कर दिया है, जिससे हमें लगता है कि हमारा डेटा कहीं अंतरिक्ष में सुरक्षित तरीके से तैर रहा है। लेकिन जब भू-राजनीतिक तनाव बढ़ते हैं और युद्ध की बातें सामने आती हैं, तो एक सवाल बार-बार उठता है कि क्या वाकई इस अदृश्य और व्यापक नेटवर्क को युद्ध से खतरा है? इसका सीधा और स्पष्ट उत्तर है- हाँ, इंटरनेट को युद्ध से सबसे अधिक और संगीन खतरा है, और यह खतरा किसी काल्पनिक साइबर फिल्म से कहीं अधिक वास्तविक और भयावह है। वास्तविकता इस आभासी धारणा के बिल्कुल विपरीत और आश्चर्यजनक रूप से भौतिक है। हमारी संपूर्ण वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था, संचार तंत्र और यहां तक कि हमारी सामाजिक और सैन्य सुरक्षा भी समुद्र की अगाध गहराइयों में बिछे उन फाइबर ऑप्टिक केबल्स के एक जटिल जाल पर टिकी है, जिन्हें 'अंडर-सी केबल्स' कहा जाता है। दुनिया भर में फैले लगभग पांच सौ से अधिक ऐसे केबल्स का नेटवर्क ही वह अदृश्य जीवन रेखा है जो महाद्वीपों को एक दूसरे से जोड़ती है और वैश्विक इंटरनेट डेटा ट्रैफिक के नब्बे प्रतिशत से अधिक हिस्से का वहन करती है। आम धारणा के विपरीत, उपग्रह वैश्विक डेटा का केवल एक से तीन प्रतिशत हिस्सा ही संभाल पाते हैं, क्योंकि वे धीमी गति और अधिक लेटेंसी के साथ काम करते हैं। फाइबर ऑप्टिक केबल्स प्रकाश की गति से डेटा स्थानांतरित करती हैं, जो उन्हें आधुनिक सभ्यता के लिए अपरिहार्य बनाती हैं। लेकिन यही तकनीकी उपलब्धि आज एक बहुत बड़ी रणनीतिक चुनौती और कमजोरी बनकर उभरी है। इन केबल्स की महत्ता और उनके द्वारा नियंत्रित होने वाले डेटा की मात्रा का विश्लेषण करें, तो हम पाएंगे कि आधुनिक सभ्यता का कोई भी कोना इनसे अछूता नहीं है। बैंकों के लेन-देन से लेकर शेयर बाजार की हलचल तक, और रक्षा प्रणालियों के गुप्त संचार से लेकर आम नागरिकों के वीडियो कॉल तक, सब कुछ इन्हीं गहरे समुद्री मार्गों से होकर गुजरता है। एशिया, यूरोप और अमेरिका जैसे बड़े महाद्वीपों के बीच होने वाला व्यापार और कूटनीतिक विनिमय पूरी तरह से इन केबल्स की अखंडता पर निर्भर है। जब कोई युद्ध छिड़ता है, तो सबसे पहले शत्रु देश की अर्थव्यवस्था और संचार तंत्र को चकनाचूर करने की कोशिश की जाती है। इसी निर्भरता ने एक ऐसा 'एकल बिंदु विफलता' उत्पन्न कर दिया है, जिसे नष्ट करना किसी भी शत्रु देश के लिए पूरी दुनिया को घुटनों पर लाने का सबसे आसान और सस्ता तरीका हो सकता है। वर्तमान में जिस तरह से वैश्विक तनाव बढ़ रहा है, उसने इन केबल्स की सुरक्षा पर एक बड़ा प्रश्नचिह्न लगा दिया है। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले समय में युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं, बल्कि समुद्र के तल पर भी लड़े जाएंगे। इन केबल्स को नुकसान पहुंचाना आज किसी भी आधुनिक सेना के लिए 'हाइब्रिड वॉरफेयर' का एक प्रमुख हिस्सा बन चुका है। कल्पना कीजिए कि यदि किसी संघर्ष के दौरान इन केबल्स को सुनियोजित तरीके से समुद्री बम या माइन ब्लास्ट के जरिए उड़ा दिया जाए या विशेष पनडुब्बियों के माध्यम से काट दिया जाए, तो परिणाम कितने विनाशकारी होंगे। इंटरनेट के बंद होने का मतलब केवल सोशल मीडिया का रुकना नहीं है, बल्कि इसका सीधा अर्थ है कि वैश्विक बैंकिंग प्रणाली ठप हो जाएगी, जिससे खरबों डॉलर का नुकसान मिनटों में हो सकता है। एटीएम काम करना बंद कर देंगे, क्रेडिट कार्ड ट्रांजैक्शन रुक जाएंगे और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए किए जाने वाले संचार के सभी माध्यम मृत हो जाएंगे। इससे भी भयावह यह है कि किसी देश की सैन्य और सुरक्षा एजेंसियां, जो गुप्त सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए इन सुरक्षित नेटवर्कों का उपयोग करती हैं, वे एक पल में अंधी और बहरी हो सकती हैं। यह स्थिति न केवल आर्थिक अराजकता पैदा करेगी, बल्कि किसी भी राष्ट्र की संप्रभुता को गंभीर खतरे में डाल देगी। इस खतरे की गंभीरता को समझने के लिए हमें इतिहास और हालिया घटनाओं की ओर देखना होगा। वर्ष 2024 में लाल सागर में हुई घटना ने पूरी दुनिया को झकझोर कर रख दिया था। वहां समुद्र के नीचे बिछी चार प्रमुख केबल्स को नुकसान पहुंचा, जिसका सीधा असर वैश्विक इंटरनेट कनेक्टिविटी और स्पीड पर पड़ा। उस समय इंटरनेट सेवाओं को पूरी तरह सामान्य करने में लगभग अस्सी दिन का समय लगा। यह घटना इस बात का जीवंत प्रमाण है कि समुद्र के नीचे स्थित ये ढांचे कितने असुरक्षित हैं। भले ही ये केबल्स स्टील की परतों और प्लास्टिक के आवरण से सुरक्षित की जाती हैं, लेकिन समुद्र की विशालता और वहां तक पहुंचने की मानवीय सीमाओं के कारण इनकी निगरानी करना लगभग असंभव है। केवल मानवीय हमले ही नहीं, बल्कि प्राकृतिक आपदाएं जैसे समुद्री भूकंप, सुनामी या जहाज के लंगर के टकराने से भी ये केबल्स अक्सर क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। लेकिन जब कोई क्षति युद्ध के दौरान जानबूझकर, किसी रणनीतिक लाभ के लिए पहुंचाई जाती है, तो वह पूरे विश्व के लिए एक सुरक्षा संकट बन जाती है। अंडर-सी केबल्स की मरम्मत करना अपने आप में एक अत्यंत कठिन, खर्चीला और समय लेने वाला कार्य है। ये केबल्स समुद्र के तल में हजारों मीटर की गहराई पर स्थित होती हैं।

देश से हुआ नक्सलवाद का खात्मा अब होगा विकास का नया सूर्योदय !

गिरीश पंकज

छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के कुछ क्षेत्रों में फैला हुआ नक्सलवाद का हिंसक अंधेरा अब खत्म हो गया है। एक नया सूरज उग रहा है। विकास का.उसकी लालिमा अब धीरे-धीरे दिखाई पड़ने लगी है। कह सकते हैं कि विचारधारा का कोहरा छंट चुका है। हिंसक विचारधारा निरंतर आत्म समर्पण कर रही है। सुख-शांति के दिन बहाल होने वाले हैं। बस्तर और गढ़चिरोली क्षेत्र में जिस तेजी के साथ माओवादी आत्मसमर्पण कर रहे थे , उसे देखकर लगता था कि वह दिन दूर नहीं, जब पूरा बस्तर और महाराष्ट्र के कुछ हिस्से नक्सल समस्या से मुक्त हो जाएँगे। तेलंगाना में भी यही स्थिति बन रही थी । टुकड़े-टुकड़े में यहां माओवादी आत्मसमर्पण करते रहे। 17 अक्टूबर, 2025 की तारीख इतिहास में विशेष रूप से दर्ज की जाएगी कि इस दिन 206 नक्सलियों ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के सम्मुख आत्मसमर्पण किया। इसके ठीक एक दिन पहले 27 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया था।

सुकमा कांकेर में 77 माओवादियों ने आत्म समर्पण किया। इनमें 10 महिलाएं भी शामिल थीं।

महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस के सम्मुख 6 करोड़ के इनामी नक्सली कमांडर मल्लोजुला वेणुगोपाल राव उर्फ़ सोनू उर्फ़ भूपति ने अपने 61 साथियों के साथ आत्मसमर्पण करके सब कुछ चौंका दिया। भूपति का इतिहास जानकर मुझे काफी आश्चर्य हुआ कि उसके पिता और दादा आजादी की लड़ाई में सक्रिय रहते थे।भूपति बचपन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भी जुड़ गया था। बाद में वह सेना में भर्ती होकर देशसेवा भी करना चाहता था। लेकिन अपने बड़े भाई मल्लोजुला कोटेश्वर राव (उर्फ़ किशनजी) से प्रभावित होकर माओवादी आंदोलन से जुड़ गया। एक दिन किशन जी मुठभेड़ में मारा गया। एक अंतराल के बाद में भूपति को अपनी वैचारिक गलती का एहसास हुआ और उसने अपना रास्ता बदल दिया। आत्मसमर्पण के वक्त हरे रंग की वर्दी में भूपति मंच पर चढ़ा तो उसके चेहरे की मुस्कान बता रही थी कि उसमें कोई विवशता नहीं, एक वैचारिक प्रतिबद्धता है कि अब बहुत हो चुका। अब घर वापसी करनी चाहिए। बहुत भटक लिए जंगलों में। हाथ कुछ नहीं आया सिवा बर्बादी के। भूपति की पत्नी और भाभी ने कुछ माह पहले आत्मसमर्पण कर दिया था। भूपति के साथ आत्मसमर्पण करने वालों में ज्यादातर युवा ही थे। कुछ युवतियाँ भी नज़र आईं। सभी ने अपने भारी भरकम हथियारों जैसे एके -47 और इंसास राइफलों के साथ आत्मसमर्पण किया। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री नक्सलियों के आतंक समर्पण को देखकर बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि चाहे महाराष्ट्र हो छत्तीसगढ़ हो या तेलंगाना, नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई में सभी एकजुट हैं,और उम्मीद की जाती है कि आने वाले समय में नक्सलवाद पूरी तरह से दम तोड़ देगा। आसार नज़र भी आने लगे। दो दिनों में 258 माओवादियों ने आत्मसमर्पण करके हथियार डाले और अपने हाथ में भारतीय संविधान की प्रति ग्रहण की। इस तरह से यह एक बड़ा संदेश था कि वे सब भारत के लोकतंत्र पर विश्वास करते हैं। उस हिसाब से तो अब लग रहा था कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने जो विश्वास व्यक्त किया, वह विश्वास समय से पहले ही फलीभूत हो गया है। उन्होंने कहा था कि मार्च 2026 तक नक्सलवाद का खत्म हो जाएगा, और केंद्रीय गृह मंत्री ने लोकसभा में 30 मार्च 2026 को अधिकृत रूप से घोषणा कर दी कि यह देश माओवाद से मुक्त हो गया है. 29 मार्च को ही आंध्र प्रदेश में कुख्यात माओवादी सुरेश ने अपने नौ साथियों के साथ आत्मसमर्पण किया. वह पिछले 36 वर्षों से भूमिगत था.माहौल को देखकर अब लग तो रहा है कि समय से पहले ही नक्सलवाद विदा ले चुका है. भविष्य में अगर भूले-भटके कहीं कोई घटना होती है तो यही माना जाएगा कि तमाम चूहे मारे जा चुके हैं.लेकिन अभी भी इक्का दुक्का किसी बिल में छुपे हुए हैं। वे भी मारे ही जाएँगे. वैसे अब लगता तो है कि अब एक ऐसी विचारधारा पर विराम लग जाएगा, जिसने क्रांति का मतलब हिंसा समझ लिया था। यह अच्छी बात है कि धीरे-धीरे ही सही, अनेक नक्सलियों को यह बात अब समझ में आ गई कि हिंसा से कोई लंबी लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। उल्टे अंतत: यह आत्मघाती कदम ही साबित होता है। न जाने कितने माओवादी मुठभेड़ में मार गिराए गए। लेकिन अब माओवादियों ने आत्म मंथन करना शुरू कर दिया है। इसी का सुपरिणाम है कि सैकड़ो माओवादी मुख्यधारा में शामिल हो रहे हैं। छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार के दोबारा सत्ता में आने के बाद पिछले एक वर्ष में 2100 नक्सलियों ने आत्म सर्पण किया. और लगभग 1900 नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया, 317 मारे गए.आए दिन नक्सली हथियार डालते रहे । उत्तर बस्तर के अबूझमाड़ के जंगल लगभग नक्सली मुक्त हो चुके हैं. आंकड़े बताते हैं कि पिछले 10 वर्षों में 10000 से अधिक नक्सलियों ने हथियार डाले। यह अपने आप में एक तरह की वैचारिक क्रांति है। एक हिंसक विचारधारा

अहिंसक विचारधारा से प्रभावित होकर इतिहास रच रही है। और इस इतिहास का न केवल छत्तीसगढ़ वरन पूरा देश स्वागत कर रहा है। अनेक नक्सलियों को यह बात अब समझ में आ गई है कि जिस हिंसक विचारधारा को लेकर वे लड़ाई लड़ने निकले थे, उसका कोई परिणाम सामने नहीं आ रहा है। बदले में मिल रही है केवल मौत। सरकार की दृढ इच्छाशक्ति के आगे नक्सलियों का तथाकथित वैचारिक युद्ध अब दम तोड़ रहा है इसलिए बेहतर है कि मुख्यधारा में शामिल होकर शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के साथ जीवनयापन किया जाए। यही कारण है कि आत्म समर्पित माओवादियों ने सरकार को अपनी बंदूकें सौंप कर हाथों में भारतीय संविधान की प्रति थाम ली। कहा जा रहा है कि अब नक्सलियों का नेतृत्व करने वाले इक्का दुक्का कमांडर ही बचे हैं। उम्मीद है वे भी या तो आत्मसमर्पण कर देंगे या एक दिन मुठभेड़ में मारे जाएंगे। अंतत: आतंकवादियों के कमांडर भूपति ने भी आत्मसमर्पण कर दिया।

इन पंक्तियों के लेखक को बारह साल पहले लिखा गया अपना उपन्यास 'टाउन हॉल में नक्सली' याद आ रहा है, जिसका नया संस्करण दो साल पहले 'लाल सलाम /घर वापसी' के नाम में आया। इस उपन्यास में मैंने नक्सलियों के द्वारा पूरी तरह से आत्मसमर्पण की कल्पना की थी। वह कल्पना अब यथार्थ में धीरे-धीरे ही सही साकार हो रही है। राज्य सरकार की नक्सली आत्मसमर्पण नीति 2025 काफी कारगर साबित हुई, जिसके तहत आत्म समर्पण करने वाले नक्सलियों को सरकार जमीन और आवास की व्यवस्था करेगी और उनको कुछ धनराशि भी देगी। लोनवर्राटू (घर वापसी) जैसा अभियान काफी सफल रहा। इस उपन्यास पर शोध कार्य भी किया जा चुका है।

पत्रकारों की वह अभूतपूर्व अबूझमाड़ यात्रा...

एक दशक पहले जब माओवादी हिंसा अपने चरम पर थी और उसकी चपेट में पत्रकार और आम जन भी आ रहे थे, तब कुछ पत्रकारों ने संकल्प किया कि अबूझमाड़ के घने जंगलों की पदयात्रा करके नक्सलियों से मुलाकात की जाए और उनसे मुख्यधारा में लौटने का अनुरोध किया जाए।

पत्रकार और एक्टिविस्ट कमल शुक्ला ने सोशल मीडिया के माध्यम से एक अपील की कि पत्रकारों को नक्सलियों से मिलने के लिए अबूझमाड़ की यात्रा करनी चाहिए। इस हेतु कौन कौन पत्रकार साथी आगे आना चाहते हैं।और कुछ पत्रकार साथी पदयात्रा के लिए राजी हो गए। मेरे ही अनुरोध पर यह तय किया गया कि 26 जनवरी, 2014 से 31 जनवरी तक पदयात्रा की जाएगी और माओवादी बंधुओ से मुलाकात की जाएगी। 26 जनवरी गणतंत्र दिवस का दिन होता है और 31 जनवरी महात्मा गांधी की शहादत का दिन। लगभग 16 पत्रकार नारायणपुर से अपनी यात्रा शुरू करते हैं और अबूझमाड़ के घने जंगलों में 5 दिन की कठिन पदयात्रा पूरी करके दंतेवाड़ा वापस लौटते हैं। यह अलग बात है कि नक्सलियों ने पत्रकारों से मिलना उचित नहीं समझा। बीच-बीच में संदेश जरूर मिलता था कि आगे कहीं नक्सली पत्रकारों से मिलेंगे लेकिन वह अंतत: मिले नहीं लेकिन एक अभूतपूर्व पदयात्रा पूर्ण हुई। नक्सलियों के बीच एक सार्थक संदेश भी गया कि पत्रकार साहस के साथ नक्सलियों के गढ़ में जाकर उनसे बात करने के लिए पहुंचे इतनी हिम्मत भी बहुत कम पत्रकार कर पाते हैं। इस पदयात्रा में हिंसा का खतरा भी था लेकिन यह अच्छी बात रही कि ऐसी नौबत नहीं आई.

बहरहाल, माओवाद से मुक्त होकर अब पूरा देश विकास के रास्ते पर आगे बढ़ेगा. बस्तर जैसे पिछड़े क्षेत्र अब में बड़े-बड़े उद्योगपति आकर अपने संयंत्र लगाएँगे,तो बस्तर के लोगों को रोजगार मिलेगा. छत्तीसगढ़ प्रगति करेगा. बस्तर के आदिवासी प्रगति करेंगे. अन्य राज्यों में भी जहां छुटपुट नक्सलवाद फैला था, वहाँ भी विकास की नई पटकथाएं लिखी जाएँगी. हो सकता है अडानी-अंबानी जैसे लोग अपने कारखाने लगाएँ. तब शायद विपक्ष को यह कहने का भी मौका मिल जाएगा कि सरकार ने बस्तर को माओवाद से मुक्त इसीलिए किया कि यहां बड़े-बड़े उद्योगपति आकर अपना कारोबार कर सकें. कोई भी उद्योगपति सामने आए, विकास होना चाहिए और महत्वपूर्ण बात यह है कि स्थानीय लोगों को रोजगार मिलना चाहिए।

मोदी की विदेश यात्राओं पर सवाल उठाने और कूटनीति को विफल बताने वालों को यह रिपोर्ट देखनी चाहिए

नीरज कुमार दुबे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश यात्राओं पर सवाल उठाने वाले और मोदी की विदेश नीति को विफल बताने वाले विपक्षी नेताओं को यह देखना चाहिए कि जब भारत के सामने ऊर्जा संकट मंडराया तो दुनिया के वही देश मदद के लिए खड़े हो गए जिनके साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्षों तक भरोसे का रिश्ता बनाया था। खासकर अफ्रीकी देशों से बढ़ते आयात ने यह साबित कर दिया है कि भारत ने समय रहते अपने ऊर्जा स्रोतों को विविध बनाया था। आज वही रिश्ते और रणनीतिक फैसले भारत की ढाल बनकर खड़े हैं और यही असली कूटनीति की ताकत है।

देखा जाये तो पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष ने पूरी दुनिया की ऊर्जा आपूर्ति को झकझोर दिया है। होर्मुज जलडमरूमध्य, जहां से भारत पहले अपनी कच्चे तेल की आपूर्ति का लगभग चालीस से पैंतालीस प्रतिशत हिस्सा प्राप्त करता है उस पर दबाव बढ़ने से कई तरह की अटकलें लगाई गईं। लेकिन भारत न तो घबराया और न ही संकट में फंसा। इसका कारण है मोदी सरकार की दूरदर्शी ऊर्जा नीति और समय रहते उठाए गए रणनीतिक कदम।

आज स्थिति यह है कि भारत में कच्चे तेल, एलपीजी और एलएनजी की उपलब्धता एक महीने

पहले की तुलना में काफी बेहतर हो चुकी है। सरकार ने स्पष्ट किया है कि देश में किसी प्रकार की ऊर्जा की कमी नहीं है और पेट्रोल, डीजल तथा रसोई गैस की आपूर्ति पूरी तरह सुचारु बनी हुई है। यह कोई संयोग नहीं बल्कि सुनियोजित रणनीति का परिणाम है।

देखा जाये तो सबसे बड़ा बदलाव आया है ऊर्जा स्रोतों के विविधीकरण में। एक दशक पहले तक भारत केवल 27 देशों से कच्चा तेल लेता था, लेकिन आज यह संख्या बढ़कर 41 हो चुकी है। इसका सीधा मतलब है कि भारत अब किसी एक क्षेत्र पर निर्भर नहीं है। अमेरिका, रूस, कनाडा, नार्वे से लेकर अफ्रीकी देशों जैसे नाइजीरिया, अल्जीरिया और अंगोला तक भारत ने अपने ऊर्जा संबंधों का विस्तार किया है। एलएनजी के लिए कैमरून, इक्वेटोरियल गिनी और मोजाम्बिक जैसे नए साझेदार जुड़े हैं।

यही नहीं, रणनीतिक भंडारण की दिशा में भी भारत ने ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। पिछले 11 वर्षों में 5.3 मिलियन टन का रणनीतिक तेल भंडार तैयार किया गया है और अतिरिक्त क्षमता पर तेजी से काम चल रहा है। इसका मतलब यह है कि वैश्विक संकट के बावजूद भारत के पास आपूर्ति बनाए रखने के लिए पर्याप्त भंडार मौजूद है।

मोदी सरकार ने केवल आपूर्ति बढ़ाने पर ही ध्यान नहीं दिया बल्कि प्रबंधन को भी मजबूत किया। चौबीसों घंटे निगरानी के लिए नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया और एक अंतर मंत्रालयी समूह रोज बैठक कर हालात का आकलन कर रहा है। जमाखोरी रोकने के लिए सख्त निर्देश दिए गए और राज्यों को आवश्यक वस्तुओं की सुचारु आपूर्ति सुनिश्चित करने को कहा गया।

यहां सबसे महत्वपूर्ण पहलू है कूटनीतिक सक्रियता। प्रधानमंत्री मोदी ने सऊदी अरब, यूएई, कतर, ईरान और अमेरिका जैसे देशों के नेताओं से लगातार संपर्क बनाए रखा। इसका सीधा फायदा यह हुआ कि भारतीय जहाजों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित हुई और आपूर्ति बाधित नहीं हुई।

बोध कथा

आपके विचार ही आपका संसार है

विमला चार दिन से बीमार थी। न उसे भूख रही, न प्यास। नींद भी न रही। अच्छी भली थी, सेहत भी ठीक थी, चार दिन में ही सूख गई। रंग भी काला पड़ गया था। कितने वैद्य आए, पर उसकी बीमारी का कारण नहीं ढूंढ पाए। माता पिता भी चिंता में मरे जा रहे थे। बात यह थी कि अगले ही महीने विमला का विवाह होने वाला था। नदी पार के गांव के ही एक लड़के से विवाह तय हुआ था। भय यह था कि यदि ससुराल पक्ष में इसकी बीमारी की सूचना पहुंच गई, तो कहीं वे विवाह से ही इंकार न कर दें। आज सुबह गुरुजी आए। माता-पिता चरणों में पड़ गए और रोने लगे। गुरुजी ने सांत्वना दी। कहा- चिंता मत करो! सब ठीक हो जाएगा। मुझे यह बताओ कि जिस दिन ये बीमार हुई, उस दिन हुआ क्या था? माता ने बताया- उस दिन शाम को यह अपनी सहेली सरला के साथ छत पर खेल रही थी। जब नीचे आई तो चेहरा उतरा हुआ था। बस तभी से बीमार है। गुरुजी ने सरला को बुलाकर पूछा कि छत पर कुछ हुआ था क्या? सरला बोली- हां गुरुजी! जब हम खेल रहे थे, तब सामने नदी के उस पार बहुत से ऊंटों का काफिला जा रहा था। उन सब पर बहुत सी रूई लदी थी। इसने पूछा कि ये इतनी रूई कहां जा रही है? मैंने मजाक में कह दिया कि तेरी ससुराल। इसने पूछा कि वे इतनी रूई का क्या करेंगे? तो मैंने कह दिया कि तुझसे धागा कतवाएंगे। बस यही बात है। ओह! तो यह बात है। कहते हुए, गुरुजी ने सरला के कान में कुछ कहा और चले गए। अगले दिन सरला विमला के पास आकर बैठ गई। उधर गुरुजी ने नदी पार बहुत से पत्तों के ढेर में आग लगवा दी। जब आकाश में धुआं ही धुआं हो गया, तब सरला बोली- विमला! विमला! देख! तेरे ससुर के रूई के गोदाम में आग लग गई। सारी रूई जल कर राख हो गई। विमला ने खिड़की से बाहर झांका और वो धुआं देखा, तो उसने लंबी सांस ली और ठीक हो गई। एक विचार से रोग हो गया, एक विचार उपचार बन गया।

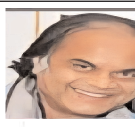

सागर कुमार

व्यंग्य केसरी

भूलना विकार नहीं, संस्कार है

नंदन पंडित

बात भूलने की है। उस भूलने की जिसके बारे में अता उल्लाह खान साहब गली-गली, चौराहे-चौराहे ढाबलियों में, ऑटो में विलख-विलखकर कहते हैं- 'तुझे भूलना तो चाहा, लेकिन भुला न पाया।' जिसे बखानते हुए हिमेश रेशमिया महोदय की जीभ मुड़ जाती है और नाक को जिम्मा सँभालना पड़ता है- 'तुझे भूल जाना जाना, मुमकिन नहीं..।

इतना कठिन, इतना दुष्कर कार्य भूलना है! किंतु वह काम ही क्या जिसमें कठिनाई न हो! वह ऊँचाई ही क्या जिसमें चढ़ाई न हो! 'वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या, जिस पथ पर बिखरे शूल न हों ?नाविक की धैर्य परीक्षा क्या, यदि धाराएँ प्रतिकूल न हों ?'

हम कविवर जयशंकर प्रसाद जी के वंशज हैं। हमें दुरुह कार्य करने में ही मजा आता है। हम उधार लेकर सहजता से भूल जाते हैं और ऋणदाता के बार-बार याद दिलाने पर भी लिया हुआ ऋण वापस नहीं लौटाते। अपितु कई बार तो उनसे लट्ठम-लट्ठ भी कर लेते हैं। किन्तु भूलने की कुल-परम्परा को आँच नहीं आने देते। हम भ्रमर की तरह हैं, हमें रस से मतलब है, फूलों से हम नातेदारी नहीं करते। हम महाराज दुष्यंत के वंशज हैं, प्यार करते हैं, जुल्फों में शाम करते हैं और अंक में प्रेम का अंकुर बोकर भूल जाते हैं।

हम हिन्दुस्तानी, परम्परा निर्वाह में बड़े समर्पित व सजग होते हैं। चाहे दहेज के नाम पर दुल्हनों को जलाना हो या मोक्ष हेतु एक अदद कुल उद्धारक (पुत्र) की खोज में सतत् कन्याओं की भ्रूण हत्या। हम थॉमस अल्वा एडीसन की तरह, बारम्बार असफलताओं से विचलित हुए बिना, अनवरत प्रकाश की खोज में लीन रहते हैं। उत्सवों व त्योहारों के नाम पर मदिरा पान हो अथवा मर्यादा के नाम पर उपदेश झाड़ना। शांति तथा समझौते के नाम पर देश की जमीन का परित्याग हो या फिर बहादुरी के नाम पर विधवा पड़ोसन का खेत हथियाना। हम सारा काम बड़ी शिद्दत से करते हैं और करके अंत में भूल जाते हैं।

परम्परा निर्वाह तथा हमारी देखा-देखी करने में हमारे नौनिहाल भी पीछे नहीं हैं। विद्यालय में अपने किसी अनुपस्थित दिवस की नोटबुक, साथी से लेकर उस साथी का नाम दो दिन में भुला देते हैं। पाठ को पढ़कर, अन्तर्बोध को सिगरेट के धुएँ की माफिक उड़ा देना तो उनका राष्ट्रीय हुनर है। मास्टरजी कक्षा में एक ओर लेक्चर देते हैं और दूसरी ओर वे भावी भारत, उसे एक कान से सोखते हुए, खोपड़ी के उस छोर पर स्थित दूसरे श्रवण द्वार से ऐसे बाहर निकाल देते हैं, जैसे मच्छरदानियों की अभेद किलेबंदी से मच्छर मानव नामक जीव का लहू निकाल (चूस) लेते हैं। कई बार तो मैंने देखा है कि बाहर से किसी परीक्षक या अधिकारी के आने पर वे अपने अध्यापक को ही भूल जाते हैं।

बहरहाल, भूलने की इस महान विरासत को नश्वरता, सुलभता व समृद्धि प्रदान की है, हमारे राजनेताओं ने। भूलने को विस्तृत आयाम दिलाया है हमारे लोकतंत्र के झंडाबरदारों ने। चुनाव के समय मतदाता को बप्पा, बप्पा कहने वाले, चुनाव के बाद, मतदाता भी इस ग्रह के हैं, उनकी आकारिकी, उनकी मानुषी पहचान तक भूल जाते हैं। अपने बँगलों के गेट पर मतदाता और स्वयं के बीच 'डाबरमैन' नाम का ऐसा प्राचीर खड़ा कर देते हैं कि उसकी एक धमक से मतदाता का पायजामा गीला हो जाता है।

इतिहास

31 मार्च का इतिहास कई प्रमुख घटनाओं का गवाह है, जिनमें 1867 में अमेरिका द्वारा अलास्का को रूस से खरीदना और 1968 में राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन द्वारा दोबारा चुनाव न लड़ने की घोषणा शामिल है। यह दिन औद्योगिक क्रांति के जनक जेम्स वॉट के जन्मदिन (1736) के लिए भी जाना जाता है। 2008: अमेरिकी निर्देशक जूल्स डासिन का 96 वर्ष की आयु में निधन हुआ। 1992: ऐतिहासिक युद्धपोत यूएसएस मिसूरी, जहां 1945 में जापान ने आत्मसमर्पण किया था, को अंतिम रूप से सेवामुक्त किया गया। 1968: अमेरिकी राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन ने घोषणा की कि वह राष्ट्रपति पद के लिए पुन: चुनाव नहीं लड़ेंगे। 1928: कनाडाई-अमेरिकी आइस हॉकी खिलाड़ी गॉर्डी होवे का जन्म हुआ। 1889: पेरिस में एफिल टॉवर का आधिकारिक उद्घाटन हुआ, जिसे गुस्ताव एफिल द्वारा फ्रांसीसी क्रांति के शताब्दी वर्ष को मनाने के लिए बनाया गया था।

यूपी सरकार में औद्योगिक क्रांति, 9 साल में 17 हजार कारखाने पंजीकृत : प्रमुख सचिव

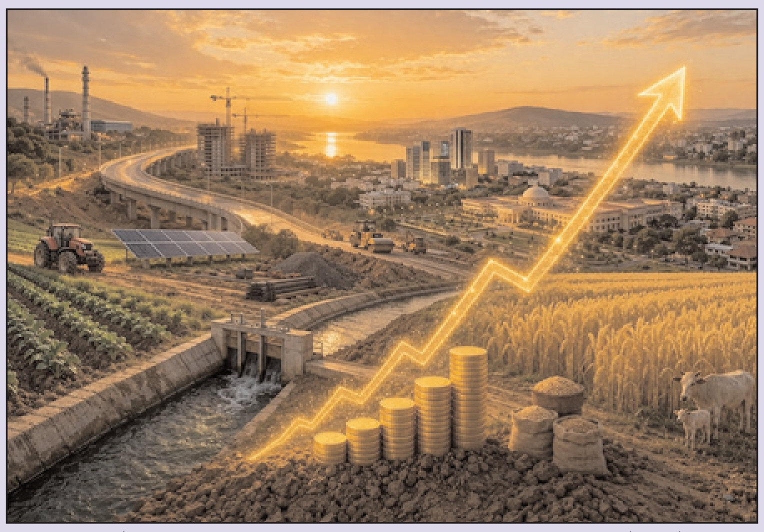

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने पिछले नौ वर्षों में प्रदेश में औद्योगिक विकास के क्षेत्र में एक नई पहचान बनाई है। सरकार के सुशासन, पारदर्शी नीतियों और दूरदर्शी नेतृत्व का ही असर है कि प्रदेश में अप्रैल 2017 से अब तक 17,841 नए कारखाने पंजीकृत किए गए हैं।

यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि देश के स्वतंत्र होने के बाद वर्ष 1947 से मार्च 2017 तक लगभग 70 वर्षों में प्रदेश में कुल 14,178 कारखाने ही पंजीकृत हो पाए थे। वर्तमान समय में प्रदेश में कुल पंजीकृत कारखानों की संख्या 32,019 तक पहुंच चुकी है। प्रमुख सचिव श्रम एवं रोजगार डॉ. एमके शनमुगा सुंदरम ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का विजन प्रदेश को देश की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला राज्य बनाना है।

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए योगी सरकार ने 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' से सुधार, निवेश अनुकूल माहौल और पारदर्शी प्रक्रियाओं पर विशेष ध्यान दिया। साथ ही निवेशकों को आकर्षित करने के लिए सिंगल विंडो सिस्टम, ऑनलाइन क्लीयरेंस, भूमि बैंक, बेहतर कानून-व्यवस्था और मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर जैसी सुविधाएं विकसित कीं। यही वजह है कि देश-विदेश के निवेशकों का भरोसा उत्तर प्रदेश पर बढ़ा है।

उन्होंने बताया कि प्रदेश में 17,841 कारखाने अप्रैल 2017 के बाद पंजीकृत हुए हैं, जो राज्य में औद्योगिक गतिविधियों की तेज रफ्तार को दर्शाते हैं। सिर्फ सितंबर 2023 से अब तक ही 10,194 कारखानों का पंजीकरण हुआ है, जबकि चालू वित्तीय वर्ष में 4,746 नए कारखाने जुड़े हैं। अप्रैल 2017 के बाद पंजीकृत इन कारखानों में वर्तमान में 16,53,179 लोग नौकरी कर रहे हैं। इनमें 15,29,907 पुरुष व 1,23,272 महिलाएं कार्यरत हैं।

प्रमुख सचिव ने बताया कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 10,895, मध्य उत्तर प्रदेश में 3,526, पूर्वी उत्तर प्रदेश में 3,205 और बुंदेलखंड क्षेत्र में 215 कारखाने पंजीकृत किए गए हैं। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि योगी सरकार ने क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करते हुए हर क्षेत्र में उद्योगों को बढ़ावा दिया, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर पैदा हुए। इन कारखानों से प्रदेश में औद्योगिक विकास के साथ-साथ रोजगार सृजन भी तेजी से हुआ है।

खास बात यह है कि कारखानों में कार्यरत महिलाओं की भागीदारी भी लगातार बढ़ रही है, जो प्रदेश में सामाजिक-आर्थिक बदलाव का संकेत है। प्रदेश में 14,412 कारखाने ऐसे हैं, जिनमें 100 तक श्रमिक कार्यरत हैं जबकि 3,213 कारखानों में 101 से 1000 श्रमिक कार्यरत हैं। इसी तरह 118 बड़े कारखाने ऐसे हैं जिनमें 1000 से अधिक श्रमिक कार्यरत हैं। यह संख्या दर्शाती है कि योगी सरकार ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों (एमएसएमई)के साथ-साथ बड़े उद्योगों को भी समान रूप से प्रोत्साहन दिया है। इससे प्रदेश की औद्योगिक संरचना मजबूत हुई है। बता दें कि औद्योगिक विकास में कानून-व्यवस्था की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। योगी सरकार ने इस क्षेत्र में सख्त कदम उठाते हुए प्रदेश में सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित किया, जिससे निवेशकों का विश्वास बढ़ा।

मध्य पूर्व में तनाव का असर! अमेरिका और यूएई में 72 प्रतिशत तक बढ़े पेट्रोल-डीजल के दाम

नई दिल्ली। मध्य पूर्व में तनाव का असर पूरी दुनिया में देखा जा रहा है। इससे अमेरिका से लेकर खाड़ी देश यूएई में पेट्रोल-डीजल की कीमत में 72 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी देखी गई है।

अमेरिका में गैसोलीन (पेट्रोल) की कीमतें बढ़कर 4 डॉलर (भारतीय रुपए में करीब 380 रुपए) प्रति गैलन (1 गैलन =3.8 लीटर) से अधिक हो गई हैं यह बीते तीन वर्षों में पहला मौका है, जब गैसोलीन के दाम इस स्तर के पार निकल गए हैं।

अमेरिकी मीडिया के मुताबिक, पूरे देश में गैसोलीन की औसत कीमत बढ़कर 4.018 डॉलर प्रति गैलन हो गई है। अमेरिका-इजरायल द्वारा ईरान पर हमला करने के बाद से गैसोलीन की कीमतों में 30 प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि हो चुकी है। अमेरिका में डीजल की कीमतों में भी बढ़ोतरी देखी गई है और दाम 5 डॉलर प्रति गैलन (करीब 475 रुपए प्रति गैलन) के पार निकल गया है। मध्य पूर्व में तनाव शुरू होने के बाद से कीमतों में 40 प्रतिशत से ज्यादा की बढ़ोतरी देखी गई है।

खाड़ी के देशों में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी देखी जा रही है। यूनाइटेड अरब अमीरात (यूएई) की फ्यूल प्राइस कमेटी ने कीमतों में वृद्धि का ऐलान किया है। यह बढ़ोतरी एक अप्रैल से लागू होगी। नई कीमतों के मुताबिक, सुपर 98 पेट्रोल की कीमत लगभग 30 प्रतिशत बढ़कर 3.39 दिरहम प्रति लीटर (भारतीय रुपए में करीब 87 रुपए प्रति लीटर) हो गई है, जो कि पहले 2.59 दिरहम प्रति लीटर थी। स्पेशल 95 पेट्रोल का दाम लगभग 32 प्रतिशत बढ़कर 3.28 दिरहम प्रति लीटर हो गया है, जो कि पहले 2.48 दिरहम प्रति लीटर था। यूएई में डीजल की कीमतों में रिकॉर्ड बढ़ोतरी देखी गई है और यह 72 प्रतिशत बढ़कर 4.69 दिरहम प्रति लीटर (करीब 120 रुपए प्रति लीटर) पर पहुंच गई हैं, जो कि पहले 2.72 दिरहम प्रति लीटर पर थी। अमेरिका, इजरायल और ईरान युद्ध के कारण कच्चे तेल की कीमत में जबरदस्त तेजी देखने को मिली है।

मार्च में 3.1 लाख पीएनजी कनेक्शनों का गैसीफाइड किया गया : पेट्रोलियम मंत्रालय

नई दिल्ली। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने मंगलवार को घोषणा की कि ईरान युद्ध के कारण एलपीजी आयात में आई बाधाओं के बीच कुकिंग गैस की उपलब्धता बढ़ाने के प्रयास जारी हैं। इस क्रम में मार्च में घरेलू, कमर्शियल, छात्रावास, और कैंटीन क्षेत्रों को कवर करते हुए 3.1 लाख से अधिक पीएनजी कनेक्शनों को गैसीफाइड किया गया है, जबकि 2.7 लाख नए कनेक्शन दिए गए हैं और उनको गैसीफाइड किया जा रहा है।

1 मार्च, 2026 से औसतन प्रतिदिन 50 लाख से अधिक घरेलू एलपीजी सिलेंडर वितरित किए जा रहे हैं, और एलपीजी वितरकों में किसी भी प्रकार की कमी की सूचना नहीं मिली है। इसके अलावा, मंत्रालय के एक बयान में कहा गया है कि 23 मार्च से प्रवासी श्रमिकों को 3.2 लाख से अधिक 5 किलो के सिलेंडर बेचे गए हैं, जिनमें से सोमवार को 63,000 से अधिक सिलेंडर बेचे गए।

पाइप से आपूर्ति की जाने वाली प्राकृतिक गैस (पीएनजी) और वाहनों के लिए सीएनजी के मामले में, मांग को पूरा करने के लिए 100 प्रतिशत आपूर्ति वाले उपभोक्ताओं को प्राथमिकता दी गई है। ग्रिड से जुड़े औद्योगिक और कमर्शियल उपभोक्ताओं को आपूर्ति उनकी औसत खपत के लगभग 80 प्रतिशत पर बनाए रखी जा रही है।

बयान में कहा गया है कि होर्मुज जलडमरूमध्य के बंद होने के मद्देनजर, देश भर में पेट्रोलियम उत्पादों और एलपीजी की निर्बाध उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए उपाय किए गए हैं।

बयान में यह भी कहा गया है कि सभी रिफाइनरियां पर्याप्त कच्चे तेल के भंडार के साथ उच्च क्षमता पर काम कर रही हैं, और पेट्रोल और डीजल का पर्याप्त स्टॉक बनाए रखा जा रहा है, जबकि स्थानीय खपत को पूरा करने के लिए रिफाइनरियों से घरेलू एलपीजी उत्पादन बढ़ाया गया है।

देश भर में सभी पेट्रोल पंप सामान्य रूप से काम कर रहे हैं। हालांकि, कुछ क्षेत्रों में अफवाहों के कारण घबराहट में खरीदारी के मामले देखे गए हैं, जिसके परिणामस्वरूप खुदरा दुकानों पर असामान्य रूप से अधिक बिक्री और भीड़भाड़ हुई है। हालांकि, बयान में कहा गया है कि देश भर के सभी पेट्रोल पंपों पर पेट्रोल और डीजल का पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध है।

सरकार ने जनता को अफवाहों पर विश्वास न करने की सलाह दोहराई है और राज्य सरकारों से प्रेस ब्रीफिंग के माध्यम से सही जानकारी प्रसारित करने का अनुरोध किया है।

ऑनलाइन एलपीजी बुकिंग में लगभग 92 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि डिलीवरी ऑथेंटिकेशन कोड (डीएसी) आधारित डिलीवरी फरवरी 2026 में 53 प्रतिशत से बढ़कर वर्तमान में 83 प्रतिशत हो गई है, जिससे हेराफेरी को रोकने में मदद मिली है।

भारत में गोल्ड लोन बना सबसे बड़ा रिटेल क्रेडिट सेगमेंट, 36 प्रतिशत हिस्सेदारीः रिपोर्ट

नई दिल्ली । भारत के रिटेल क्रेडिट बाजार में गोल्ड लोन सबसे बड़ा सेगमेंट बनकर उभरा है। मंगलवार को जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, कुल लोन वॉल्यूम (मात्रा) में इसकी हिस्सेदारी 36 प्रतिशत और वैल्यू (मूल्य) के हिसाब से करीब 40 प्रतिशत तक पहुंच गई है। इसके पीछे मुख्य कारण सोने की बढ़ती कीमतें और लोगों का सुरक्षित लोन की ओर बढ़ता रुझान है। ट्रांसयूनियन सीआईबीएल की रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले दो वर्षों में गोल्ड लोन की औसत राशि में काफी बढ़ोतरी हुई है। दिसंबर 2025 तिमाही में औसत गोल्ड लोन करीब 1.9 लाख रुपए तक पहुंच गया, जो इस सेगमेंट में तेजी को दिखाता है।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि कंज्यूमर मार्केट इंडिकेटर (सीएमआई), जो क्रेडिट मार्केट की स्थिति को दर्शाता है, दिसंबर 2025 तिमाही में बढ़कर 102 हो गया। यह एक साल पहले 97 और सितंबर तिमाही में 100 था। यानी लगातार तीसरी तिमाही में इसमें सुधार देखा गया है।

सोने की ऊंची कीमतों ने लोगों को अपने पास मौजूद गोल्ड का उपयोग करके लोन लेने के लिए प्रेरित किया है, जिससे गोल्ड लोन की मांग और वितरण दोनों में तेज वृद्धि हुई है।

पहले गोल्ड लोन का दबदबा दक्षिण भारत में ज्यादा था, लेकिन अब उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे उत्तर और पश्चिम राज्यों में भी इसकी तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। इस सेगमेंट में अब अलग-अलग तरह के ग्राहक भी जुड़ रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, आधे से ज्यादा लोन प्राइम और उससे ऊपर की कैटेगरी के ग्राहकों द्वारा लिए जा रहे हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि गोल्ड लोन अब एक मुख्यधारा का क्रेडिट विकल्प बनता जा रहा है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि त्योहारों के बाद और जीएसटी से जुड़े प्रभाव के बाद क्रेडिट सप्लाई में थोड़ी नरमी आई है, लेकिन यह मौसमी वजहों से है, न कि किसी स्थायी गिरावट का संकेत।

क्रेडिट की मांग खासकर अर्ध-शहरी और ग्रामीण इलाकों में मजबूत बनी हुई है। नॉन-मेट्रो क्षेत्रों का कुल उधारकर्ताओं में हिस्सा बढ़कर 54 प्रतिशत हो गया है, जो पिछले साल के मुकाबले 3 प्रतिशत ज्यादा है। वहीं, पहली बार लोन लेने वाले ग्राहकों की हिस्सेदारी भी बढ़कर 15 प्रतिशत हो गई है।

इस बीच, ऑटो लोन सेगमेंट में भी स्थिरता बनी हुई है। खासकर मिड-सेगमेंट वाहनों की मांग के चलते इसमें संतुलित ग्रोथ देखी जा रही है और पिछले साल के मुकाबले सप्लाई में भी बढ़ोतरी हुई है।

तमिलनाडु में तीन टोल प्लाजा पर 'बैरियर-फ्री' टोल सिस्टम लागू करने की तैयारी

चेन्नई । राजमार्ग (हाईवे) आधारभूत संरचना के आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) राष्ट्रव्यापी कार्यान्वयन के तहत तमिलनाडु के तीन प्रमुख टोल प्लाजा पर बाधा (बैरियर-फ्री) के टोल वसूलने की प्रक्रिया शुरू करने की तैयारी कर रहा है।

नई मल्टी लेन फ्री फ्लो (एमएलएफएफ) प्रणाली एनएच-48 पर नेमिली और चेन्नासमुद्रम टोल प्लाजा और एनएच-45 पर परानूर टोल प्लाजा पर लागू की जाएगी। इस पहल का उद्देश्य लंबी कतारों को समाप्त करना, निर्बाध यातायात सुनिश्चित करना और राज्य भर में वाहन चालकों के लिए यात्रा समय को कम करना है।

पारंपरिक टोल प्लाजा के विपरीत, जहां वाहनों को भुगतान के लिए धीमा होना या रुकना पड़ता है। एमएलएफएफ प्रणाली वाहनों को बिना किसी बाधा के सामान्य राजमार्ग गति से चलने की अनुमति देती है। यह प्रणाली फास्टैग खातों से जुड़ी रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (आरएफआईडी) तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) द्वारा संचालित स्वचालित नंबर प्लेट पहचान (एएनपीआर) कैमरों के संयोजन का उपयोग करती है।

जैसे ही वाहन टोल क्षेत्र से गुजरते हैं, आरएफआईडी रीडर फास्टैग विवरण का पता लगाते हैं जबकि एएनपीआर कैमरे वाहन की नंबर प्लेट को कैप्चर करते हैं। इसके बाद सिस्टम वास्तविक समय में डेटा को सत्यापित करता है और स्वचालित रूप से जुड़े खाते से टोल राशि काट लेता है, जिससे एक सुगम और संपर्क रहित टोल भुगतान का अनुभव सुनिश्चित होता है। एनएचआई अधिकारियों के अनुसार, तमिलनाडु में तैयारी पहले से ही चल रही है और एएनपीआर कैमरों और सहायक बुनियादी ढांचे की स्थापना के लिए स्थानों को चिह्नित किया जा रहा है।

ई-कॉमर्स और कूरियर के जरिए निर्यात को मिलेगा बढ़ावा, आज से लागू होंगे नए सुधार

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने मंगलवार को कहा कि केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ई-कॉमर्स निर्यात और कूरियर-आधारित व्यापार को सुव्यवस्थित करने के लिए व्यापक सुधारों को एक अप्रैल से लागू करेगा, जिसमें प्रति कूरियर खेप पर 10 लाख रुपए की मूल्य सीमा को हटाना भी शामिल है।

एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि 1 अप्रैल, 2026 से प्रभावी होने वाले सुधारों से निर्यात में मजबूत वृद्धि होने की उम्मीद है, विशेष रूप से ई-कॉमर्स निर्यातकों के लिए, क्योंकि इससे शिपमेंट मूल्य में अधिक लचीलापन आएगा और कूरियर मोड के माध्यम से निर्बाध निर्यात संभव हो सकेगा।

वित्त मंत्रालय के बयान में कहा गया है कि इससे मूल्य प्रतिबंधों के कारण ऐसे शिपमेंट को पारंपरिक हवाई या समुद्री कार्गो में भेजने की आवश्यकता भी समाप्त हो गई है। इसके अलावा, कूरियर आधारित व्यापार में रसद संबंधी अक्षमताओं, प्रतीक्षा समय और लेनदेन लागत को कम करके एमएसएमई, कारीगरों और स्टार्टअप्स के लिए व्यापार करने में आसानी बढ़ाने के लिए, बिना मंजूरी वाले शिपमेंट के लिए मूल स्थान पर वापसी तंत्र को मंजूरी दे दी गई है। नए नियम के तहत, बिना मंजूरी वाले या लावारिस आयात जो 15 दिनों से अधिक समय तक ऐसे ही रहते हैं — और जिन पर प्रतिबंध, रोक या कानूनी कार्रवाई नहीं हुई है — उन्हें एक सरल प्रक्रिया के माध्यम से मूल स्थान पर वापस भेजा जा सकता है, जिससे कूरियर टर्मिनलों पर भीड़ कम होगी और रसद दक्षता में सुधार होगा।

सीबीआईसी ने ई-कॉमर्स निर्यात से संबंधित माल सहित, लौटाए गए या अस्वीकृत माल के पुन: आयात की प्रक्रिया को भी सरल बना दिया है।

बयान में कहा गया है, 'खेप-वार सत्यापन के स्थान पर जोखिम-आधारित दृष्टिकोण अपनाया गया है और संबंधित अधिसूचना में आवश्यक संशोधन किए गए हैं। इसके अलावा, ऐसे रिटर्न की सुचारू प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए एक्सप्रेस कार्गो क्लीयरेंस सिस्टम में एक समर्पित रिटर्न मॉड्यूल विकसित किया गया है। ये सुधार कूरियर-आधारित व्यापार की समग्र दक्षता में सुधार लाने के उद्देश्य से प्रणाली-आधारित संवर्द्धन और प्रक्रिया सरलीकरण द्वारा समर्थित हैं।

एलीटकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड पर 'पंप-एंड-डंप' का आरोप, सेबी ने शुरू की जांच

मुंबई। सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) ने एलीटकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड के शेयर में 'पंप-एंड-डंप' के सबूत मिलाने के बाद एक्शन लेना शुरू कर दिया है।

बाजार नियामक ने पाया कि शेयर की कीमत में थोड़े ही समय में 60 गुना से अधिक की वृद्धि हुई, जिसके बाद उसमें तेज गिरावट आई और यह पैटर्न हेरफेरपूर्ण ट्रेडिंग का संकेत था।

इसके अलावा, प्रमोटरों और उनसे जुड़े पक्षों के समन्वित सौदों और फंड ट्रांसफर के कारण भी शेयरों की कीमतों में उछाल आया।

सेबी ने कंपनी की आय में असामान्य उछाल पर भी चिंता जताई और कहा कि कंपनी का राजस्व दो वर्षों में लगभग 686 गुना बढ़ गया। सितंबर 2025 की तिमाही में राजस्व में भारी उछाल दर्ज किया गया, जो जून तिमाही के 525 करोड़ रुपए से बढ़कर 2,195.8 करोड़ रुपए हो गया।

जांचकर्ताओं को संदेह है कि कंपनी की वास्तविक व्यावसायिक गतिविधि न के बराबर थी और उसने शेयरों की कीमतों में उछाल के दौरान खुदरा निवेशकों को आकर्षित करने के लिए भ्रामक कॉर्पोरेट डिस्क्लोजर जारी किए होंगे। नियामक ने आगे आरोप लगाया कि कंपनी के अंदरूनी लोगों ने ऊंचे दामों पर शेयर बेचे। प्रमोटर विपिन शर्मा को कथित तौर पर एक प्रमुख विक्रेता के रूप में पहचाना गया है, जब ट्रेडिंग वॉल्यूम और कीमतें अपने उच्चतम स्तर पर थीं। सेबी ने कंपनी पर गंभीर खुलासे संबंधी चूक का भी आरोप लगाया है, जिसमें 408 करोड़ रुपए के वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संबंधी कार्रवाई के बारे में शेयरधारकों को तुरंत सूचित न करना शामिल है। अन्य महत्वपूर्ण घटनाक्रमों में या तो देरी की गई या उनका खुलासा नहीं किया गया, जिससे निवेशकों को महत्वपूर्ण जानकारी से वंचित रहना पड़ा।

बाजार नियामक के अनुसार, जांच जारी है और व्यापारिक पैटर्न, वित्तीय स्थिति और संस्थाओं के बीच संबंधों की विस्तृत जांच चल रही है।

इसके अलावा, जांच और उचित प्रक्रिया पूरी होने के बाद संभावित जुर्माने और बाजार प्रतिबंधों सहित अंतिम आदेश जारी किया जाएगा।

करुणा से कर्मयोग तक, बाबा आम्टे की अमर गाथा

नई दिल्ली। ये नाम है बाबा आम्टे, उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि संवेदना अगर संकल्प बन जाती है, तो वह हजारों जिंदगियों को संवार देती है। महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल एसएम कृष्णा ने उन्हें महान समाज सुधारक संत बताते हुए कहा था कि बाबा आम्टे ने कुष्ठरोग से प्रभावित लोगों को आत्मसम्मान के साथ जीने की राह दिखाई। उन्होंने सेवा को दया नहीं, बल्कि अधिकार और सम्मान का आंदोलन बना दिया।

मुरलीधर देवीदास आम्टे का जन्म 26 दिसंबर 1914 को महाराष्ट्र के वर्धा जिले के हिंगणघाट गांव में एक समृद्ध जमींदार परिवार में हुआ था। उनके पिता, देवीदास हरबाजी आम्टे, शासकीय सेवा में लेखपाल थे, और परिवार आर्थिक रूप से बेहद संपन्न था। बाबा आम्टे का बचपन किसी राजकुमार से कम नहीं था, सोने के पालने में सोना, चांदी के चम्मच से भोजन करना और रेशमी कपड़े पहनना।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा नागपुर के क्रिश्चियन मिशन स्कूल में हुई और बाद में नागपुर विश्वविद्यालय से उन्होंने कानून की पढ़ाई की। उन्होंने लंबे समय तक वकालत भी की, लेकिन विवाह के बाद उनके जीवन की दिशा बदल गई। पत्नी साधना के साथ उन्होंने अपना जीवन समाजसेवा और दबे-कुचले लोगों की सेवा को समर्पित कर दिया। उनके जीवन का सबसे बड़ा मोड़ तब आया, जब उन्होंने एक कुष्ठरोगी को मूसलाधार बारिश में भीगते देखा। कोई भी उसकी मदद के लिए आगे नहीं आ रहा था। बाबा आम्टे के मन में सवाल उठा कि अगर इसकी जगह मैं होता तो? फिर क्या? उन्होंने बिना किसी हिचक के उस रोगी को उठाया और अपने घर ले आए। यही वह क्षण था, जब उन्होंने तय कर लिया कि वे अपना जीवन कुष्ठरोगियों की सेवा और उनके पुनर्वास के लिए समर्पित करेंगे। इसके बाद उन्होंने इस बीमारी को समझने और इससे जुड़े सामाजिक भय और भेदभाव को खत्म करने का संकल्प लिया।

वर्ष 1949 में बाबा आम्टे ने महारोग सेवा समिति की स्थापना की और कुष्ठरोगियों की संगठित सेवा शुरू की। उन्होंने सोमनाथ, अशोकवन जैसे कई सेवा संस्थानों की स्थापना की, जहां हजारों मरीजों का इलाज ही नहीं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर रोगी से कर्मयोगी बनाया गया। उनका मानना था कि दया से ज्यादा जरूरी है सम्मान और स्वावलंबन।

महात्मा गांधी और विनोबा भावे से प्रभावित बाबा आम्टे ने देशभर का दौरा कर गांवों की वास्तविक समस्याओं को समझा। स्वतंत्रता आंदोलन में वे अमर शहीद राजगुरु के साथी भी रहे, लेकिन बाद में गांधीजी के संपर्क में आकर उन्होंने अहिंसा का मार्ग अपनाया। 1985 में उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत जोड़ो आंदोलन चलाया। इस यात्रा का उद्देश्य देश में एकता की भावना को मजबूत करना और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना था। उनके असाधारण सामाजिक योगदान के लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया। इनमें पद्मश्री (1971), पद्म विभूषण (1986), मैगसेसे पुरस्कार (1985), महाराष्ट्र भूषण, गांधी शांति पुरस्कार और कई अन्य राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मान शामिल हैं।

ओडिशा दिवस : 'कलिंग' की भूमि का सांस्कृतिक स्वाभिमान दिवस, प्राचीन विरासत की याद

नई दिल्ली। भारत के पूर्वी तट पर बसा ओडिशा सिर्फ एक राज्य नहीं है। यह इतिहास, संस्कृति और आत्मगौरव की एक जीवंत गाथा है। हर साल 1 अप्रैल को मनाया जाने वाला ओडिशा स्थापना दिवस, जिसे उत्कल दिवस भी कहा जाता है, इस भूमि के उस गौरवशाली क्षण की याद दिलाता है, जब 1936 में यह एक स्वतंत्र प्रांत के रूप में अस्तित्व में आया।

ओडिशा का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रहा है। प्राचीन काल में यह क्षेत्र 'कलिंग' के नाम से जाना जाता था, जो अपनी शक्ति और समुद्री व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।

भारत के पूर्वी हिस्से में बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित यह प्रदेश मौर्य, गुप्त, शुंग और गजपति जैसे शक्तिशाली राजवंशों के अधीन रहा। इतिहासकारों के अनुसार, इसी धरती पर कलिंग युद्ध के बाद सम्राट अशोक ने अहिंसा और धर्म का मार्ग अपनाने की प्रेरणा पाई। ब्रिटिश शासन के दौरान ओडिशा बंगाल प्रेसीडेंसी का हिस्सा था। इसे बाद में बिहार और ओडिशा प्रांत के रूप में पुनर्गठित किया गया।

लेकिन, स्थानीय लोगों और समाज सुधारकों के लंबे संघर्ष के बाद 1 अप्रैल 1936 को ओडिशा को एक अलग प्रांत का दर्जा मिला। यह भारत का पहला राज्य था जिसे भाषा के आधार पर गठित किया गया। यही कारण है कि उत्कल दिवस न केवल एक ऐतिहासिक तिथि है, बल्कि सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक भी है। स्वतंत्रता के बाद 1949 में रियासतों के विलय के साथ ओडिशा का पूर्ण रूप से एकीकृत राज्य के रूप में गठन हुआ। इस भूमि को कलिंग, उत्कल और उद्र जैसे कई नामों से जाना जाता रहा है, लेकिन इसकी पहचान सबसे अधिक भगवान जगन्नाथ की भूमि के रूप में है। भगवान जगन्नाथ यहां के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन के केंद्र में हैं और पुरी की रथ यात्रा विश्वभर में आस्था और भक्ति का अद्भुत उदाहरण है।

ओडिशा भौगोलिक रूप से एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह उत्तर में झारखंड, उत्तर-पूर्व में पश्चिम बंगाल, दक्षिण में आंध्र प्रदेश और पश्चिम में छत्तीसगढ़ से घिरा हुआ है, जबकि पूर्व में बंगाल की खाड़ी इसकी प्राकृतिक सीमा बनाती है। यह समुद्री तट, हरे-भरे जंगल, झरने और प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर राज्य है। इस प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान भी उतनी ही समृद्ध है। ओड़िया यहां की प्रमुख भाषा है। रथ यात्रा, दुर्गा पूजा, मकर संक्रांति, उगादी और उडान उत्सव जैसे त्योहार यहां के जीवन में रंग भरते हैं। विश्वभर में प्रसिद्ध ओडिसी नृत्य इस राज्य की कलात्मक उत्कृष्टता का प्रतीक है। भुवनेश्वर के मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर और पुरी का जगन्नाथ मंदिर इस प्रदेश की भव्य सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं। ओडिशा आज विकास की ओर अग्रसर है। खनिज संसाधनों की प्रचुरता के कारण इसे भारत का खनिज राज्य कहा जाता है। यहां की अर्थव्यवस्था कृषि, खनन और पर्यटन पर आधारित है। ये तीनों क्षेत्र राज्य की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। प्राकृतिक सौंदर्य और समुद्री तटों के कारण यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल भी बन चुका है। 2011 में इस प्रदेश का नाम 'उड़ीसा' से 'ओडिशा' किया गया।

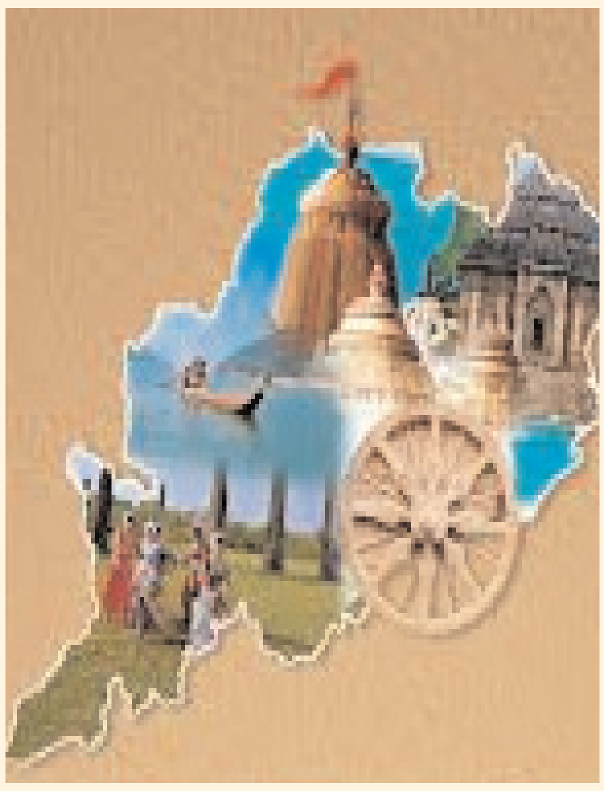

कैंसर का ब्लड ग्रुप से कनेक्शन : 'ओ' सबसे सुरक्षित, तो संकट किस पर?

नई दिल्ली। ब्लड ग्रुप को आमतौर पर सिर्फ इमरजेंसी स्थितियों जैसे ब्लड सप्लाई या ट्रांसफ्यूजन से जोड़ा जाता है। हालांकि, मेडिकल एक्सपर्ट्स का कहना है कि किसी व्यक्ति का ब्लड टाइप उसकी पूरी हेल्थ के बारे में जरूरी जानकारी दे सकता है और कुछ गंभीर बीमारियों के प्रति उसकी संवेदनशीलता का भी संकेत दे सकता है।

साइंटिफिक रिसर्च में इस बात पर फोकस किया गया है कि अलग-अलग ब्लड ग्रुप वाले लोगों में कैंसर का खतरा कैसे अलग-अलग हो सकता है। दुनिया भर में कैंसर के बढ़ते मामलों को देखते हुए, एक स्टडी में ब्लड टाइप और पेट के कैंसर के बीच एक खास लिंक सामने आया।

2019 में मेडिकल जर्नल बीएमसी कैंसर में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, कुछ खास ब्लड ग्रुप वाले लोगों में दूसरों की तुलना में गैस्ट्रिक कैंसर होने की संभावना ज्यादा होती है। पेट का कैंसर, जिसे मेडिकल भाषा में गैस्ट्रिक कैंसर कहा जाता है, पेट की अंदरूनी परत में सेल्स की असामान्य ग्रोथ के कारण होता है, जो धीरे-धीरे हेल्दी टिशू को नुकसान पहुंचाता है।

स्टडी में पाया गया कि ब्लड ग्रुप ए और एबी वाले लोगों को इस बीमारी का खतरा तुलनात्मक रूप से ज्यादा होता है। डेटा से पता चला कि ब्लड ग्रुप ए वाले लोगों को ब्लड ग्रुप ओ वाले लोगों की तुलना में लगभग 13 से 19 प्रतिशत अधिक खतरा होता है, जबकि ब्लड ग्रुप एबी वाले लोगों में यह खतरा 18 प्रतिशत तक हो सकता है। इन नतीजों को बाद में कई स्टडीज के मेटा-एनालिसिस से सपोर्ट मिला।

2009 में डाना-फार्बर कैंसर इंस्टीट्यूट के रिसर्चर्स ने ब्लड टाइप और इस बीमारी के होने के रिस्क की पुष्टि की थी। इसे जर्नल ऑफ द नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट ने ऑनलाइन पब्लिश किया था। दो बड़ी हेल्थ-ट्रैकिंग स्टडीज, नर्स हेल्थ स्टडी और हेल्थ प्रोफेशनल्स फॉलो-अप स्टडी में शामिल लोगों के ब्लड टाइप और पैंक्रियाटिक कैंसर के होने के एनालिसिस पर आधारित था। ब्लड ग्रुप ए में पैंक्रियाटिक कैंसर का 32 फीसदी अधिक जोखिम और एबी में 51 फीसदी पाया गया है। गैस्ट्रिक कैंसर में ए ग्रुप का जोखिम 18-38 फीसदी तक बढ़ा हुआ था, जबकि ओ ग्रुप में कुल कैंसर का जोखिम कम (लगभग 16 फीसदी तक कम) देखा गया।

एक्सपर्ट्स के अनुसार, ब्लड ग्रुप ए वाले लोगों को हेलिकोबैक्टर पाइलोरी से इन्फेक्शन होने का खतरा ज्यादा होता है, जो एक ऐसा बैक्टीरिया है जिसे पेट के कैंसर का एक बड़ा कारण माना जाता है। हालांकि, रिसर्च से पता चलता है कि इस इन्फेक्शन की गैरमौजूदगी में भी, ब्लड ग्रुप ए वाले लोगों को खतरा ज्यादा हो सकता है। इसके उलट, ब्लड ग्रुप एबी वाले लोगों के लिए, इस बैक्टीरिया की मौजूदगी बीमारी होने की संभावना को और बढ़ा सकती है।

नवजात के जन्म के बाद मां ही नहीं, पिता को भी होता है डिप्रेशन: स्टडी ने खोला राज

नई दिल्ली। घर में नए मेहमान की किलकारी सभी परेशानियों और दिक्कतों को दूर करने वाली मानी जाती है। सूने आंगन में खुशहाली की आमद का प्रतीक होते हैं नवजात! इन दिनों हम अक्सर न्यू मॉम के 'पोस्टपार्टम ब्लूज' के बारे में सुनते हैं। अलग-अलग मंचों पर इसका जिक्र भी खूब होता है। लेकिन इससे इतर हम उस पिता को भूल जाते हैं जो खुद भी जीवन में आए बदलाव को अपनाने की कोशिश कर रहा होता है।

एक नई स्टडी ने पुरुषों के छिपे मानसिक दबाव पर प्रकाश डाला है। हाल ही में 'जेएएमए नेटवर्क ओपन' में प्रकाशित इस शोध में बताया गया है कि बच्चे के जन्म के तुरंत बाद नहीं, बल्कि लगभग एक साल के भीतर पिता के मेंटल हेल्थ पर प्रतिकूल असर पड़ता है, और इसी दौरान डिप्रेशन और तनाव से जुड़ी समस्याओं का खतरा 30 फीसदी से अधिक बढ़ जाता है।

यह अध्ययन स्वीडन में किया गया, जिसमें करीब 10 लाख (एक मिलियन से अधिक) पुरुषों (पिता) के डेटा का विश्लेषण किया गया। इतने बड़े स्तर पर किए गए इस शोध ने यह साफ किया कि शुरुआती महीनों में पिता अपेक्षाकृत स्थिर नजर आते हैं क्योंकि उस समय उनका ध्यान पूरी तरह मां और नवजात की देखभाल पर केंद्रित रहता है। वे अपनी थकान, तनाव और भावनात्मक दबाव को अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, जिम्मेदारियां बढ़ती जाती हैं और मानसिक दबाव भी धीरे-धीरे दिमाग के किसी कोने में घर बना लेता है। शोध के अनुसार, बच्चे के जन्म के 9 से 12 महीने बाद की अवधि सबसे संवेदनशील होती है। इस दौरान नींद की कमी लगातार बनी रहती है, काम और परिवार के बीच संतुलन बनाना मुश्किल हो जाता है, आर्थिक दबाव बढ़ता है और रिश्तों में भी बदलाव आता है। इन सभी का संयुक्त असर पिता के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है, जो डिप्रेशन या स्ट्रेस डिसऑर्डर के रूप में सामने आता है।

अध्ययन यह भी बताता है कि पिता अक्सर अपनी मानसिक स्थिति के बारे में खुलकर बात नहीं करते। सामाजिक दबाव और भावनाओं को छिपाने की प्रवृत्ति के कारण वे मदद लेने से बचते हैं, जिससे समस्या गंभीर होने तक पहचान में नहीं आती। यही वजह है कि पिता के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता और सपोर्ट सिस्टम की जरूरत लगातार महसूस की जा रही है।

कैंसर का ब्लड ग्रुप से कनेक्शनः 'ओ' सबसे सुरक्षित

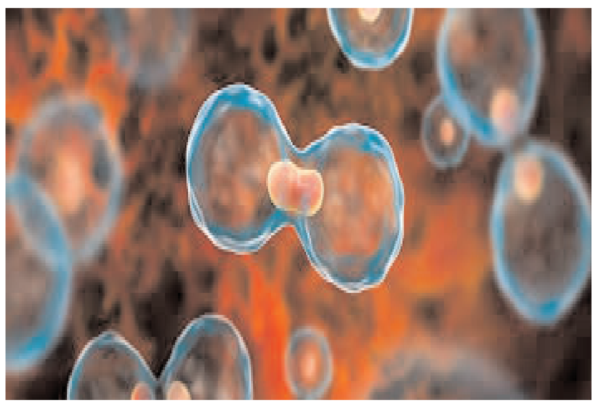

नई दिल्ली। ब्लड ग्रुप को आमतौर पर सिर्फ इमरजेंसी स्थितियों जैसे ब्लड सप्लाई या ट्रांसफ्यूजन से जोड़ा जाता है। हालांकि, मेडिकल एक्सपर्ट्स का कहना है कि किसी व्यक्ति का ब्लड टाइप उसकी पूरी हेल्थ के बारे में जरूरी जानकारी दे सकता है और कुछ गंभीर बीमारियों के प्रति उसकी संवेदनशीलता का भी संकेत दे सकता है।

साइंटिफिक रिसर्च में इस बात पर फोकस किया गया है कि अलग-अलग ब्लड ग्रुप वाले लोगों में कैंसर का खतरा कैसे अलग-अलग हो सकता है। दुनिया भर में कैंसर के बढ़ते मामलों को देखते हुए, एक स्टडी में ब्लड टाइप और पेट के कैंसर के बीच एक खास लिंक सामने आया।

2019 में मेडिकल जर्नल बीएमसी कैंसर में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, कुछ खास ब्लड ग्रुप वाले लोगों में दूसरों की तुलना में गैस्ट्रिक कैंसर होने की संभावना ज्यादा होती है। पेट का कैंसर, जिसे मेडिकल भाषा में गैस्ट्रिक कैंसर कहा जाता है, पेट की अंदरूनी परत में सेल्स की असामान्य ग्रोथ के कारण होता है, जो धीरे-धीरे हेल्दी टिशू को नुकसान पहुंचाता है।

स्टडी में पाया गया कि ब्लड ग्रुप ए और एबी वाले लोगों को इस बीमारी का खतरा तुलनात्मक रूप से ज्यादा होता है। डेटा से पता चला कि ब्लड ग्रुप ए वाले लोगों को ब्लड ग्रुप ओ वाले लोगों की तुलना में लगभग 13 से 19 प्रतिशत अधिक खतरा होता है, जबकि ब्लड ग्रुप एबी वाले लोगों में यह खतरा 18 प्रतिशत तक हो सकता है। इन नतीजों को बाद में कई स्टडीज के मेटा-एनालिसिस से सपोर्ट मिला।

2009 में डाना-फार्बर कैंसर इंस्टीट्यूट के रिसर्चर्स ने ब्लड टाइप और इस बीमारी के होने के रिस्क की पुष्टि की थी। इसे जर्नल ऑफ द नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट ने ऑनलाइन पब्लिश किया था। दो बड़ी हेल्थ-ट्रैकिंग स्टडीज, नर्स हेल्थ स्टडी और हेल्थ प्रोफेशनल्स फॉलो-अप स्टडी में शामिल लोगों के ब्लड टाइप और पैंक्रियाटिक कैंसर के होने के एनालिसिस पर आधारित था।

ब्लड ग्रुप ए में पैंक्रियाटिक कैंसर का 32 फीसदी अधिक जोखिम और एबी में 51 फीसदी पाया गया है। गैस्ट्रिक कैंसर में ए ग्रुप का जोखिम 18-38 फीसदी तक बढ़ा हुआ था, जबकि ओ ग्रुप में कुल कैंसर का जोखिम कम (लगभग 16 फीसदी तक कम) देखा गया। एक्सपर्ट्स के अनुसार, ब्लड ग्रुप ए वाले लोगों को हेलिकोबैक्टर पाइलोरी से इन्फेक्शन होने का खतरा ज्यादा होता है, जो एक ऐसा बैक्टीरिया है जिसे पेट के कैंसर का एक बड़ा कारण माना जाता है। हालांकि, रिसर्च से पता चलता है कि इस इन्फेक्शन की गैरमौजूदगी में भी, ब्लड ग्रुप ए वाले लोगों को खतरा ज्यादा हो सकता है। इसके उलट, ब्लड ग्रुप एबी वाले लोगों के लिए, इस बैक्टीरिया की मौजूदगी बीमारी होने की संभावना को और बढ़ा सकती है।

हालांकि, मेडिकल स्पेशलिस्ट इस बात पर जोर देते हैं कि सिर्फ ब्लड ग्रुप को कैंसर का सीधा या एकमात्र कारण नहीं माना जाना चाहिए। सूजन को कंट्रोल करने, इम्यून सिस्टम के रिस्पॉन्स, सेल-टू-सेल इंटरेक्शन और पेट में एसिड के लेवल में ब्लड टाइप के बीच के अंतर, ये सभी बीमारी के खतरे को प्रभावित कर सकते हैं।

डॉक्टर बताते हैं कि पेट का कैंसर आमतौर पर कई कारणों के मेल से होता है, जिसमें खराब आहार, धूम्रपान, शराब पीना, मोटापा, कुछ संक्रमण और पर्यावरणीय प्रभाव शामिल हैं। यह बीमारी एशिया, पूर्वी यूरोप और लैटिन अमेरिका के कुछ हिस्सों में ज्यादा आम है।

हेल्थ एक्सपर्ट्स लोगों को हेल्दी लाइफस्टाइल अपनाने, संतुलित आहार लेने, तंबाकू का इस्तेमाल न करने और नियमित मेडिकल चेक-अप करवाने की सलाह देते हैं, क्योंकि ये उपाय पेट के कैंसर और कई दूसरी बीमारियों के खतरे को काफी कम कर सकते हैं।

एडगर एलन पोः आधुनिक रहस्य और हॉरर साहित्य के जनक, जिन्होंने डर को शब्दों में ढाला

नई दिल्ली। एडगर एलन पो अमेरिकी साहित्य के उन विरले लेखकों में हैं जिन्होंने लेखन की दिशा ही बदल दी। उन्हें आधुनिक रहस्य, जासूसी और हॉरर साहित्य का जनक माना जाता है। उनके साहित्य ने न केवल अमेरिका बल्कि पूरी दुनिया में लेखकों और पाठकों की सोच को प्रभावित किया। भय, अवचेतन मन, अपराधबोध और मनोवैज्ञानिक उलझनों को जिस गहराई से पो ने शब्दों में ढाला, वह अपने समय से कहीं आगे था।

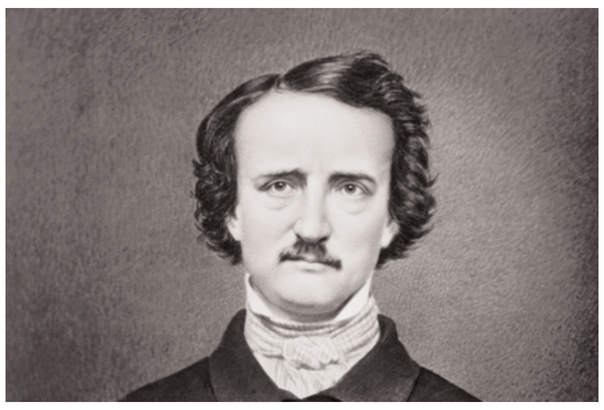

19 जनवरी 1809 को जन्मे एडगर एलन पो का जन्म अमेरिका के बोस्टन शहर में हुआ था। उनका बचपन बेहद संघर्षपूर्ण रहा। बहुत कम उम्र में माता-पिता का साया उठ जाने के कारण उन्हें आर्थिक और भावनात्मक अस्थिरता का सामना करना पड़ा। यही असुरक्षा और अकेलापन आगे चलकर उनके लेखन की केंद्रीय थीम बना। उनके पात्र अक्सर टूटे हुए, भयग्रस्त और मानसिक द्वंद्व से जूझते दिखाई देते हैं। साहित्यिक आलोचक मानते हैं कि पो का निजी जीवन उनके लेखन में गहराई से झलकता है।

पो की सबसे बड़ी पहचान उनकी लघु कथाओं से बनी, जिनमें 'द टेल-टेल हार्ट,' 'द फॉल ऑफ द हाउस ऑफ अशर,' और 'द ब्लैक कैट' जैसी कहानियां शामिल हैं। इन रचनाओं में डर केवल बाहरी नहीं होता, बल्कि मन के भीतर पनपता हुआ दिखाई देता है। उन्होंने यह स्थापित किया कि असली भय राक्षसों या भूतों से नहीं, बल्कि इंसान के अपने अपराधबोध और मानसिक विकारों से पैदा होता है। यही दृष्टिकोण आगे चलकर मनोवैज्ञानिक हॉरर की नींव बना।

एडगर एलन पो ने जासूसी साहित्य को भी नई दिशा दी। उनकी कहानी 'द मर्डर्स इन द रू मॉर्ग' को दुनिया की पहली आधुनिक डिटेक्टिव स्टोरी माना जाता है। इसमें पहली बार तार्किक सोच, सुरागों का विश्लेषण और अपराध की वैज्ञानिक पड़ताल को साहित्य का हिस्सा बनाया गया। बाद में आर्थर कॉनन डॉयल जैसे लेखकों ने शरलॉक होम्स जैसे पात्र रचते समय पो से गहरी प्रेरणा ली। कविता के क्षेत्र में भी पो का योगदान उल्लेखनीय है। उनकी कविता 'द रेवेन' ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि दिलाई। इस कविता में मृत्यु, शोक और स्मृति के भाव इतने प्रभावशाली ढंग से व्यक्त हुए कि यह आज भी अंग्रेजी साहित्य की सबसे चर्चित कविताओं में गिनी जाती है। उनकी काव्य शैली में संगीतात्मकता और गहन भावनात्मकता का अनूठा संगम दिखाई देता है।

मटके में छिपा सेहत का भी राज, गर्मियों में वरदान से कम नहीं मिट्टी के बर्तन

नई दिल्ली। गर्मी, लू और उमस के इस मौसम में ठंडे पानी की तलब हर किसी को सताने लगी है। ज्यादातर लोग राहत के लिए फ्रिज का ठंडा पानी पीते हैं, लेकिन एक्सपर्ट्स का कहना है कि कई बार इससे गला खराब हो जाता है या पेट संबंधी समस्याएं बढ़ जाती हैं। ऐसे में मिट्टी से बने मटका या घड़े का पानी स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद होता है।

स्वाद और ठंडक के साथ मटके का पानी सेहत को भी कई महत्वपूर्ण फायदे भी देता है। मिट्टी के घड़े में रखा पानी प्राकृतिक रूप से ठंडा रहता है और इसके गुण बरकरार रहते हैं। आयुर्वेद में इसे अमृत के समान माना गया है।

आधुनिक डॉक्टर भी मटके के पानी को फ्रिज के पानी से बेहतर बताते हैं। मटके के पानी में मिट्टी की हल्की खुशबू आती है, जो पीने में बहुत अच्छा लगता है। हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक यह पानी गले से लेकर आंतों तक के लिए फायदेमंद है। बीमार व्यक्ति भी इसे बिना किसी चिंता के पी सकते हैं। मिट्टी के कारण इसमें प्राकृतिक पोषक तत्व मिल जाते हैं, जो शरीर के लिए लाभकारी होते हैं।

मटके में रखे पानी की सबसे बड़ी खूबी यह है कि मिट्टी पानी की अशुद्धियों को सोख लेती है। इससे शरीर में जमा विषैले तत्व निकलते हैं और इम्यून सिस्टम मजबूत होता है। फ्रिज का पानी अक्सर गले में खराश, घमौरी या अन्य समस्याएं पैदा कर सकता है, जबकि मटके का पानी इन सब से बचाता है।

आयुष मंत्रालय भी सुबह गुनगुना पानी पीने की सलाह देता है। बेहतर है कि इसे मिट्टी या तांबे के बर्तन में रखकर पीया जाए। इससे पाचन तंत्र सक्रिय रहता है और शरीर से हानिकारक पदार्थ आसानी से बाहर निकल जाते हैं। गर्मियों में हाइड्रेटेड रहने का यह सबसे सस्ता, सुरक्षित और प्रभावी तरीका है।

मटके के पानी में मिनरल्स की मात्रा बढ़ जाती है, जबकि फ्रिज के पानी में ये कम हो जाते हैं। मिट्टी के क्षारीय गुण शरीर के पीएच लेवल को संतुलित रखते हैं। इससे पाचन क्रिया सुधरती है, इम्युनिटी बढ़ती है और शरीर का तापमान नियंत्रित रहता है। मटके का पानी पूरी तरह प्राकृतिक और केमिकल मुक्त होता है। गर्मी के मौसम में रोजाना इसका सेवन करने से शरीर स्वस्थ और तरोताजा रहता है।

सूनसान जंगल, वैन और कैमरा हर्षवर्धन राणे ने कुछ इस तरह बिताया अपना सुकून भरा पल

मुंबई । अभिनेता हर्षवर्धन राणे व्यस्त शेड्यूल के बावजूद अपने शौक को पूरा करने में पीछे नहीं हटते। फिलहाल, अभिनेता एक्शन-थ्रिलर फिल्म 'फोर्स-3' की शूटिंग में व्यस्त चल रहे हैं, लेकिन इस बीच उन्होंने फोटोग्राफी के शौक को जिंदा रखते हुए जंगल में पहुंच गए।

मंगलवार को अभिनेता ने इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरें पोस्ट कीं। इसमें वे तस्वीरों में हर्षवर्धन राणे जंगल के बीच में दिख रहे हैं। कुछ तस्वीरों में वे हाथ में कैमरा लिए खड़े हैं, तो कुछ में अपनी वैन पर आराम से बैठे नजर आ रहे हैं।

पोस्ट के साथ हर्षवर्धन ने लिखा, 'हमेशा से चाहता था कि कहीं दूर, सूनसान जगह पर एक वैन और कैमरे के साथ रहूं।

फैंस को हर्षवर्धन की पोस्ट काफी पसंद आ रही हैं। वे अभिनेता की सराहना कर रहे हैं और कमेंट सेक्शन पर तरह तरह की प्रतिक्रिया दे रहे हैं। हर्षवर्धन राणे न सिर्फ एक अच्छे अभिनेता हैं, बल्कि वे फोटोग्राफी के भी शौकीन हैं। वे अक्सर अपनी यात्राओं और प्रकृति की तस्वीरें सोशल मीडिया पर शेयर करते रहते हैं।

अभिनेता जल्दी ही जॉन अब्राहम की लोकप्रिय एक्शन-थ्रिलर फ्रेंचाइजी की तीसरी फिल्म 'फोर्स-3' मे नजर आएंगे। भाव धूलिया द्वारा निर्देशित इस फिल्म में जॉन के साथ हर्षवर्धन राणे और तान्या मणिकतला मुख्य भूमिकाओं में होंगे। फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है, जिसमें दमदार एक्शन देखने को मिलेगा और इसके कुछ दृश्य गुजरात में शूट किए गए हैं। यह फिल्म 'फोर्स' सीरीज को आगे बढ़ाएगी और इसमें धमाकेदार एक्शन सीन्स होंगे।

फिल्म में जॉन अब्राहम (एसीपी यशवर्धन), हर्षवर्धन राणे, तान्या मणिकतला, और मीनाक्षी चौधरी जैसे कलाकार नजर आएंगे। माना जा रहा है कि यह फिल्म 2027 में सिनेमाघरों में आएगी।

साल 2011 में फोर्स की शुरुआत की गई थी। निशिकांत कामत द्वारा निर्देशित एक दमदार बॉलीवुड एक्शन-थ्रिलर फिल्म है, जिसमें जॉन अब्राहम एक सख्त नारकोटिक्स ऑफिसर (यशवर्धन) की मुख्य भूमिका में नजर आए थे। यह फिल्म तमिल फिल्म 'काखा काखा' का रीमेक थी। फिल्म को दर्शकों की तरफ से अच्छा रिस्पॉन्स मिला था, इसके बाद साल 2016 में इसका सीक्वल रिलीज किया गया था।

2026 में लगातार प्रोजेक्ट्स रिलीज के बाद ब्रेक लेंगी जेंडाया, कहा- कुछ समय के लिए हो जाऊंगी गायब

नई दिल्ली। बॉलीवुड में कुछ ऐसे सितारे होते हैं, जो अपने काम, स्टाइल और स्क्रीन प्रेजेंस से हर साल दर्शकों के दिलों पर छा जाते हैं। उन्हीं में से एक हैं अभिनेत्री जेंडाया, जो पिछले कुछ सालों में लगातार बड़ी फिल्मों और चर्चित प्रोजेक्ट्स का हिस्सा बनकर ग्लोबल स्टार बन चुकी हैं।

साल 2026 उनके करियर का बेहद खास साल साबित होने वाला है, क्योंकि इस दौरान उनकी कई बड़ी फिल्में और सीरीज रिलीज होने जा रही हैं। एक इंटरव्यू में जेंडाया ने खुलकर अपने आने वाले प्रोजेक्ट्स और भविष्य की योजनाओं पर बात की। उन्होंने कहा, ' 'मुझे उम्मीद है कि दर्शक मुझे बार-बार स्क्रीन पर देखकर बोर नहीं होंगे। मैं सच में फैंस की आभारी हूं, जो मेरे फिल्मों और मेरे करियर को सपोर्ट करते हैं। मैं अपने हर प्रोजेक्ट के लिए दर्शकों के प्यार और समर्थन की शुक्रगुजार हूं।

उन्होंने आगे कहा, ' 'इस साल दर्शक मुझे काफी ज्यादा देखने वाले हैं, क्योंकि मेरी कई फिल्में और शोज एक के एक रिलीज होने वाले हैं। इसके बाद मैं थोड़े समय के लिए गायब हो जाऊंगी, यानी ब्रेक ले लूंगी, ताकि खुद को थोड़ा समय दे सकूं और फिर नई एनर्जी के साथ वापसी कर सकूं।''

विजय गांगुली को डांस सिखाती है रुपाली की 'बेटी' आध्या, अभिनेत्री ने फराह खान को सुनाया मजेदार किस्सा

मुंबई। टेलीविजन की मशहूर अभिनेत्री रुपाली गांगुली अपने बेहतरीन अभिनय के लिए दर्शकों के दिलों में खास जगह बना चुकी हैं। हाल ही में उन्होंने अपनी निजी जिंदगी का एक खास पहलू सबके सामने साझा किया। अभिनेत्री ने टीवी सीरियल अनुपमा में एक बच्ची को गोद लिया था, वैसे ही असल जिंदगी में भी उन्होंने एक छोटी बच्ची को 'सेमी-अडॉप्ट' किया है। इस बात का खुलासा रुपाली ने मशहूर कोरियोग्राफर, निर्देशक और यूट्यूबर फराह खान के कुकिंग व्लॉग में किया था। दरअसल, हाल ही में फराह कुकिंग के लिए रुपाली की मां के वर्ली स्थित घर पहुंची थीं। वहां सभी ने खूब बातें और मस्ती की। इसी दौरान रुपाली ने अपनी छोटी 'सेमी-अडॉप्टेड' बेटी के बारे में बताया।

रुपाली ने कहा, 'हां, मैंने एक बच्ची को सेमी-अडॉप्ट किया है। उसकी मां अनीता मेरे बेटे रुद्रांश के जन्म के समय से ही हमारे परिवार के साथ हैं। तब रुद्रांश सिर्फ एक साल का था। अनीता मेरे घर में ही पली-बढ़ी है।

रुपाली ने आगे बताया कि छोटी बच्ची के जन्म के बाद उन्होंने ही उसे गोद में उठाया था। उन्होंने कहा, 'जब उसकी मां को लेबर पेन शुरू हुआ, तो मैं शूटिंग छोड़कर तुरंत भाग आई थी। मुझे लगता है कि वह मेरी अपनी बेटी ही है। मैं उसकी लीगल गार्जियन हूं और हर तरह से वह मेरी बेटी जैसी है।

उन्होंने यह भी बताया कि छोटी बच्ची का नाम आध्या है। रुपाली ने एक मजेदार किस्सा भी शेयर किया। उन्होंने कहा, 'आध्या विजय (रुपाली के भाई) को डांस के स्टेप्स सिखाती है और कहती है – 'अंकल, ऐसे नहीं, ऐसे करो।' यह देखकर बहुत मजा आता है।

व्लॉग के दौरान आध्या भी कुछ देर के लिए कैमरे के सामने आई। रुपाली ने मुस्कुराते हुए कहा, 'वह पीछे नहीं रहना चाहती थी। वह नानी के घर आना चाहती थी।

अभिनेत्री ने बताया कि आध्या कई सालों से उनकी जिंदगी का अहम हिस्सा बनी हुई है। उसके लिए उनके दिल में बहुत खास जगह है।

'वशीकरण' में सुमन का दमदार लुक, स्नेहलता वसईकर बोलीं- 'ये परंपरा और ताकत का अनोखा मेल'

मुंबई। टीवी इंडस्ट्री में महिला किरदारों को अब पहले से ज्यादा मजबूत, रहस्यमयी और प्रभावशाली तरीके से दिखाया जा रहा है। इसी कड़ी में शो 'वशीकरण-किस पर रखें विश्वास' में नजर आ रही अभिनेत्री स्नेहलता वसईकर का किरदार 'सुमन' इन दिनों चर्चा में है। यह किरदार न सिर्फ अपनी कहानी के कारण, बल्कि अपने खास लुक और अंदाज की वजह से भी दर्शकों का ध्यान खींच रहा है।

स्नेहलता वसईकर ने अपने किरदार के लुक को लेकर खुलकर बात की। उन्होंने कहा, 'सुमन का पूरा लुक बहुत सोच-समझकर तैयार किया गया है, ताकि वह एक ऐसी महिला की छवि पेश कर सके जो मजबूत होने के साथ-साथ अपनी जड़ों से भी जुड़ी हो। इस किरदार की सबसे बड़ी खासियत यही है कि इसमें परंपरा और शक्ति का संतुलन देखने को मिलता है।

उन्होंने कहा, ' 'मेरा लुक महाराष्ट्र की असली संस्कृति से प्रेरित है। पहनावे और गहनों में क्षेत्रीय पहचान साफ नजर आती है। सुमन के लुक में सबसे खास उनकी नौवारी साड़ी है, जिसे पारंपरिक महाराष्ट्रियन स्टाइल में पहना गया है। यह साड़ी मेहनत, आत्मविश्वास और अधिकार को दर्शाती है। इस साड़ी से मेरे किरदार को एक अलग ही मजबूती मिलती है, जो स्क्रीन पर साफ दिखाई देती है।

स्नेहलता ने कहा, ' 'मेरे लुक में महाराष्ट्रीयन नथ, बड़ी बिंदी और सोने के पारंपरिक गहने जैसे कई खास चीजें शामिल हैं। नथ मेरे किरदार में एक गरिमा जोड़ती है। वहीं मंगलसूत्र और लेयर्ड नेकलेस मेरे किरदार को और गहराई देते हैं, जिससे वह कहानी में और भी प्रभावशाली नजर आती है। उन्होंने कहा, ' 'मुझे सुमन का यह लुक बेहद पसंद है। यह लुक एक अलग तरह की ऊर्जा और आत्मविश्वास देता है। इस लुक के जरिए सुमन का किरदार मजबूत और सशक्त दिखता है लेकिन साथ ही उसमें एक सादगी और वास्तविकता भी बनी रहती है, जो दर्शकों को उससे जोड़ती है। अगर शो की कहानी की बात करें, तो यह महाराष्ट्र के एक दूरदराज गांव पर आधारित है। यहां सुमन एक ऐसी महिला है जिससे लोग डरते हैं और उसकी पकड़ पूरे गांव पर बनी हुई है। कहानी में एक दिलचस्प मोड़ तब आता है जब एक महिला सबके सामने सुमन का अपमान करती है और अगले ही दिन उसकी रहस्यमयी मौत हो जाती है। इसके बाद घटनाएं और भी ज्यादा रहस्यमयी और डरावनी होती चली जाती हैं

कहानी में आगे सुमन के तांत्रिक गुरु की भी संदिग्ध मौत हो जाती है।

सतिंदर सरताज के गाने ने इंटरनेट पर मचाया तहलका, अब अहाना और दानिश भी हुए इस जादू के शिकार

मुंबई। पंजाबी सिंगर सतिंदर सरताज ने फिल्म 'धुरंधर' के गाने 'जाइए सजना' की कुछ लाइन गाकर पूरे इंटरनेट पर तहलका मचा दिया था। इस गाने को जैस्मीन सैंडलास के साथ मिलकर गाया गया है। गाना रिलीज होने के बाद से सोशल मीडिया पर खूब ट्रेंड कर रहा है।

मंगलवार को अभिनेत्री अहाना कुमरा और दानिश पेंडोर 'जाइए सजना' पर खोते नजर आए। दरअसल, दोनों साथ में लॉन्ग ड्राइव पर जा रहे थे और साथ में इसी गाने पर सुर से सुर मिलाकर गाते हुए नजर आ रहे हैं। अहाना ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट किया। इसमें वे और अभिनेता दानिश पेंडोर नजर साथ में लॉन्ग ड्राइव पर जा रहे हैं। दोनों गाना 'जाइए सजना' को बजाकर सुर से सुर मिलाकर गा रहे हैं। अहाना कुमरा ने यह मजेदार वीडियो अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया।

अहाना ने लिखा, 'हम अभी एक शानदार फुटबॉलर (दानिश) के साथ रोड ट्रिप पर हैं। गाना 'जाइए सजना' सुनते हुए इस सफर का पूरा मजा ले रहे हैं। वापस आने का तो अभी कोई प्लान ही नहीं है। हम इस गाने को बार-बार सुन रहे हैं और इसकी खूबसूरती में पूरी तरह खो गए हैं।

उन्होंने आगे लिखा, 'हम बहुत खुशकिस्मत हैं कि हमें आदित्य धर, शाश्वत, सतिंदर सरताज और जैस्मिन जैसे बेहतरीन कलाकारों के समय में हैं। ये लोग संगीत के असली जादूगर हैं। 'धुरंधर' का यह गाना हमारे सबसे पसंदीदा गानों में से एक है। हम इसे दिल से एंजॉय कर रहे हैं। हमारी सिंगिंग के लिए माफ करना लेकिन हम पूरी कोशिश कर रहे हैं।

गाना 'जाइए सजना', जिसे शशवंत सजदेव ने कंपोज किया, जैस्मिन सैंडलस और सतिंदर सरताज ने इसे गाकर इंटरनेट पर तहलका मचा दिया।

भाग्यश्री ने बताया रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाने का सबसे आसान तरीका

मुंबई । अभिनेत्री भाग्यश्री अपनी फिटनेस और हेल्दी लाइफस्टाइल को लेकर सक्रिय रहती हैं। वे अक्सर सोशल मीडिया पर अपनी फिटनेस टिप्स शेयर करके लोगों को स्वस्थ जीवन के लिए प्रेरित करती रहती हैं। मंगलवार को उन्होंने रीढ़ की हड्डी के लिए एक आरामदायक एक्सरसाइज के बारे में बताया। भाग्यश्री ने अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट किया। इसमें वे जिम में नजर आ रही हैं और सभी को समझाते हुए कहती हैं, 'दबी हुई डिस्क पीठ की बहुत बड़ी समस्या बन जाती है। इससे पीठ में तेज दर्द, अकड़न और चलने-फिरने में तकलीफ होती है।

उन्होंने जिम में लटकने वाली एक्सरसाइज के बारे में जानकारी दी। उन्होंने इसे करते हुए बताया कि यह एक सरल स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज है, जो रीढ़ की हड्डी के लिए ट्रैक्शन, यानी खिंचाव का काम करती है। अभिनेत्री ने कहा, 'यह एक्सरसाइज रीढ़ को धीरे-धीरे स्ट्रेच करती है। इससे डिस्क के बीच ज्यादा जगह बन जाती है और उन पर से दवाब कम हो जाता है। इस आसान स्ट्रेच को 30 सेकंड से लेकर 1 मिनट तक करके देखिए। धीरे-धीरे महसूस कीजिए कि आपकी पीठ को कितना आराम मिल रहा है।

उन्होंने आगे सलाह दी कि जब आप इस एक्सरसाइज को अच्छे से करने लगें तो अपनी पीठ को और मजबूत बनाने के लिए थोड़ी साइकिलिंग भी शुरू कर दें। इससे लंबे समय तक बैठने से होने वाला पीठ दर्द और अकड़न काफी कम हो जाती है।

अभिनेत्री ने लिखा, 'अपनी रीढ़ को लंबा करें और डिस्क पर से दबाव हटाएं। इससे लंबे समय तक बैठने से होने वाला पीठ दर्द और अकड़न कम होगी।

भाग्यश्री की यह टिप उन लोगों के लिए बहुत उपयोगी है जो घंटों डेस्क पर काम करते हैं या लंबे समय तक बैठे रहते हैं। ऐसी साधारण, असरदार एक्सरसाइज करने के लिए शुरुआत में किसी विशेषज्ञ की देख-रेख में ही करना चाहिए। भाग्यश्री ने भले ही फिल्मों में कम काम किया हो, लेकिन अपने अभिनय से दर्शकों के दिलों में खास पहचान बनाई है। वे सोशल मीडिया पर अक्सर हेल्थ टिप्स शेयर कर सभी को हेल्दी लाइफस्टाइल अपनाने की सलाह देती रहती हैं।

युद्ध के बीच भी रिलीज होगी 'पल्लीचट्टंबी', टोविनो थॉमस ने बताई वजह

चेन्नई । दुनिया के कई हिस्सों में चल रहे तनाव और युद्ध जैसे हालात का असर अब फिल्म इंडस्ट्री पर भी साफ दिखाई देने लगा है। यह कई फिल्मों की रिलीज प्लानिंग को प्रभावित कर रहा है। कई बड़े मलयालम प्रोजेक्ट्स ने अपनी रिलीज डेट टालने का फैसला लिया है, लेकिन इसी बीच एक फिल्म ऐसी भी है जो तय समय पर ही सिनेमाघरों में आने की तैयारी में है। यह फिल्म है।

'पल्लीचट्टंबी', जिसे लेकर अभिनेता टोविनो थॉमस ने अपनी चुप्पी तोड़ी और बताया कि आखिर क्यों मेकर्स ने रिलीज को आगे नहीं बढ़ाया। आईएएनएस से बात करते हुए टोविनो थॉमस ने कहा, ' 'मौजूदा युद्ध जैसी स्थिति बेहद चिंताजनक है और इससे ज्यादा जरूरी कुछ नहीं हो सकता।

मेरे कई करीबी दोस्त और परिवार के लोग मिडिल ईस्ट में रहते हैं, जो इस समय अनिश्चितता और डर के माहौल में हैं। ऐसे में मेरे लिए फिल्म की कमाई या रिलीज से ज्यादा महत्वपूर्ण वहां के लोगों की सुरक्षा है। सिनेमा सिर्फ मनोरंजन का माध्यम है और यह कभी भी इंसानों से ऊपर नहीं हो सकता।

इजरायल ने घातक हमलों के दोषी फिलिस्तीनियों के लिए फांसी की सजा का कानून किया पारित

तेल अवीव। इजरायल की संसद ने एक विवादास्पद कानून पारित किया है, जिसके तहत सैन्य अदालतों द्वारा घातक हमलों के दोषी पाए गए फिलिस्तीनियों के लिए फांसी की सजा अनिवार्य कर दी गई है। यह कानून प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के धुर दक्षिणपंथी सहयोगियों की एक प्रमुख मांग में शामिल था।

इस कानून की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कड़ी आलोचना हुई है। विरोधियों ने इसे भेदभावपूर्ण और असंवैधानिक बताया है। आलोचकों का तर्क है कि यह कानून पहचान के आधार पर एक अलग कानूनी ढांचा तैयार करता है और मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन है।

नए कानून के तहत, हत्या के दोषी पाए गए इजरायलियों को मृत्युदंड तभी दिया जाएगा, जब यह कृत्य 'इजरायल के अस्तित्व को समाप्त करने' के इरादे से किया गया हो।

आलोचकों का कहना है कि यह प्रावधान प्रभावी रूप से यह सुनिश्चित करता है कि यह सजा असमान रूप से फिलिस्तीनियों को निशाना बनाएगी जबकि इसी तरह के अपराधों के आरोपी यहूदी इजरायलियों को इससे बाहर रखा जाएगा।

है कि फांसी की सजा सुनाए जाने के 90 दिनों के भीतर ही दी जाए, जिसमें देरी के लिए केवल सीमित आधार दिए गए हैं और क्षमादान का कोई प्रावधान नहीं है।

अदालतों के पास आजीवन कारावास की सजा देने का विकल्प बरकरार है लेकिन केवल विशेष परिस्थितियों में ही मान्य होगा।

गौरतलब है कि इजरायल ने 1954 में हत्या के लिए मृत्युदंड समाप्त कर दिया था। नागरिक मुकदमे के बाद दी गई एकमात्र फांसी 1962 में एडॉल्फ आइचमैन की थी, जो होलोकॉस्ट में शामिल एक प्रमुख व्यक्ति था।

हालांकि कब्जे वाले वेस्ट बैंक में सैन्य अदालतों के पास पहले से ही फिलिस्तीनी दोषियों को मृत्युदंड देने का अधिकार था लेकिन ऐसी सजा कभी लागू नहीं की गई थी।

इस विधेयक को धुर दक्षिणपंथी राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री इतामार बेन-ग्वीर का जोरदार समर्थन प्राप्त था, जिन्होंने मतदान से पहले फांसी के फंदे के आकार के लैपल पिन पहनकर ध्यान आकर्षित किया।

विधेयक के पारित होने के बाद यायर लैपिड की येस एटिड, अरब-बहुसंख्यक हदाश-ताअल और वामपंथी डेमोक्रेट्स पार्टी जैसी विभिन्न विपक्षी पार्टियों के साथ-साथ कई मानवाधिकार संगठनों ने उच्च न्यायालय में इस कानून को चुनौती देने का मन बनाया है।

टाइम्स ऑफ इजरायल द्वारा नेसेट की राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के सदस्य और इस कानून के सबसे कड़े आलोचकों में से एक डेमोक्रेट सांसद गिलाद कारिव के हवाले से कहा गया है, 'यह एक अनैतिक कानून है जो एक यहूदी और लोकतांत्रिक राज्य के रूप में इजरायल के मूलभूत मूल्यों और अंतरराष्ट्रीय कानून के उन प्रावधानों के विपरीत है, जिनका पालन करने का इजरायल ने वादा किया है।

होर्मुज के रास्ते नहीं मिल रहा तो अमेरिका से खरीदें तेल: ट्रंप

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए एक प्रस्ताव रखा है। मंगलवार को ट्रुथ पोस्ट में उन्होंने जेट ईंधन की कमी से जूझ रहे देशों से कहा की कि अगर होर्मुज से तेल नहीं मिल पा रहा तो अमेरिका का रुख कर सकते हैं। दो अलग-अलग पोस्ट्स में उन्होंने फ्रांस और ब्रिटेन को जबरदस्त फटकार भी लगाई है।

ट्रंप ने तेल को लेकर कहा, 'ब्रिटेन जैसे देश (जिसने ईरान को सत्ताच्युत करने की कार्रवाई में शामिल होने से इनकार कर दिया था) और जो स्ट्रेट ऑफ होर्मुज के जरिए जेट फ्यूल नहीं हासिल कर पा रहे हैं, उनको मैं दो नसीहत दूंगा।

इसके बाद ट्रंप ने वो दो नसीहतें देते हैं। उन्होंने आगे लिखा, 'पहली, चाहूंगा कि उन्हें अमेरिका से तेल खरीदना चाहिए क्योंकि अमेरिका के पास पर्याप्त तेल है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने दूसरी नसीहत हौसला और हिम्मत दिखाने की कही। लिखा कि मेरी दूसरी सलाह है कि देर से ही सही लेकिन थोड़ी हिम्मत दिखाएं, होर्मुज जाएं और अपना हक ले लें।

ट्रंप आगे लिखते हैं कि आपको खुद के लिए लड़ना सीखना होगा। दावा किया कि हमेशा अमेरिका उनका साथ देने के लिए मौजूद नहीं रहेगा, ठीक वैसे ही जैसे आप उसके साथ खड़े नहीं हैं।

दुनिया को ललकारते और अपनी पीठ थपथपाते हुए ट्रंप ने अंत में लिखा, 'ईरान कमजोर हो चुका है, वो तबाह कर दिया गया है। सबसे मुश्किल काम हमने कर दिया है। अब आप जाकर अपना तेल हासिल करने का हौसला दिखाना चाहिए। इसकी अगली पोस्ट में ट्रंप ने फ्रांस को फटकार लगाई है। नाराजगी जाहिर करते हुए उसे कोसा है। लिखा- फ्रांस ने इजरायल जा रहे उन विमानों को अपने इलाके के ऊपर से उड़ने नहीं दिया, जो सैन्य सामान से लदे हुए थे। 'ईरान के कसाई' को खत्म करने के मामले में फ्रांस बिल्कुल भी मददगार साबित नहीं हुआ, जिसे आखिरकार हमने मार गिराया और इस रवैए को अमेरिका याद रखेगा ट्रंप ने उन यूरोपीय सहयोगियों के प्रति अपनी नाराजगी लगातार जाहिर की है।

ईरान के लोग हवाई हमलों और जरूरी अपडेट को ट्रैक करने के लिए इस ऐप का कर रहे इस्तेमाल

तेहरान। ईरान में 30 दिनों से ज्यादा समय तक इंटरनेट बंद है। ईरानी लोग हवाई हमलों और जरूरी अपडेट को ट्रैक करने के लिए अलग मैसेजिंग ऐप का इस्तेमाल कर रहे हैं। अमेरिकी मीडिया सीएनएन ने बताया कि ईरान के लोग टेलीग्राम के जरिए एक-दूसरे के साथ मैसेजिंग या जानकारी साझा कर रहे हैं। इसके अलावा इंडोनेशियाई मीडिया आउटलेट ने बताया है कि ईरान के लोग एयरस्ट्राइक और अन्य जरूरी जानकारी के लिए माहसा अलर्ट ऐप का इस्तेमाल कर रहे हैं। सीएनए ने कहा बताया कि ईरान में हजारों लोग जरूरी जानकारी शेयर करने के लिए एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग ऐप टेलीग्राम का इस्तेमाल कर रहे हैं। इस पर लोग जानकारी साझा कर रहे हैं कि एयरस्ट्राइक कहां हुए, किन इलाकों में बिजली चली गई और कितना नुकसान हुआ।

ईरान में होने वाले एयरस्ट्राइक के लिए कोई ऑफिशियल चेतावनी सिस्टम न होने के कारण, इसके नागरिक खुद ही समस्या का समाधान कर रहे हैं। ईरानी नागरिक अपना खुद का क्राउडसोर्स्ड एयर अटैक वॉर्निंग सिस्टम बनाते हैं। इंडोनेशिया के डिजिटल मीडिया पोर्टल वीओआई के अनुसार, ईरान में जब मिलिट्री हमलों या मूवमेंट से जुड़ी पब्लिक वॉर्निंग देने के लिए कोई आधिकारिक सरकारी सिस्टम नहीं था, तब महसा अलर्ट नाम का प्लेटफॉर्म एक इमरजेंसी सॉल्यूशन के तौर पर सामने आया है।

ईरान के डिजिटल अधिकार कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवकों ने इस ऐप को तैयार किया है। यह ऐप हमलों और सैन्य गतिविधियों के स्थानों को मैप करने के लिए जनता, सोशल मीडिया और मैनुअल सत्यापन से प्राप्त डेटा पर आधारित है। ऑफिशियल मिलिट्री वॉर्निंग सिस्टम के उलट, महसा अलर्ट पूरी तरह से रियल-टाइम नहीं है। हालांकि, यह एप्लिकेशन हमलों या खतरों से जुड़ी वेरिफाइड जानकारी होने पर भी नोटिफिकेशन भेजता है। हर डेटा अपडेट बहुत छोटा रखा जाता है, एवरेज सिर्फ 100केबी, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कनेक्शन अनस्टेबल या लिमिटेड होने पर भी यूजर्स जानकारी हासिल कर सकें। इंडोनेशियाई न्यूज पोर्टल ने बताया कि सही जानकारी बनाए रखने के लिए, महसा अलर्ट के पीछे की टीम डेटा दिखाने से पहले अच्छी तरह वेरिफिकेशन करती है।

यहूदी कमीडियन ने न्यूयॉर्क मेयर ममदानी के पासओवर इवेंट में शामिल होने की वजह से छोड़ा शो

न्यूयॉर्क। यहूदी कमीडियन मोर्दकै रोसेनफेल्ड ने सोमवार को कहा कि वह लोअर मैनहट्टन में होने वाले सालाना पासओवर-थीम वाले इवेंट में शामिल नहीं होंगे, क्योंकि उन्हें पता चला है कि न्यूयॉर्क शहर के मेयर जोहरान ममदानी भी इसमें शामिल होने वाले हैं। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी के जरिए इसकी जानकारी दी।

रोसेनफेल्ड को प्रोफेशनली 'मोडी' नाम से जाना जाता है। टाइम्स ऑफ इजरायल ने बताया कि यहूदी कमीडियन मोडी रोसेनफेल्ड को जब पता चला कि न्यूयॉर्क शहर के मेयर जोहरान ममदानी इस कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे हैं, तो वह पासओवर इवेंट से बाहर हो गए।

मेयर ममदानी मैनहट्टन में सिटी वाइनरी में आयोजित इवेंट में भाषण दे रहे हैं। वहीं कमीडियन मोडी इजरायली-अमेरिकी हैं, जो इस कार्यक्रम में अपना परफॉर्म करने वाले थे। अपने इंस्टाग्राम स्टोरी में मोडी ने कहा कि उन्हें आज तक नहीं बताया गया था कि ममदानी इस इवेंट में हिस्सा ले रहे हैं।

दरअसल, ममदानी इजरायल के नीतियों और फिलिस्तीन में हमास के खिलाफ नेतन्याहू सरकार की कार्रवाई के खिलाफ रहे हैं। वह इजरायल पर आर्थिक और राजनीतिक दबाव बनाने वाले बीडीएस (बहिष्कार, विनिवेश, प्रतिबंध) आंदोलन के समर्थक भी रहे हैं। ममदानी ने अपने मेयर चुनाव कैंपेन के दौरान इजरायल विरोधी विचारों के लिए पहले से ही आलोचनाओं का सामना कर रहे थे। इजरायल नेशनल न्यूज ने बताया कि उन्होंने मेयर बनने के बाद अपने ऑफिस के पहले दिन ही इजरायल से जुड़े एग्जीक्यूटिव ऑर्डर रद्द कर दिए, जो उनके पहले के एरिक एडम्स ने जारी किए थे।

ममदानी ने जून 2025 के जिस ऑर्डर को रद्द किया उसमें इंटरनेशनल होलोकॉस्ट रिमेंबरेंस अलायंस (आईएचआरए) की एंटीसेमिटिज्म की वर्किंग डेफिनिशन को औपचारिक रूप से मान्यता दी गई थी।

इसके साथ ही, उन्होंने एक अन्य आदेश को भी रद्द कर दिया है। इस आदेश के माध्यम से निर्वाचित मेयर्स और एजेंसी के कर्मचारियों पर इजरायल का बहिष्कार करने या वहां से निवेश वापस लेने (डिसइन्वेस्टमेंट) पर प्रतिबंध लगाया गया था।

इजरायल नेशनल न्यूज के अनुसार, पद संभालने के बाद से ममदानी को कई एंटीसेमिटिज्म विवादों का सामना करना पड़ा है। हाल ही में आई एक रिपोर्ट से पता चला है कि ममदानी की पत्नी, रमा दवाजी ने कई सोशल मीडिया पोस्ट को लाइक किया था।

जरूरी मिनरल्स में चीन के दबदबे ने बढ़ाई अमेरिका की चिंता, समुद्र तल पर माइनिंग को लेकर चर्चा शुरू

वाशिंगटन। जरूरी मिनरल्स में चीन के दबदबे को लेकर अमेरिका की चिंता काफी बढ़ गई है। यही वजह है कि अमेरिका की दिलचस्पी गहरे समुद्र में माइनिंग में फिर से बढ़ रही है। हालांकि, विशेषज्ञों ने कानून बनाने वालों को चेतावनी दी है कि लहरों के नीचे के इकोलॉजिकल रिस्क को अभी भी ठीक से समझा नहीं गया है।

कांग्रेस की सुनवाई में सीनेटरों और इंडस्ट्री के नेताओं ने कोबाल्ट, निकल और कॉपर जैसे मिनरल्स के लिए सप्लाई चेन को सुरक्षित करने की जरूरत पर जोर दिया, जो डिफेंस सिस्टम, क्लीन एनर्जी और एडवांस्ड टेक्नोलॉजी के लिए जरूरी हैं।

कांग्रेस के सदस्य स्कॉट फ्रैंकलिन ने कहा कि ये संसाधन हमारे देश भर की इंडस्ट्रीज के लिए बहुत जरूरी हैं और चेतावनी दी कि चीन जैसे दुश्मन बेशक अमेरिका को कमजोर करने की कोशिश करेंगे। इंडस्ट्री के अधिकारियों ने तर्क दिया कि अमेरिका के पास आगे बढ़ने के लिए टेक्नोलॉजी और रेगुलेटरी फ्रेमवर्क दोनों हैं। द मेटल्स कंपनी के सीईओ जेरार्ड बैरन ने लॉमेकर्स से कहा कि 'हम रिस्क को मैनेज करने के लिए काफी कुछ जानते हैं।' इस दौरान उन्होंने दशकों की रिसर्च और हाल की तरक्की की ओर इशारा किया, जो एनवायरनमेंटल डिस्टर्बेंस को कम करती हैं।

बैरन ने कहा कि समुद्र की गहराइयों में मौजूद खनिज गांठें अमेरिका की आयात पर निर्भरता को काफी हद तक कम कर सकती हैं। उन्होंने बताया कि इनमें ऐसे धातु पाए जाते हैं जो रक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों के लिए बेहद अहम हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आधुनिक तकनीकें समुद्र तल पर लगभग अदृश्य तरंगों के साथ काम करती हैं और पर्यावरण पर असर को बहुत सीमित क्षेत्र तक ही रखती हैं। हालांकि, इसे लेकर वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि माइनिंग में तेजी लाने की कोशिश शायद जल्दबाजी होगी।

डीप-सी इकोलॉजिस्ट डॉ. एस्ट्रिड लिटनर ने कहा, 'डीप-सी माइनिंग के जिम्मेदार विकास के लिए सबसे अच्छा उपलब्ध डेटा काफी नहीं है।' बातचीत के दौरान उन्होंने बायोडायवर्सिटी, इकोसिस्टम के काम और लंबे समय के असर पर बेसलाइन डेटा में कमियों के बारे में बताया।

उन्होंने चेतावनी दी कि माइनिंग से बायोडायवर्सिटी का नुकसान और संभावित विलुप्ति हो सकती है, जिसके असर लंबे समय तक रह सकते हैं या जिन्हें ठीक नहीं किया जा सकता।

सभी पार्टियों के सांसदों ने अनिश्चितता के पैमाने को माना। रैंकिंग सदस्य गेबे एमो ने कहा कि समुद्र धरती पर सबसे कम समझे जाने वाले इकोसिस्टम में से एक है और गलत कदमों के नतीजे लंबे समय तक रह सकते हैं और कुछ मामलों में जिन्हें ठीक नहीं किया जा सकता।

सुनवाई में इस बात पर भी जोर दिया गया कि समुद्र के कितने कम हिस्से की मैपिंग या खोज की गई है। सेल्ड्रोन के ब्रायन कॉनन ने कहा कि 'अमेरिका ईईजेड का सिर्फ 54 फीसदी हिस्सा ही मैप किया गया है, जिससे अमेरिकी पानी के बड़े हिस्से बिना शोध के रह गए हैं।

पुराने एक्सप्लोरर रॉबर्ट बैलार्ड ने सांसदों को बताया कि इंसानों ने अभी तक सिर्फ गहरे समुद्र का 0.001 फीसदी ही देखा है ।

वियतनाम की राजधानी में 2026 में अब तक कोविड-19 के 29 मामले सामने आए

हनोई । वियतनाम की राजधानी हनोई में वर्ष की शुरुआत से अब तक कोविड-19 के 29 मामले दर्ज किए गए हैं जबकि किसी के मौत की सूचना नहीं मिली है।

हनोई सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल ने बताया कि 20 से 27 मार्च के बीच 12 कम्यून और वार्ड में 17 नए कोविड-19 संक्रमण दर्ज किए गए, जबकि पिछले सप्ताह केवल तीन मामले सामने आए थे।

बीए.3.2 वैरिएंट के संबंध में, जिसे वर्तमान में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मॉनिटर किया जा रहा है, स्थानीय स्वास्थ्य विभाग ने जनता से सावधान रहने के साथ घबराने से बचने की सलाह दी। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, यह वैरिएंट लैब स्थितियों में कुछ एंटीजनिक बदलाव और इम्यून एस्केप विशेषताएँ दिखाता है। स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों ने लोगों से भीड़भाड़ वाले या बंद स्थानों में मास्क पहनने, नियमित सफाई और लक्षण बिगड़ने पर चिकित्सकीय देखभाल लेने जैसे बचाव उपाय बनाए रखने की सलाह दी। हाल ही में एक नया कोविड-19 वैरिएंट, जिसे अनौपचारिक रूप से 'सिकाडा' कहा गया है, कई क्षेत्रों में सीमित समूहों में पाया गया है, जिससे वैज्ञानिक इसके लक्षणों, संक्रामक क्षमता और संभावित प्रभाव की करीबी निगरानी कर रहे हैं। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, कोविड-19 एक संक्रामक रोग है, जिसे सार्स सीओवी-2 वायरस पैदा करता है।

इस वायरस से संक्रमित अधिकांश लोग हल्के से मध्यम श्वसन रोग का अनुभव करेंगे और बिना विशेष उपचार के ठीक हो जाएंगे। हालांकि, कुछ लोग गंभीर रूप से बीमार हो सकते हैं और उन्हें चिकित्सीय सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

बुजुर्ग और हृदय रोग, मधुमेह, पुरानी श्वसन बीमारी या कैंसर जैसी पूर्व मौजूद स्वास्थ्य समस्याओं वाले लोग गंभीर बीमारी विकसित होने की अधिक संभावना रखते हैं। किसी भी उम्र में कोई भी व्यक्ति कोविड-19 से संक्रमित हो सकता है और गंभीर रूप से बीमार या मृत्यु के जोखिम में रह सकता है।

संक्रमण को रोकने और धीमा करने का सबसे अच्छा तरीका है रोग और वायरस के फैलाव के बारे में अच्छी जानकारी रखना। दूसरों से कम से कम एक मीटर की दूरी बनाए रखें, ठीक से फिट किया हुआ मास्क पहनें, हाथ धोएं या अल्कोहल आधारित हैंड रब का नियमित उपयोग करें। जब आपकी बारी आए तो टीका लगवाएं और स्थानीय दिशानिर्देशों का पालन करें। वायरस संक्रमित व्यक्ति के मुंह या नाक से निकलने वाले छोटे तरल कणों के माध्यम से फैल सकता है, जब वह खांसता, छींकता, बोलता, गाता या सांस लेता है। ये कण बड़े श्वसन बूंदों से लेकर छोटे एरोसोल तक हो सकते हैं। श्वसन शिष्टाचार का पालन करना महत्वपूर्ण है, जैसे कि खांसते समय कोहनी को मोड़कर खांसना और यदि आप अस्वस्थ महसूस करें तो घर पर रहकर आत्म-एकांत अपनाना चाहिए जब तक आप पूरी तरह स्वस्थ न हो जाएं।

अमेरिका कुछ हफ्तों में ईरान ऑपरेशन कर देगा खत्म: मार्को रुबियो

वाशिंगटन। अमेरिकी सरकार की तरह से बार-बार इस बात को दोहराया जा रहा है कि वह लक्ष्य पूरा करने में तय समय से आगे चल रहे हैं और जल्द ही खत्म कर देंगे। अब अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने कहा कि अमेरिका को उम्मीद है कि वह ईरान के खिलाफ अपनी सैन्य कार्रवाई का लक्ष्य महीनों में नहीं, बल्कि हफ्तों में पूरा कर लेगा।

इस बीच अमेरिकी विदेश सचिव ने लड़ाई खत्म करने के लिए वाशिंगटन की शर्तें बताईं और तेहरान को होर्मुज स्ट्रेट पर कंट्रोल करने की कोशिश के खिलाफ चेतावनी दी।

स्थानीय समयानुसार, सोमवार को अल जजीरा को दिए एक इंटरव्यू में रुबियो ने कहा कि सैन्य ऑपरेशन जारी रहने के बावजूद, 'ईरान और अमेरिका के अंदर कुछ लोगों के बीच खासकर बिचौलियों के जरिए मैसेज और कुछ सीधी बातचीत चल रही थी।

उन्होंने जोर देकर कहा कि वॉशिंगटन की मुख्य मांगें वैसी ही हैं, 'ईरानी सरकार के पास कभी भी न्यूक्लियर हथियार नहीं हो सकते और उन्हें आतंकवाद को स्पॉन्सर करना बंद करना होगा और उन्हें ऐसे हथियार बनाना बंद करना होगा जो उनके पड़ोसियों के लिए खतरा बन सकते हैं।

रुबियो ने कहा कि अमेरिकी सेना अपने बताए गए मकसद को पाने में बहुत आगे या तय समय से आगे है, जिसमें ईरान की एयर फोर्स और नेवी को खत्म करना और 'उनके पास मौजूद मिसाइल लॉन्चर की संख्या में काफी कमी शामिल है।

उन्होंने कहा, 'हम ये मकसद, हफ्तों में हासिल कर लेंगे, महीनों में नहीं।' उन्होंने साफ किया कि होर्मुज स्ट्रेट पर कंट्रोल करने की ईरान की कोई भी कोशिश मंजूर नहीं होगी। दुनिया का कोई भी देश इसे स्वीकार नहीं कर सकता है।

रुबियो ने चेतावनी दी कि ऐसा कदम दूसरे देशों के लिए अंतरराष्ट्रीय जलमार्ग पर दावा करने का एक उदाहरण बनेगा। रुबियो ने आगे कहा, 'अमेरिका यह शर्त नहीं मानेगा। वे जो मांग रहे हैं, वह एक गैर-कानूनी शर्त है। ऐसा बिल्कुल नहीं होने वाला है। उन्होंने कहा कि स्ट्रेट किसी न किसी तरह से खुला रहेगा, या तो ईरान के अंतरराष्ट्रीय कानून मानने से या देशों के एक साथ आकर कार्रवाई करने से। रुबियो ने ईरान पर पूरे इलाके में आवासीय और आर्थिक इंफ्रास्ट्रक्चर को टारगेट करने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा, 'उन्होंने दूतावास, डिप्लोमैटिक फैसिलिटी, एयरपोर्ट, एनर्जी इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमला किया है।

भारतीय नौसेना का युद्धपोत तारागिरी, तुरंत देगा खतरों का मुंहतोड़ जवाब

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना को एक और नवीनतम स्टील्थ युद्धपोत, 'तारागिरी' मिलने जा रहा है। मंगलवार को साझा की गई एक जानकारी में नौसेना ने बताया कि इस युद्धपोत को 3 अप्रैल को कमीशन किया जाएगा।

विशाखापत्तनम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह युद्धपोत, 'तारागिरी' को नौसेना में शामिल करेंगे। यह युद्धपोत सुपरसोनिक मिसाइलों से लैस है। ये मिसाइल सतह से सतह पर मार कर सकती हैं। इसमें मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें और एक विशेष पनडुब्बी रोधी युद्ध प्रणाली भी है। अत्याधुनिक युद्ध प्रबंधन प्रणाली के चलते युद्धपोत का चालक दल पलक झपकते ही खतरों का जवाब दे सकता है। इन युद्धक क्षमताओं के साथ साथ तारागिरी मानवीय संकटों के समय आपदा राहत में भी बड़ी मदद कर सकता है। इसकी अनुकूल मिशन प्रोफाइल इसे उच्च-तीव्रता वाले युद्ध से लेकर मानवीय सहायता और आपदा राहत तक हर चीज के लिए आदर्श बनाती है। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, यह युद्धपोत एक बेहद शक्तिशाली प्लेटफॉर्म है। तारागिरी युद्धपोत 6,670 टन का है और इसमें स्वदेशी शिपयार्डों की परिष्कृत इंजीनियरिंग क्षमताओं का प्रतीक है।

मुंबई स्थित मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) द्वारा निर्मित यह युद्धपोत अपने पूर्ववर्ती डिजाइनों की तुलना में एक पीढ़ीगत विकास का प्रतिनिधित्व करता है।

इसके निर्माण में 75 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री का उपयोग किया गया है। गौरतलब है कि सोमवार 30 मार्च को ही भारतीय नौसेना में युद्धपोत, दूनागिरी शामिल किया गया है। यह एक बहुमुखी बहु-मिशन प्लेटफॉर्म हैं, जिन्हें समुद्री क्षेत्र में वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए डिजाइन किया गया है।

दूनागिरी, पूर्व में भारतीय नौसेना के बेड़े का हिस्सा रहे लिएंडर श्रेणी के फ्रिगेट आईएनएस दूनागिरी का नवीनतम स्वरूप है। यह अत्याधुनिक फ्रिगेट नौसेना डिजाइन, स्टील्थ, मारक क्षमता, स्वचालन और उत्तरजीविता में अभूतपूर्व प्रगति का प्रतीक है। अन्य कई युद्धपोतों की तुलना में इसमें उन्नत हथियार और सेंसर लगे हैं। ये युद्धपोत संयुक्त डीजल या गैस (सीओडीओजी) प्रणोदन संयंत्रों से लैस हैं।

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, सीएम योगी आदित्यनाथ सहित कई मुख्यमंत्रियों ने दी महावीर जयंती की शुभकामनाएं

नई दिल्ली। पूरे देश में मंगलवार को श्रद्धा और आस्था के साथ महावीर जयंती मनाई जा रही है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, योगी आदित्यनाथ सहित कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि इनके विचार पीढ़ियों को मार्ग दिखाते रहेंगे।

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, 'समस्त देशवासियों को महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं। त्याग, सत्य, अहिंसा के प्रतीक भगवान महावीर ने अपनी तपस्या से संपूर्ण मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उनके विचार पीढ़ियों को मार्ग दिखाते रहेंगे।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, 'जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की पावन जयंती की सभी श्रद्धालुओं एवं प्रदेश वासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और करुणा के शाश्वत सिद्धांतों से संपूर्ण विश्व को आलोकित करने वाली भगवान महावीर की शिक्षाएं मानवता के लिए अमर पाथेय हैं।

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, 'शांति, त्याग और संयम के प्रतीक भगवान महावीर की जयंती पर समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं! आइए, हम सब मिलकर उनके 'अहिंसा परमो धर्म' और 'जियो और जीने दो' के संदेश को आत्मसात करें और एक बेहतर समाज का निर्माण करें।

संक्षिप्त खबर

तमिलनाडु चुनावों के बाद नीलगिरि तहर की जनगणना की संभावना, वन विभाग नई तकनीक व प्रशिक्षण के साथ कर रहा तैयारी

चेन्नई । तमिलनाडु विधानसभा चुनावों को देखते हुए तमिलनाडु वन विभाग तीसरी नीलगिरि तहर जनगणना को स्थगित कर सकता है। अधिकारियों ने अंतिम मंजूरी मिलने के बाद अब 28 अप्रैल से 1 मई के बीच जनगणना कराने की योजना बनाई है। चार दिवसीय जनगणना, जो वन्यजीव निगरानी का एक महत्वपूर्ण पहल है, तमिलनाडु के राज्य पशु लुप्तप्राय नीलगिरि तहर के कई आवासों में आयोजित होने की उम्मीद है। अधिकारियों ने संकेत दिया है कि चुनाव प्रक्रिया समाप्त होने के बाद इस कार्य को कुशलतापूर्वक संचालित करने के लिए तैयारियां पहले से ही चल रही हैं।

इन तैयारियों के तहत, विभाग जनगणना में भाग लेने वाले कर्मियों के लिए एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेगा। कर्मचारियों को आधुनिक डेटा संग्रहण तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिसमें 'वरुदाई' नामक विशेष रूप से विकसित मोबाइल एप्लिकेशन का उपयोग भी शामिल है।

'वरुदाई' शब्द का उल्लेख प्राचीन संगम साहित्य में मिलता है और परंपरागत रूप से इसका प्रयोग नीलगिरि तहर को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जो इस क्षेत्र में इस प्रजाति के सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्व को दर्शाता है। अधिकारियों ने बताया कि प्रतिभागियों की अंतिम सूची जल्द ही जारी कर दी जाएगी और वन विभाग को इस कार्य के लिए उपयुक्त कर्मचारियों को नामित करने के निर्देश पहले ही जारी कर दिए गए हैं। राज्यभर में कुल 177 जनगणना ब्लॉक चिन्हित किए गए हैं, जिनमें अम्बासमुद्रम जैसे महत्वपूर्ण आवास क्षेत्र शामिल हैं, जहां हाल ही में इस प्रजाति को प्रत्यक्ष रूप से देखा गया है। जनगणना में सटीकता सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों का संयोजन अपनाया जाएगा। गणना-आधारित विधि के अंतर्गत प्रशिक्षित कर्मी निर्दिष्ट क्षेत्रों के भीतर पशुओं की प्रत्यक्ष दृश्य गणना करेंगे। इसके अतिरिक्त, दोहरी पर्यवेक्षक विधि का उपयोग किया जाएगा, जिसमें एक दूसरी टीम स्वतंत्र रूप से उसी क्षेत्र का सर्वेक्षण करके प्रारंभिक निष्कर्षों की पुष्टि और पुनर्मूल्यांकन करेगी। नीलगिरि तहर की जनगणना जनसंख्या के रुझानों की निगरानी करने और संरक्षण प्रयासों को निर्देशित करने के लिए समय-समय पर आयोजित की जाती रही है। पिछले सर्वेक्षणों से इनकी संख्या में लगातार वृद्धि का संकेत मिला है। 2024 की जनगणना में किशोरों सहित 1,031 बकरे दर्ज किए गए थे ।

चुनाव आयोग ने असम, केरल और पुडुचेरी में ईवीएम रैंडमाइजेशन की दूसरी प्रक्रिया पूरी की

नई दिल्ली। भारत निर्वाचन आयोग ने असम, केरल और पुडुचेरी विधानसभा चुनावों के लिए ईवीएम-वीवीपीएटी मशीनों का दूसरा रैंडमाइजेशन पूरा कर लिया है। यह प्रक्रिया पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए की गई है।

चुनाव आयोग ने 15 मार्च 2026 को असम, केरल, पुडुचेरी, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल की विधानसभाओं के आम चुनावों और छह राज्यों में उपचुनावों का कार्यक्रम घोषित किया था। इन चुनावों में मतदान 9 अप्रैल 2026 को होना है, जबकि वोटों की गिनती 4 मई 2026 को होगी।

ईवीएम प्रबंधन प्रणाली (ईवीएम मैनेजमेंट सिस्टम) के माध्यम से दो चरणों वाली रैंडमाइजेशन प्रक्रिया अपनाई जाती है। पहले चरण में जिला-स्तरीय गोदामों से मशीनों को विधानसभा क्षेत्रों में रैंडम आधार पर आवंटित किया जाता है। दूसरे चरण में विधानसभा क्षेत्र स्तर से मतदान केंद्रों तक रैंडम तरीके से आवंटन किया जाता है।

आयोग के अनुसार, राष्ट्रीय और राज्य-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में जिला निर्वाचन अधिकारियों (डीईओ) द्वारा पहला रैंडमाइजेशन पहले ही पूरा किया जा चुका था। इसमें लगभग 8.85 लाख ईवीएम इकाइयों (बैलेट यूनिट, कंट्रोल यूनिट और वीवीपीएटी) को चुनावों के लिए आवंटित किया गया।

अब असम, केरल और पुडुचेरी की विधानसभाओं के आम चुनावों और गोवा, कर्नाटक, नागालैंड और त्रिपुरा में 9 अप्रैल को होने वाले उपचुनावों के लिए दूसरा रैंडमाइजेशन पूरा हो गया है। यह प्रक्रिया संबंधित रिटर्निंग अधिकारियों (आरओ) द्वारा चुनाव लड़ रहे उम्मीदवारों की उपस्थिति में ईवीएम प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से की गई।

चुनाव आयोग ने स्पष्ट किया कि पहले और दूसरे रैंडमाइजेशन में शामिल सभी ईवीएम और वीवीपीएटी की सूची चुनाव लड़ रहे सभी उम्मीदवारों के साथ साझा की जाएगी। इससे प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता बनी रहेगी।

तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल की विधानसभाओं के आम चुनावों और शेष दो राज्यों में होने वाले उपचुनावों के लिए उम्मीदवारी वापस लेने की अंतिम तिथि के बाद दूसरे रैंडमाइजेशन की प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

मुंबई में 25 दिन तक 'डिजिटल अरेस्ट' कर रिटायर्ड अधिकारी से ठगे 1.57 करोड़ रुपए

मुंबई । मुंबई के अंधेरी में डीएन नगर इलाके के 69 वर्षीय एक सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी को 25 दिनों तक 'डिजिटल अरेस्ट' रखा गया। इसके बाद पुलिस तथा अदालत के अधिकारियों का रूप धरकर आए साइबर अपराधियों ने उनसे 1.57 करोड़ रुपए की ठगी कर ली।

आरोपियों ने वीडियो कॉल के जरिए एक नकली अदालती सुनवाई भी आयोजित की और पीड़ित को डराने-धमकाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय के एक पूर्व न्यायाधीश के नाम का इस्तेमाल किया।

मुंबई पुलिस के अनुसार, पीड़ित की शिकायत पर त्वरित कार्रवाई करते हुए साइबर सेल ने अशोक पाल नामक एक ऑटो-रिक्शा चालक को गिरफ्तार किया, जिसने इस रैकेट में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आरोप है कि उसने कमीशन के बदले में जालसाजों को अपने बैंक खाते का इस्तेमाल करके धोखाधड़ी की रकम को ट्रांसफर करने की अनुमति दी थी। पुलिस ने बताया कि घटना 6 दिसंबर, 2025 को शुरू हुई, जब पीड़ित को संजय कुमार गुप्ता नाम के एक व्यक्ति का फोन आया, जिसने खुद को दूरसंचार विभाग का अधिकारी बताया। फोन करने वाले ने आरोप लगाया कि पीड़ित के मोबाइल नंबर से आपत्तिजनक एमएमएस संदेश भेजे जा रहे हैं और बांद्रा क्राइम ब्रांच में उसके खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

इसके बाद कॉल प्रदीप सावंत नाम के एक अन्य व्यक्ति को ट्रांसफर कर दी गई, जिसने खुद को पुलिस अधिकारी बताया। उसने पीड़ित को बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) स्थित पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट करने के लिए कहा। जालसाजों ने पीड़ित पर मनी लॉन्ड्रिंग मामले में संलिप्तता का आरोप लगाया। उन्होंने भय और दहशत फैलाने के लिए विजय खन्ना नामक एक अन्य अधिकारी द्वारा की जा रही कथित जांच का भी हवाला दिया।

उन्होंने अपने दावों को वैध साबित करने के लिए, आरोपियों ने वीडियो कॉल के माध्यम से एक फर्जी अदालत का मंच तैयार किया और उसे भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश बीएस गावई की देखरेख में चल रही कार्यवाही के रूप में प्रस्तुत किया।

पीड़ित को धमकी दी गई कि यदि उसने सहयोग नहीं किया तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी और उसे तुरंत गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

श्रीनगर में बारिश के बावजूद ट्यूलिप गार्डन में पर्यटकों की रौनक, आंकड़े 1.69 लाख के पार पहुंचे

श्रीनगर । श्रीनगर का ट्यूलिप गार्डन इन दिनों पूरी तरह से पर्यटकों से गुलजार है। पिछले 14 दिनों में यहां भारी संख्या में लोग घूमने आए हैं। बगीचे में आए विजिटर्स की संख्या 14वें दिन की शाम तक 1,69,100 रही, जो खराब मौसम और बारिश के बावजूद काफी उत्साहजनक है।

सहायक पुष्प कृषि अधिकारी इमरान अहमद ने बताया कि बारिश और रमजान के बावजूद पर्यटकों की संख्या काफी बेहतर रही। हर गुजरते दिन के साथ पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है। स्थानीय ही नहीं बल्कि देश-विदेश से भी बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस बार करीब एक लाख स्थानीय पर्यटक, 68 हजार राष्ट्रीय पर्यटक और 400 से ज्यादा विदेशी पर्यटक भी ट्यूलिप गार्डन की खूबसूरती देखने पहुंचे। गार्डन के फूलों की प्रजातियां और प्राकृतिक सौंदर्य ने सभी का दिल जीत लिया। पहले सप्ताह लगातार बारिश होने के बावजूद लोग बगीचे का आनंद लेने पहुंचे। पिछले दो दिनों से फिर बारिश हो रही है लेकिन अच्छी बात यह है कि फूलों की फसल को कोई नुकसान नहीं हुआ। उनका कहना है कि अगर मौसम अच्छा रहता है तो यह ट्यूलिप शो कम से कम 30 दिनों तक जारी रहेगा।

वहीं, गुजरात से आए टूरिस्ट देव पटेल ने बताया कि उन्होंने यहां अलग-अलग रंग के फूल देखे और यह उनके लिए बहुत ही अलग और शानदार अनुभव रहा। उन्होंने कहा, 'इतना सुंदर नजारा मैंने पहले कभी नहीं देखा। हर किसी को एक बार जरूर यहां आना चाहिए क्योंकि कश्मीर नहीं देखा तो फिर क्या देखा।' उनकी तरह कई पर्यटक फूलों के विविध प्रकार और बगीचे की खूबसूरती का आनंद लेने आए हैं। एक महिला पर्यटक श्वेता पटेल ने भी ट्यूलिप गार्डन की तारीफ की। उन्होंने कहा, 'यहां का मौसम और बगीचा बहुत सुंदर है। लोग भी बहुत अच्छे और सहयोगी हैं। वातावरण बेहद शांत व खुशगवार है। ट्यूलिप गार्डन में हर साल की तरह इस साल भी फूलों की रंगीन छटा लोगों को आकर्षित कर रही है। गार्डन में ट्यूलिप्स की लाखों की संख्या है और उनकी विविधता देखकर हर कोई हैरान रह जा रहा है। प्रत्येक दिन बगीचे में आने वाले लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है ।

दिल्ली : साले पर चाकू से हमले का आरोपी गिरफ्तार, पीड़ित की इलाज के दौरान मौत

नई दिल्ली। दिल्ली की नंद नगरी पुलिस ने साले पर चाकू से हमले के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। 29 मार्च की रात सूचना मिली कि ताहिरपुर निवासी नीरज (30) को गंभीर रूप से घायल अवस्था में जीटीबी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

नंद नगरी पुलिस स्टेशन में प्राथमिकी दर्ज की गई और इसके बाद जांच शुरू कर दी गई। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि घायल व्यक्ति को उसके ही जीजा ने चाकू से हमला किया था। फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल से सबूत इकट्ठा किए, जिनमें हथियार और अन्य सुराग शामिल थे। एसएचओ नंद नगरी इंस्पेक्टर आनंद यादव के नेतृत्व में टीम ने आरोपियों की तलाश शुरू की। जांच में रमेश (20) निवासी ताहिरपुर ने लगातार पूछताछ के दौरान अपराध स्वीकार कर लिया। पारिवारिक विवाद के चलते हुई कहासुनी के दौरान उसने नीरज पर चाकू से हमला किया। आरोपी की निशानदेही पर पुलिस ने अपराध में इस्तेमाल चाकू भी बरामद कर लिया।

घटना के बाद नीरज का अस्पताल में इलाज चल रहा था, लेकिन गंभीर चोटों के कारण उनकी मृत्यु हो गई। इस कारण पुलिस ने मामले में धारा 103(1) बीएनएस भी जोड़ दी है। पुलिस ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

पुलिस ने यह भी बताया कि इस मामले में सबूत इकट्ठा करने और आरोपी को पकड़ने में टीम की त्वरित कार्रवाई और सावधानीपूर्ण जांच की प्रमुख भूमिका रही। इस कार्रवाई से न केवल अपराधियों को न्याय के कठघरे में लाने में मदद मिली, बल्कि नंद नगरी क्षेत्र में कानून और व्यवस्था बनाए रखने की पुलिस की तत्परता भी दिखाई दी। पुलिस अभी मामले की गहन जांच कर रही है और यह सुनिश्चित किया जा रहा है ।

नागोया प्रोटोकॉलः अनुपालन प्रमाणपत्र जारी करने में भारत विश्व में सबसे आगे

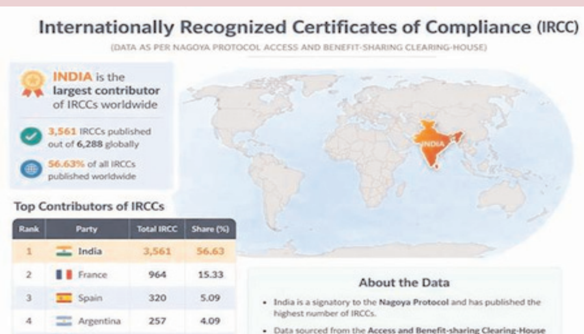

नई दिल्ली । नागोया प्रोटोकॉल (एबीएस) के तहत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त अनुपालन प्रमाणपत्र (आईआरसीसी) जारी करने में भारत वैश्विक स्तर पर अग्रणी बन गया है। विश्व स्तर पर जारी किए गए सभी प्रमाणपत्रों में से 56 प्रतिशत से अधिक भारत द्वारा जारी किए गए हैं। एबीएस क्लियरिंग-हाउस के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत ने वैश्विक स्तर पर जारी किए गए कुल 6,311 प्रमाणपत्रों में से 3,561 आईआरसीसी जारी किए हैं, जो प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन में अन्य सभी देशों से कहीं आगे है।

पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने वाले वैश्विक मंच, एबीएस क्लियरिंग-हाउस पर पंजीकृत 142 देशों में से अब तक केवल 34 देशों ने ही आईआरसीसी जारी किए हैं। भारत के बाद फ्रांस (964 प्रमाणपत्र), स्पेन (320), अर्जेंटीना (257), पनामा (156) और केन्या (144) का स्थान है। यह जैविक संसाधनों या संबंधित ज्ञान के निष्पक्ष और पारदर्शी उपयोग के प्रति भारत की मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

नागोया प्रोटोकॉल के तहत, आनुवंशिक संसाधनों और संबंधित पारंपरिक ज्ञान तक पहुंच प्रदान करने वाले देशों को आईआरसीसी जारी करना अनिवार्य है। ये प्रमाणपत्र इस बात का आधिकारिक प्रमाण हैं कि पूर्व सूचित सहमति प्राप्त कर ली गई है और संसाधनों के उपयोगकर्ताओं और प्रदाताओं के बीच पारस्परिक रूप से सहमत शर्तें स्थापित हो गई हैं। इसके बाद विवरण एबीएस क्लियरिंग-हाउस में अपलोड कर दिए जाते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता परिषदें (आईआरसीसी) अनुसंधान और नवाचार से लेकर अंततः वाणिज्यिक अनुप्रयोगों तक, आनुवंशिक संसाधनों के उपयोग पर नजर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि संसाधन प्रदाता देश के साथ लाभों का उचित बंटवारा हो।

विश्व केसरी

स्पेस में ऐसे पौधे उगाते हैं एस्ट्रोनॉट्स, जानें क्या है 'वेजी' सिस्टम

नई दिल्ली। जैसे-जैसे इंसान गहरे अंतरिक्ष की यात्रा की तैयारी कर रहा है, पौधों का महत्व और बढ़ गया है। सिर्फ सुंदरता या ऑक्सीजन के लिए नहीं बल्कि ताजे भोजन, विटामिन और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अंतरिक्ष में पौधे उगाना जरूरी है। अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा इसी उद्देश्य के साथ स्पेस स्टेशन पर 'वेजी' नामक एक खास वेजिटेबल प्रोडक्शन सिस्टम के साथ काम करता है, जिसका नाम वेजी है।

वेजी अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर लगा एक छोटा सा 'स्पेस गार्डन' है। यह एक कैरी-ऑन बैग के आकार का सिस्टम है, जिसमें आमतौर पर छह पौधे एक साथ उगाए जाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य माइक्रोग्रैविटी में पौधों की वृद्धि का अध्ययन करना और अंतरिक्ष यात्रियों को ताजा, पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है।

वेजी में प्रत्येक पौधा मिट्टी आधारित तकिए में उगाया जाता है। इन तकियों में विशेष उर्वरक और विकास के लिए तत्व भरा होता है। ये तकिए जड़ों तक पानी, पोषक तत्व और हवा का सही संतुलन बनाए रखते हैं। अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण न होने के कारण पानी बुलबुले बना लेता है, इसलिए यह संतुलन बनाना बहुत चुनौतीपूर्ण है। पौधों को ऊपर एलईडी लाइट्स रोशनी देता है। चूंकि पौधे लाल और नीली रोशनी का सबसे ज्यादा उपयोग करते हैं, इसलिए वेजी का चैंबर अक्सर गुलाबी-लाल रंग में चमकता दिखाई देता है।

वेजी में अब तक कई प्रकार के पौधे सफलतापूर्वक उगाए जा चुके हैं, जिनमें लेट्यूस की तीन किस्में, चाइनीज कैबेज, मिजुना सरसों, लाल रशियन केल और खूबसूरत जिनिया के फूल शामिल हैं। कुछ पौधों को क्रू सदस्यों ने तोड़कर खाया भी, जबकि बाकी नमूनों को पृथ्वी पर अध्ययन के लिए भेजा गया। अंतरिक्ष में लंबे मिशनों पर ताजे फल-सब्जियां सिर्फ पोषण ही नहीं, बल्कि अंतरिक्ष यात्रियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी बेहद जरूरी हैं।

नासा का मानना है कि पौधे उगाना उन्हें पृथ्वी से जोड़कर रखता है और तनाव कम करता है। वेजी के अलावा नासा ने 'एडवांस प्लांट हैबिटल' (एपीएच) भी विकसित किया है। एपीएच वेजी से ज्यादा उन्नत और पूरी तरह स्वचालित सिस्टम है। इसमें 180 से ज्यादा सेंसर लगे हैं, जो पृथ्वी पर बैठी टीम को लगातार जानकारी देते रहते हैं। एपीएच में बौनी गेहूं जैसे पौधों का परीक्षण किया जा चुका है। भविष्य में नासा टमाटर, मिर्च, बेरी और अन्य पौधे उगाने की योजना बना रहा है। ये न सिर्फ पोषण देंगे बल्कि रेडिएशन से भी कुछ सुरक्षा प्रदान करेंगे।

शरीर में दिखें ये संकेत तो तुरंत जाएं अस्पताल, डेंगू का हो सकता है खतरा

नई दिल्ली। डेंगू एक ऐसी बीमारी है जो देखने में शुरुआत में साधारण बुखार जैसी लगती है, लेकिन अगर समय रहते ध्यान न दिया जाए, तो यह खतरनाक रूप ले सकती है। यह बीमारी मच्छर के काटने से फैलती है।

आमतौर पर डेंगू के लक्षण संक्रमण के कुछ दिनों बाद दिखने लगते हैं। सबसे पहले तेज बुखार आता है, जो अचानक चढ़ता है और कई बार 102-104 डिग्री तक पहुंच जाता है। इसके साथ सिर दर्द, आंखों के पीछे दर्द, शरीर और जोड़ों में तेज दर्द, थकान और कमजोरी महसूस होती है। कुछ लोगों के शरीर पर लाल चकत्ते या रैश भी नजर आते हैं। कई बार मरीज को भूख नहीं लगती, जी मिचलाता है और उल्टी भी हो सकती है। इन लक्षणों को लोग अक्सर सामान्य वायरल समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, जो बाद में भारी पड़ सकता है।

डेंगू की सबसे खतरनाक बात यह है कि कुछ मामलों में बुखार कम होने के बाद मरीज की हालत अचानक बिगड़ सकती है। यही वह समय होता है जब शरीर में अंदरूनी समस्याएं शुरू हो सकती हैं। अगर आपको दिन में तीन या उससे ज्यादा बार उल्टी हो रही है, पेट में तेज दर्द हो रहा है, बहुत ज्यादा बेचैनी या घबराहट महसूस हो रही है या अचानक सुस्ती और कमजोरी बढ़ गई है, तो यह चेतावनी के संकेत हैं। इसके अलावा अगर नाक या मसूड़ों से खून आना शुरू हो जाए, उल्टी में खून आए, मल काला दिखे या पेशाब में खून नजर आए, तो तुरंत अस्पताल जाना बेहद जरूरी है।

कुछ और गंभीर लक्षणों में हाथ-पैर ठंडे और चिपचिपे हो जाना, त्वचा पीली या फीकी लगना, पेशाब कम आना या कई घंटों तक बिल्कुल न आना, सांस लेने में दिक्कत होना और अचानक व्यवहार में बदलाव शामिल हैं। ये सभी संकेत इस बात की ओर इशारा करते हैं कि शरीर के जरूरी अंगों तक सही मात्रा में खून और ऑक्सीजन नहीं पहुंच पा रही है। ऐसे में देर करना खतरनाक हो सकता है और मरीज को तुरंत मेडिकल देखभाल की जरूरत होती है।

डेंगू में अक्सर प्लेटलेट्स की संख्या कम होने लगती है, लेकिन सिर्फ प्लेटलेट्स के आंकड़े पर ध्यान देना ही काफी नहीं है। कई बार मरीज की हालत प्लेटलेट्स सामान्य होने के बावजूद भी गंभीर हो सकती है, क्योंकि शरीर में पानी की कमी, खून का गाढ़ा होना और प्लाज्मा लीकेज जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं। इसलिए अगर बुखार दो दिन से ज्यादा बना रहता है या ऊपर बताए गए लक्षणों में से कोई भी नजर आता है, तो तुरंत डॉक्टर से जांच करानी चाहिए। खुद से दवाइयां लेने या घरेलू उपायों पर ही निर्भर रहना सही नहीं है। समय पर इलाज, आराम और शरीर में पानी की पर्याप्त मात्रा बनाए रखने से मरीज पूरी तरह ठीक हो सकता है।

रोजमर्रा की ये आदतें धीरे-धीरे दिमाग को पहुंचा रही नुकसान, जानें कैसे बिगाड़ रही आपकी ब्रेन हेल्थ

नई दिल्ली। भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग मानसिक स्वास्थ्य यानी ब्रेन हेल्थ को अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। हम रोजाना कई ऐसी आदतें अपनाते हैं जो देखने में सामान्य लगती हैं, लेकिन धीरे-धीरे हमारे दिमाग की कार्यक्षमता पर असर डालती रहती हैं।

विशेषज्ञों के मुताबिक, दिमाग सिर्फ सोचने का केंद्र नहीं है, बल्कि यह पूरे शरीर के कामकाज को नियंत्रित करता है। ऐसे में अगर इसकी सेहत प्रभावित होती है, तो इसका असर हमारी याददाश्त, ध्यान, फैसले लेने की क्षमता और मानसिक संतुलन पर साफ दिखाई देता है।

रिसर्च के अनुसार, सबसे बड़ी समस्या है नींद की कमी। जब कोई व्यक्ति लगातार पर्याप्त नींद नहीं लेता, तो दिमाग को आराम नहीं मिल पाता। इससे याददाश्त कमजोर होने लगती है और नई चीजें सीखने की क्षमता भी प्रभावित होती है। वैज्ञानिक बताते हैं कि नींद के दौरान दिमाग खुद को रिपेयर करता है और जरूरी जानकारी को व्यवस्थित करता है। ऐसे में नींद की कमी सीधे तौर पर ब्रेन फंक्शन को कमजोर करती है।

खानपान भी ब्रेन हेल्थ में अहम भूमिका निभाता है। ज्यादा मीठा या हाई शुगर वाली चीजें खाने से इंफ्लेमेशन बढ़ सकता है, जिसका असर दिमाग पर भी पड़ता है। रिसर्च में पाया गया है कि लंबे समय तक ज्यादा शुगर लेने से याददाश्त और सोचने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए संतुलित और पौष्टिक आहार लेना बेहद जरूरी है।

धूम्रपान भी दिमाग के लिए बेहद हानिकारक माना जाता है। सिगरेट में मौजूद जहरीले तत्व शरीर में ऑक्सीजन की सप्लाई को कम कर देते हैं। इसका सीधा असर दिमाग पर पड़ता है, क्योंकि दिमाग को सही तरीके से काम करने के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन की जरूरत होती है। लगातार धूम्रपान करने से दिमाग की कोशिकाएं धीरे-धीरे कमजोर होने लगती हैं और कई बार स्थायी नुकसान भी हो सकता है।

इसी तरह, अत्यधिक शराब का सेवन भी ब्रेन के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। डॉक्टरों के अनुसार, ज्यादा शराब पीने से दिमाग के न्यूरॉन्स प्रभावित होते हैं। इससे सोचने, समझने और याद रखने की क्षमता कमजोर हो सकती है। लंबे समय तक यह आदत बनी रहे तो मानसिक बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है।

शारीरिक गतिविधि की कमी भी एक बड़ी वजह है, जिसे लोग अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। जब हम ज्यादा समय तक बैठे रहते हैं और शरीर को एक्टिव नहीं रखते, तो दिमाग तक ब्लड फ्लो कम हो जाता है। इससे दिमाग को जरूरी पोषण और ऑक्सीजन नहीं मिल पाती, जिससे उसकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है।

लगातार तनाव में रहना भी दिमाग के लिए नुकसानदायक है। जब कोई व्यक्ति लंबे समय तक तनाव में रहता है, तो शरीर में कोर्टिसोल नाम का हार्मोन बढ़ने लगता है। यह हार्मोन दिमाग के उस हिस्से को प्रभावित करता है जो याददाश्त और सीखने की प्रक्रिया से जुड़ा होता है।

गर्मियों में करेले का सेवन फायदेमंद, डायबिटीज-पाचन की समस्याओं से दिलाएगा राहत

नई दिल्ली। गर्मी का मौसम शुरू होते ही पाचन संबंधी समस्याएं, ब्लड शुगर बढ़ना, थकान और कमजोरी आम हो जाती है। ऐसे में हेल्थ एक्सपर्ट के अनुसार गर्मी के मौसम में करेले का सेवन सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होता है। औषधीय गुणों से भरपूर करेला शरीर की कई बीमारियों से बचाव करता है।

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के अनुसार, करेला विटामिन ए, विटामिन बी, विटामिन सी, बीटा कैरोटीन, आयरन, जिंक, पोटैशियम, मैग्नीशियम और मैंगनीज जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्वों से भरपूर होता है। गर्मियों में यह पेट को ठंडक देता है, पाचन क्रिया सुधारता है और शरीर की उष्णता को कम करता है।

गर्मियों में करेले के सेवन से कई लाभ मिलते हैं। करेला ब्लड शुगर को नियंत्रित रखने में बहुत प्रभावी है। गर्मी में जब ब्लड शुगर बढ़ने की संभावना ज्यादा होती है, तब करेले का जूस या सब्जी नियमित रूप से लेने से शुगर लेवल बैलेंस रहता है। साथ ही गर्मी में अपच, गैस, कब्ज और पेट दर्द की समस्या आम है। ऐसे में करेला पेट साफ रखता है और पाचन शक्ति बढ़ाता है। करेले का जूस पेट दर्द में तुरंत राहत देता है।

करेला प्राकृतिक रूप से ठंडा होता है। यह शरीर की अतिरिक्त गर्मी निकालता है और डिहाइड्रेशन से बचाता है। इसमें मौजूद विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट गर्मियों में कमजोर पड़ रहे इम्यून सिस्टम को मजबूत रखते हैं। साथ ही करेला खून को शुद्ध करता है और मेटाबॉलिज्म तेज करके वजन नियंत्रित रखने में मदद करता है।

करेला न सिर्फ गर्मी की समस्याओं से बचाता है बल्कि लंबे समय तक स्वस्थ रहने में भी मदद करता है। गर्मियों में करेले का जूस सुबह खाली पेट पीना सबसे अच्छा है। साथ ही करेले की सब्जी या सुखाकर भुना करेला भी लिया जा सकता है। जिन लोगों को किसी तरह की एलर्जी है, उन्हें डॉक्टर की सलाह से इसका सेवन करना चाहिए।

कोशिकाओं का 'ब्लैक बॉक्स' बन गया! अब सेल अपनी पुरानी कहानी खुद बताएंगे

नई दिल्ली। कोशिकाओं के 'ब्लैक बॉक्स' की जानकारी वैज्ञानिकों ने अपनी रिसर्च के बाद साझा की है। एक ऐसा डिब्बा जो सेल्स की हर गतिविधि पर पारखी नजर बनाए रखेगा। इसे गढ़ने के पीछे की कहानी बड़ी रोचक है।

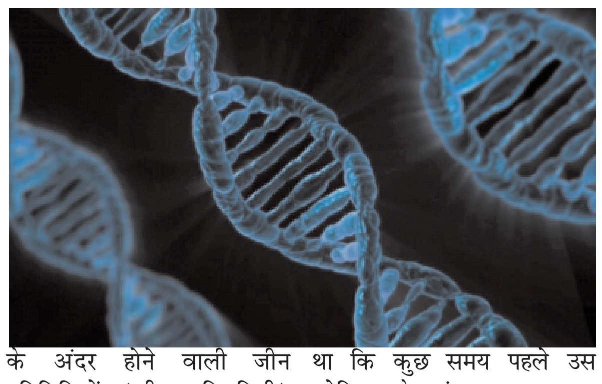

जनवरी 2026 में प्रतिष्ठित जर्नल साइंस में प्रकाशित एक बेहद दिलचस्प स्टडी ने विज्ञान की दुनिया में नई दिशा खोल दी है। इस रिसर्च को वैज्ञानिक यू-काय शाओ और उनकी टीम ने किया, जिसमें उन्होंने एक अनोखी तकनीक विकसित की-जिसे 'टाइम वोल्ट' नाम दिया गया है। यह तकनीक जीवित कोशिकाओं के लिए एक तरह का 'ब्लैक बॉक्स' साबित हो रही है।

आसान भाषा में समझें तो, जैसे हवाई जहाज में ब्लैक बॉक्स उड़ान के दौरान होने वाली हर गतिविधि को रिकॉर्ड करता है, वैसे ही टाइम वोल्ट कोशिकाओं के अंदर होने वाली जीन गतिविधियों (जीन एक्टिविटी) को रिकॉर्ड कर सकता है। फर्क बस इतना है कि यह कोई मशीन नहीं, बल्कि कोशिका के भीतर काम करने वाली जैविक प्रणाली है। अब तक वैज्ञानिकों के पास ऐसी तकनीकें थीं, जिनसे वे केवल यह देख सकते थे कि किसी कोशिका में इस समय क्या हो रहा है। यानी उन्हें सिर्फ एक 'फोटो' या झलक मिलती थी। लेकिन यह समझ पाना मुश्किल था कि कुछ समय पहले उस कोशिका के अंदर क्या बदलाव हुए थे, जिनकी वजह से वह आगे जाकर किसी खास स्थिति में पहुंची-जैसे बीमार होना या दवा के असर से बच जाना। यहीं टाइम वोल्ट गेमचेंजर बनकर सामने आया है। यह तकनीक कोशिका के अंदर मौजूद एमआरएनए (मैसेंजर आरएनए) को एक निश्चित समय पर कैप्चर करके सुरक्षित रख लेती है। एमआरएनए असल में वह संदेश होता है, जो यह बताता है कि कौन-सा जीन कब और कैसे काम कर रहा है। टाइम वोल्ट इन संदेशों को कोशिका के अंदर मौजूद खास 'वोल्ट पार्टिकल्स' में स्टोर कर देता है, जिससे वे कई दिनों तक सुरक्षित रहते हैं।

सबसे खास बात यह है कि यह रिकॉर्डिंग बाद में भी पढ़ी जा सकती है। यानी वैज्ञानिक कुछ दिनों बाद उस कोशिका का 'अतीत' देख सकते हैं और समझ सकते हैं कि पहले कौन-कौन से जीन सक्रिय थे और उन्होंने आगे चलकर क्या असर डाला।

इस तकनीक का इस्तेमाल खासतौर पर फेफड़ों के कैंसर पर किया गया। शोध में पाया गया कि कुछ कैंसर कोशिकाएं दवा दिए जाने से पहले ही ऐसी स्थिति में होती हैं, जो उन्हें बाद में दवा के असर से बचने में मदद करती है। इन कोशिकाओं को 'पर्सिस्टर सेल्स' कहा जाता है।

गर्मियों में खाली पेट बाहर निकलना खतरनाक, इन बातों का रखें खास ख्याल

नई दिल्ली। गर्मी का मौसम शुरू होते ही स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ने लगती हैं। इस मौसम में खाली पेट घर से बाहर निकलना काफी खतरनाक हो सकता है। तेज धूप, पसीना और डिहाइड्रेशन के कारण चक्कर आना, बेहोशी, उल्टी या कमजोरी जैसी समस्याएं हो सकती हैं, इसलिए गर्मियों में कुछ जरूरी सावधानियां बरतना बहुत जरूरी है।

नेशनल हेल्थ मिशन के अनुसार, गर्मी में शरीर का तापमान तेजी से बढ़ जाता है। खाली पेट बाहर निकलने से ब्लड शुगर लेवल गिर सकता है, जिससे थकान, चक्कर और बेहोशी का खतरा बढ़ जाता है। साथ ही, ज्यादा ऑयली और भारी भोजन पाचन तंत्र पर बोझ डालता है और शरीर को और गर्म कर देता है। ऐसे में हेल्थ एक्सपर्ट गर्मियों में कुछ आसान उपाय को अपनाने की सलाह देते हैं।

हेल्थ मिशन का कहना है कि गर्मी में खुद को सुरक्षित रखना ही सबसे अच्छा उपाय है। छोटी-छोटी सावधानियां अपनाकर हम गर्मी से होने वाली बीमारियों से बच सकते हैं। परिवार के बुजुर्गों, बच्चों और बीमार लोगों का खास ध्यान रखें। स्वस्थ रहने के लिए गर्मी में सादा और संतुलित आहार, ज्यादा पानी और धूप से बचने की सलाह दी जाती है। खाली पेट बाहर न निकलें: घर से बाहर निकलने से पहले कुछ हल्का नाश्ता जरूर करें। फल, दही, छाछ या नट्स खाना फायदेमंद रहता है। पर्याप्त पानी पिएं: दिन भर में 3-4 लीटर पानी जरूर पिएं। नींबू पानी, नारियल पानी, छाछ या ओआरएस घोल लेना भी अच्छा रहता है।

ऑयली भोजन से बचें: ज्यादा तेल-मसालेदार, फास्ट फूड और भारी खाना कम करें। हल्का, सुपाच्य और ताजा भोजन लें।

ढीले और हल्के कपड़े पहनें: सूती, हल्के रंग के और ढीले कपड़े पहनें जो हवा पास होने दें।

दोपहर 12 से 4 बजे तक बाहर न निकलें: इस समय धूप सबसे तेज होती है। जरूरी हो तो छाता या टोपी का इस्तेमाल करें।

इसके अलावा, तेज बुखार, उल्टी, मितली, बेहोशी, कमजोरी, ज्यादा प्यास लगना या पेशाब कम होना,चक्कर आना जैसे लक्षण दिखें तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

गर्भावस्था में खट्टा डकार और पेट में जलन क्यों बढ़ती है? समझें कारण और बचाव

नई दिल्ली। गर्भावस्था के दौरान पेट में ज्यादा एसिड बनने (हाइपरएसिडिटी) की समस्या काफी आम होती है और लगभग हर दूसरी महिला को इसका सामना करना पड़ता है। इसमें पेट या गले में जलन होना, खट्टा डकार आना, मुंह में लंबे समय तक खट्टा स्वाद बने रहना, जी मिचलाना या उल्टी जैसा महसूस होना जैसी दिक्कतें होती हैं। कई बार ऐसा लगता है जैसे सीने में जलन ऊपर की तरफ गले तक आ रही हो।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि प्रेग्नेंसी में हार्मोनल बदलाव होते हैं, जिससे पाचन प्रक्रिया धीमी हो जाती है और पेट का एसिड ऊपर की तरफ आने लगता है। जैसे-जैसे गर्भ बढ़ता है, पेट पर दबाव भी बढ़ता है, जिससे यह समस्या और ज्यादा महसूस हो सकती है।

ऐसी स्थिति में सबसे जरूरी है अपनी दिनचर्या और खानपान पर ध्यान देना। कोशिश करें कि समय पर खाना खाएं और ज्यादा देर तक भूखे न रहें, क्योंकि खाली पेट रहने से एसिडिटी और बढ़ जाती है। हल्का और आसानी से पचने वाला खाना जैसे दलिया, खिचड़ी, उबली सब्जियां आदि लेना बेहतर रहता है। ठंडक देने वाली चीजें जैसे नारियल पानी, छाछ और सादा खाना काफी राहत देते हैं। दिन भर में पर्याप्त मात्रा में पानी पीना भी जरूरी है। इससे पाचन सही रहता है और एसिडिटी कम होती है। साथ ही, अच्छी नींद लेना भी बहुत जरूरी है, क्योंकि नींद पूरी न होने से भी शरीर की पाचन क्रिया प्रभावित होती है।

मूनी को पछाड़कर विश्व की नंबर एक महिला टी20 बल्लेबाज बनीं जॉर्जिया वोल, मंधाना का हुआ नुकसान

दुबई। ऑस्ट्रेलिया की युवा बल्लेबाज जॉर्जिया वोल आईसीसी की जारी ताजा टी20 रैंकिंग में दुनिया की नंबर एक बल्लेबाज बन गई हैं। उन्होंने बेथ मूनी की 26 महीने से जारी बादशाहत को खत्म कर दिया है। हाल ही में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेली गई टी20 सीरीज में जॉर्जिया वोल का प्रदर्शन दमदार रहा था। भारत की स्टार बल्लेबाज स्मृति मंधाना भी तीसरे नंबर पर खिसक गई हैं।

इस टी20 सीरीज के दौरान जॉर्जिया वोल ने बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए अपने टी20 करियर का पहला शतक भी लगाया था। उन्होंने 52 गेंदों में सेंचुरी पूरी की थी। जॉर्जिया ने ताजा रैंकिंग में 8 पायदान की छलांग लगाई है। वोल के अब 815 रेटिंग प्वाइंट्स हो गए हैं और वह बेथ मूनी से आगे निकल गई हैं। मूनी दूसरे नंबर पर खिसक गई हैं और उनके 788 रेटिंग प्वाइंट्स हैं। भारतीय टीम की स्टार बल्लेबाज स्मृति मंधाना को भी एक पायदान का नुकसान झेलना पड़ा है और वह अब तीसरे नंबर आ गई हैं। वहीं, हेली मैथ्यूज चौथे नंबर पर खिसक गई हैं। बेथ मूनी क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट में जनवरी 2024 से विश्व की नंबर एक बल्लेबाज बनी हुई थीं। उन्होंने ताहिला मैक्ग्रा से नंबर एक की पोजीशन को छीना था। वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज में जॉर्जिया वोल ने अपनी बल्लेबाजी से खासा प्रभावित किया था। उन्होंने 3 मुकाबलों में 172 के स्ट्राइक रेट से खेलते हुए 148 रन बनाए थे। जॉर्जिया के दमदार प्रदर्शन के बूते ऑस्ट्रेलिया की टीम टी20 सीरीज को 3-0 से अपने नाम करने में सफल रही थी।

साउथ अफ्रीका के खिलाफ टी20 सीरीज में बल्ले और गेंद दोनों से शानदार प्रदर्शन करने वालीं न्यूजीलैंड महिला क्रिकेट टीम की कप्तान अमेलिया केर दुनिया की नंबर एक ऑलराउंडर बन गई हैं। उनके कुल 508 रेटिंग प्वाइंट्स हो गए हैं और उन्होंने वेस्टइंडीज की स्टार खिलाड़ी हेली मैथ्यूज को नंबर 2 पर ढकेल दिया है। केर यह मुकाम हासिल करने वाली न्यूजीलैंड की महज चौथी खिलाड़ी हैं। उनसे पहले यह उपलब्धि सिर्फ रेबेका स्टील, एमी वॉटकिंस और सोफी डिवाइन ही हासिल कर सकी हैं। हेली मैथ्यूज अक्टूबर 2023 से दुनिया की नंबर एक ऑलराउंडर बनी हुई थीं।

मैडी ग्रीन अपनी टीम की हार में 85 रन बनाने के बाद बल्लेबाजों की रैंकिंग में चार पायदान ऊपर चढ़कर 13वें नंबर पर आ गई हैं। वनडे रैंकिंग में वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले दो एकदिवसीय मुकाबले में कोई खास प्रदर्शन न करने की वजह से अलाना किंग गेंदबाजों की रैंकिंग में दूसरे पायदान पर खिसक गई हैं। इंग्लैंड की गेंदबाज सोफी एक्लेस्टोन विश्व की नंबर एक वनडे गेंदबाज बन गई हैं। ऑस्ट्रेलिया की जॉर्जिया वेयरहम वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले दो वनडे में 81 रन बनाने और चार विकेट लेने के बाद ऑलराउंडर्स की रैंकिंग में आठ पायदान ऊपर चढ़कर 16वें स्थान पर आ गई हैं।

आईपीएल 2026: कूपर कोनोली की तूफानी पारी,पंजाब ने गुजरात को 3 विकेट से हराया

न्यू चंडीगढ़। पंजाब किंग्स ने इंडियन प्रीमीयर लीग (आईपीएल) 2026 में जीत के साथ अपने अभियान की शुरुआत की है। इस टीम ने मंगलवार को मुल्लांपुर के महाराजा यादविन्द्र सिंह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में गुजरात टाइटंस के विरुद्ध 3 विकेट से जीत हासिल की। किंग्स की तरफ से कूपर कोनोली ने 44 गेंदों में नाबाद 72 रन की तूफानी पारी खेली।

टॉस गंवाकर बल्लेबाजी करने उतरी गुजरात टाइटंस ने 6 विकेट खोकर 162 रन बनाए। साई सुदर्शन ने कप्तान शुभमन गिल के साथ पहले विकेट के लिए 3.4 ओवरों में 37 रन की साझेदारी की। सुदर्शन 13 रन बनाकर पवेलियन लौटे, जिसके बाद गिल ने जोस बटलर के साथ दूसरे विकेट के लिए 46 रन जुटाकर टीम को मजबूती प्रदान की। गिल 27 गेंदों में 6 चौकों के साथ 39 रन बनाकर पवेलियन लौटे। यहां से जोस बटलर ने ग्लेन फिलिप्स के साथ 36 रन जोड़कर टीम को शतक के पार पहुंचा दिया। बटलर 38 रन और फिलिप्स 25 रन बनाकर आउट हुए। इनके अलावा, वाशिंगटन सुंदर ने 18 रन का योगदान टीम के खाते में दिया।

विपक्षी खेमे से विजयकुमार वैशाक ने सर्वाधिक 3 विकेट हासिल किए, जबकि युजवेंद्र चहल ने 2 विकेट निकाले। 1 विकेट मार्को जानसेन ने अपने नाम किया। इसके जवाब में पंजाब किंग्स ने 19.1 ओवरों में जीत हासिल कर ली। इस टीम ने 7 के स्कोर पर प्रियांश आर्य (7) का विकेट खो दिया था। यहां से कूपर कोनोली ने प्रभसिमरन सिंह के साथ दूसरे विकेट के लिए 49 गेंदों में 76 रन की साझेदारी करते हुए टीम को 83 के स्कोर तक पहुंचाया।

प्रभसिमरन 24 गेंदों में 4 छक्कों और 1 चौके के साथ 37 रन बनाकर आउट हुए, जिसके बाद कोनोली ने मोर्चा संभाला। उन्होंने कप्तान श्रेयस अय्यर (18) के साथ तीसरे विकेट के लिए 27 रन जुटाए। इसके बाद दूसरे छोर पर विकेट निरंतर अंतराल पर गिरते रहे, लेकिन कोनोली ने मोर्चा संभाले रखा।

इस बीच मार्को जानसेन (9) के साथ 26 रन और जैवियर बार्टलेट (नाबाद 11) के साथ 21 रन की साझेदारी भी की। कूपर 44 गेंदों में 5 छक्कों और इतने ही चौकों की मदद से 72 रन बनाकर नाबाद रहे। विपक्षी खेमे से प्रसिद्ध कृष्णा ने 3 विकेट निकाले। इनके अलावा, कगिसो रबाडा, अशोक शर्मा, राशिद खान और वाशिंगटन सुंदर ने 1-1 विकेट अपने नाम किया।

'खेल को मुमकिन बनाने वालों को सलाम', बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने की मैदानकर्मियों की सराहना

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव देवजीत सैकिया ने गुवाहाटी के बरसापारा स्टेडियम के मैदानकर्मियों की जमकर तारीफ की है।

दरअसल, पिछले कुछ दिनों से हो रही लगातार बारिश की वजह से मैदान की स्थिति काफी खराब थी और राजस्थान रॉयल्स व चेन्नई सुपरकिंग्स के बीच होने वाला मुकाबला तय समय पर शुरू होना मुश्किल नजर आ रहा था। हालांकि, मैदानकर्मियों की कड़ी मेहनत के चलते मैच समय पर शुरू हुआ और ग्राउंड पर किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं आई। बरसापारा क्रिकेट स्टेडियम के मैदानकर्मियों की प्रशंसा करते हुए देवजीत सैकिया ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर लिखा, 'पर्दे के पीछे के गुमनाम हीरोज को सलाम।

पिछले कई दिनों से लगातार बारिश और तय समय से लगभग एक घंटे पहले तक बौछारें पड़ने के बावजूद बरसापारा स्टेडियम में राजस्थान रॉयल्स और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच मैच ठीक समय पर शुरू हुआ। यह शानदार कामयाबी हमारे क्यूरेटर और मैदानकर्मियों के समर्पण, विशेषज्ञता और बिना थके कोशिशों का सबूत है। उनकी कार्यकुशलता ने यह पक्का किया कि खेलने के हालात सभी मुश्किलों के बावजूद मैच के लिए तैयार थे। चाहे बारिश हो या फिर धूप, इन चुपचाप योगदान देने वालों को एक बड़ा सलाम जो खेल को मुमकिन बनाते हैं।

मैदानकर्मियों की मेहनत राजस्थान रॉयल्स के पक्ष में भी गई। राजस्थान ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए चेन्नई सुपर किंग्स को 8 विकेट से हराया। पहले बल्लेबाजी करते हुए चेन्नई की पूरी टीम 127 रन बनाकर ढेर हो गई।

टीम के 8 बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा पार नहीं कर सके। चेन्नई की तरफ से सर्वाधिक 43 रन जेमी ओवरटन ने बनाए। गेंदबाजी में राजस्थान की ओर से जोफ्रा आर्चर ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 4 ओवर में 19 रन देकर 2 विकेट निकाले, जबकि नांद्रे बर्गर ने 26 रन खर्च करके 2 विकेट चटकाए।

सीजन के अंत में बायर्न म्यूनिख से अलग होंगे राफेल गुएरेरो

बर्लिन। पुर्तगाल के इंटरनेशनल खिलाड़ी राफेल गुएरेरो बार्यन म्यूनिख फुटबॉल क्लब से इस सीजन के खत्म होने के बाद अलग हो जाएंगे। गुएरेरो का कॉन्ट्रैक्ट भी इस सीजन के अंत में ही खत्म हो रहा है। गुएरेरो और क्लब ने इस कॉन्ट्रैक्ट को आगे नहीं बढ़ाने का फैसला लिया है।

गुएरेरो साल 2023 में बोरूसिया डॉर्टमुंड से फ्री ट्रांसफर पर बायर्न म्यूनिख में आए थे। उन्होंने बायर्न के लिए कुल 89 मैच खेले। इस दौरान उन्होंने 12 गोल किए और 8 गोल करने में मदद (असिस्ट) की। उनकी सबसे बड़ी खासियत यह रही कि वे एक ही पोजीशन तक सीमित नहीं थे। वे डिफेंस में फुल-बैक के रूप में भी खेले और जरूरत पड़ने पर मिडफील्ड में भी योगदान दिया। इसी वजह से वह टीम के एक बहुमूल्य खिलाड़ी रहे। गुएरेरो ने टीम को कई खिताब दिलाने में अहम योगदान दिया। उन्होंने बायर्न के साथ बुंडेसलीगा का खिताब और

जर्मन सुपर कप जीता। इसके अलावा, उन्होंने अपनी राष्ट्रीय टीम पुर्तगाल के लिए भी 65 मैच खेले हैं। बायर्न के स्पोर्ट मेंबर मैक्स एबरल ने गुएरेरो की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा, 'हम राफेल को उस समय के लिए दिल से धन्यवाद देना चाहते हैं, जो उन्होंने हमारे साथ बिताया। आप मैदान पर हमेशा राफेल पर भरोसा कर सकते हैं, और उनके जैसे खिलाड़ी किसी भी ड्रेसिंग रूम को बेहतर बनाते हैं।

उन्होंने कहा कि राफेल और क्लब के बीच बातचीत सकारात्मक और सम्मानजनक तरीके से हुई। 'उनके साथ हमारी बातचीत सकारात्मक रही है, जो भरोसे और आपसी समझ पर आधारित है। अब उनके साथ मिलकर हम गर्मियों तक अपने लक्ष्यों पर ध्यान दे रहे हैं। हम अभी भी साथ मिलकर बहुत कुछ हासिल करना चाहते हैं।

अब गुएरेरो और बायर्न म्यूनिख, दोनों ही इस सीजन के बाकी मैचों पर ध्यान दे रहे हैं। टीम इस समय लीग में पहले स्थान पर है और दूसरे नंबर की टीम से 9 अंकों से आगे है। टीम को अपना अगला मैच फ्रीबर्ग के खिलाफ खेलना है। बार्यन इस बार भी बुंडेसलीगा का खिताब जीतने का प्रबल दावेदार नजर आ रहा है।

अजीत वाडेकर: वेस्टइंडीज-इंग्लैंड की धरती पर पहली टेस्ट सीरीज जिताने वाले भारतीय कप्तान

नई दिल्ली। अजीत वाडेकर, भारतीय क्रिकेट का एक ऐसा कप्तान जिन्होंने देश को विदेशी सरजमीं पर जीतने का हुनर सिखाया। अजीत ने अपनी कप्तानी में भारतीय टीम में वो जज्बा जगाया, जिसके बूते टीम ने वेस्टइंडीज और इंग्लैंड का पहली बार किला भेदा। वाडेकर जितने अच्छे कप्तान थे, उतने ही शानदार बल्लेबाज भी रहे। वाडेकर की क्रिकेट की दुनिया में आने की कहानी भी काफी दिलचस्प है।

अजीत वाडेकर का जन्म एक अप्रैल 1941 को मुंबई में हुआ। अजीत पढ़ाई में काफी अच्छे थे और वह इंजीनियर बनना चाहते थे। अजीत का दूर-दूर तक क्रिकेट से कोई नाता नहीं था। हालांकि, प्रतिदिन 3 रुपये कमाने की चाहत ने उन्हें पहली बार मैदान पर उतारा और उसके बाद जो हुआ, वो इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया। दरअसल, भारत के पूर्व क्रिकेटर बालू गुप्ते कॉलेज में अजीत के सीनियर हुआ करते थे। बालू कॉलेज टीम की तरफ से खेला करते थे और उन्होंने अजीत को 12वें खिलाड़ी के तौर पर टीम में शामिल होने का ऑफर दिया था।

कॉलेज टीम की प्लेइंग इलेवन तो दमदार थी लेकिन उनके पास पानी पिलाने के लिए कोई खिलाड़ी नहीं था और इसके लिए अजीत वाडेकर को चुना गया। अजीत को प्रतिदिन के लिए 3 रुपए दिए जाते थे। वाडेकर को 22 गज की पिच पर खेला जाने वाला यह खेल पसंद आने लगा और उन्होंने भी कॉलेज की टीम से खेलना शुरू कर दिया। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

अजीत ने इंटरनेशनल क्रिकेट में भारत के लिए अपना डेब्यू साल 1966 में वेस्टइंडीज के खिलाफ किया। उस दौर में विदेशी सरजमीं पर एक मैच तक जीतना भारतीय टीम के लिए किसी सपने के सच होने जैसा था। अजीत की बल्लेबाजी में दमखम को देखते हुए उन्हें भारतीय टीम की कप्तानी सौंप दी गई।

रविचंद्रन अश्विन की सलाह, वैभव सूर्यवंशी पर ना बनाया जाए अधिक दबाव

नई दिल्ली। भारत के पूर्व स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने 15 वर्षीय बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी की जमकर तारीफ की है। वैभव ने आईपीएल 2026 के तीसरे मुकाबले में चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ खेलते हुए सिर्फ 15 गेंदों में अर्धशतक लगाया। अश्विन का कहना है कि वैभव पर अधिक दबाव नहीं बनाया जाना चाहिए और वह सही समय आने पर भारत के लिए खेलेंगे।

वैभव ने गुवाहाटी के बरसापारा क्रिकेट स्टेडियम में जबरदस्त बल्लेबाजी करते हुए सिर्फ 17 गेंदों में 52 रनों की दमदार पारी खेली। वैभव ने अपनी इस पारी में 4 चौके और 5 छक्के लगाए। उन्होंने पहले विकेट के लिए यशस्वी जायसवाल के साथ मिलकर 6.2 ओवर में 75 रन जोड़े और मैच को पूरी तरह से एकतरफा कर दिया। वैभव की शानदार पारी के बूते राजस्थान ने चेन्नई से मिले 128 रनों के लक्ष्य को सिर्फ 12.1 ओवर में हासिल कर लिया।

अश्विन ने 15 साल के इस होनहार खिलाड़ी को संभालने में सब्र रखने की सलाह दी और उन्हें आगे बढ़ने में जल्दबाजी न करने की चेतावनी दी। अश्विन ने अपने यूट्यूब चैनल 'एश की बात' पर कहा, 'उन्हें ऐसा टारगेट मत दो। वह लड़का भी नहीं है, वह बच्चा है। अगर एमएस धोनी 45 की उम्र तक खेल रहे हैं और सूर्यवंशी 40 तक भी खेलते हैं, तो उनके पास क्रिकेट में ढाई दशक बाकी हैं। उन्हें अकेला छोड़ देने की जरूरत है, जब सही समय आएगा तो वह खुद ही आगे आ जाएंगे। वह भारत के लिए न खेलने के लिए बहुत अच्छे हैं। वह आखिरकार खेलेंगे ही। वह कब खेलेंगे? इसके लिए हमें थोड़ा इंतजार करना पड़ सकता है। हम हमेशा जल्दी में क्यों रहते हैं?

अश्विन ने आगे कहा, 'वह 15 साल के हो गए हैं, तो उन्होंने 15 गेंदों में अर्धशतक लगाया। वह अपनी उम्र दिख रहे हैं (माजाकिया अंदाज में)। मेरा मतलब है कि वह क्या शानदार खिलाड़ी हैं। उनके बल्ले की स्पीड कितनी तेज है। चेन्नई सुपर किंग्स के पास वैभव की ताबड़तोड़ बल्लेबाजी का कोई जवाब नहीं था। राजस्थान का मैच में पूरी तरह से दबदबा रहा।' राजस्थान की आईपीएल 2026 में अगली भिड़ंत अब 4 अप्रैल को गुजरात टाइटंस के साथ होगी।

बांग्लादेश के खिलाफ व्हाइट-बॉल सीरीज के लिए न्यूजीलैंड टीम का ऐलान, फिशर-टिकनर की हुई वापसी

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम ने बांग्लादेश के खिलाफ होने वाली व्हाइट-बॉल (वनडे और टी20) सीरीज के लिए टीम का ऐलान कर दिया है। टीम में तीन तेज गेंदबाज मैट फिशर, विल ओ'रूर्के और ब्लेयर टिकनर की वापसी हुई है, जिससे टीम का गेंदबाजी अटैक काफी मजबूत नजर आ रहा है।

ये तीनों खिलाड़ी चोट के कारण कुछ समय से टीम से बाहर चल रहे थे। विल ओ'रूर्के पीठ की चोट से उबरकर वनडे टीम में लौटे हैं। वहीं, मैट फिशर ने पिंडली की चोट से ठीक होने के बाद टी20 टीम में वापसी की है। ब्लेयर टिकनर टखने की समस्या से पूरी तरह से उबरने के बाद दोनों फॉर्मेट की टीम में अपनी जगह बनाने में सफल रहे हैं।

टीम के हेड कोच रॉब वाल्टर ने तीनों तेज गेंदबाजों की वापसी पर

खुशी जताई। उन्होंने कहा कि इन खिलाड़ियों ने वापसी के लिए कड़ी मेहनत की है और उनका टीम में आना बहुत फायदेमंद होगा। उन्होंने यह भी कहा कि आजकल लगातार क्रिकेट हो रहा है, इसलिए टीम के गेंदबाजी अटैक में गहराई होना बेहद जरूरी है। ऑलराउंडर डीन फॉक्सक्रॉफ्ट की भी टीम में वापसी हुई है, जो अप्रैल 2024 के बाद पहली बार व्हाइट-बॉल टीम में वापस लौटे हैं। 2025-26 के घरेलू सीजन में सेंट्रल स्टैग्स को फाइनल तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई थी। वह टूर्नामेंट में चौथे सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज भी रहे थे। आईपीएल 2026 में हिस्सा लेने के कारण मिचेल सैंटनर को टीम में शामिल नहीं किया गया है। सैंटनर की जगह पर टॉम लाथम वनडे और टी20 टीम की अगुवाई करते हुए नजर आएंगे।

श्रीलंका के खिलाफ न्यूजीलैंड-ए टीम की तरफ से दमदार प्रदर्शन करने वाले कुछ युवा खिलाड़ियों को भी टीम में मौका दिया गया है। इनमें मुहम्मद अब्बास, आदित्य अशोक, क्रिस्टियन क्लार्क और बेन सियर्स शामिल हैं। क्लार्क और जेडन लेनोक्स ने इस साल की शुरुआत में भारत में न्यूजीलैंड की ऐतिहासिक वनडे सीरीज जीत के दौरान खासा प्रभावित किया था। न्यूजीलैंड टीम 13 अप्रैल को बांग्लादेश के लिए रवाना होगी। टीम दौरे की शुरुआत वनडे सीरीज से करेगी, जो 17 अप्रैल को खेला जाना है।

स्वात्वधिकारी राइवल्स मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक सुजीत कुमार द्वारा साई प्रींटिंग प्रेस, डी-85, सेक्टर 6 नोएडा,गौतम बुध्द नगर पिन कोड -201301 उ.प्र. से मुद्रित और मकान संख्या एन-58 जगतराम पार्क के सामने, लक्ष्मी नगर पूर्व दिल्ली-110053 से प्रकाशित
समाचार संपादक : चन्द्रमणी साव (पीआरबी एक्ट के अनुसार समाचार पत्र चयन एवं संपादन के लिए उत्तरदायी। नोट किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्यायक्षेत्र दिल्ली होगा) मोबाइल 9340573892 ई-मेल: vishwakesari2026@gmail.com,आर.एन.आई.नं. DLHIN/2015/61415